परम पुरुष पूरन धनी हुज़ूर महाराज साहब राधास्वामी दयाल
आली जनाब राय सालिगराम साहब राय बहादुर

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

॥ दीबाचः ॥

अक्सर सतसंगियोँ ने यह दिली ख़्वाहिश बारहा ज़ाहिर की कि जीवन-चरित्र परम पुरुष पूरन धनी हुज़ूर महाराज साहब आली जनाब राय सालिग राम साहब राय बहादुर का तैयार किया जावे। यह ख़्वाहिश ग़ैर मामूली नहीं है कौन ऐसा शख़्स है कि जो अपने प्रीतम के हालात ज़िंदगी को दिलो जान से सुनने का मुश्ताक़* न हो और जब वह प्रीतम उस के दीन दुनियाँ का सँवारने वाला और उसकी रूह को दम २ ज़िंदगी और ताज़गी बख़्शने वाला और हमेशा का संगी व सहाई हो तो ज़रूर है कि उस का जीवन-चरित्र प्रेमी को निहायत दर्जे अज़ीज़ और प्यारा मालूम होगा। ऐसे प्रेमियोँ का इश्तियाक़† पूरा करने के लिये यह रिसाला जीवन-चरित्र लिखा जाता है जिस में हुज़ूर महाराज साहब के थोड़े से चरित्र प्रेमियोँ के प्रेम की तरक्क़ी करने के वास्ते कि जिस से उन को असली अंतरी करामात का जो

---

*चाहने वाला। †शौक़।

परमार्थ के वास्ते मख़सूस* है फ़ायदा हासिल हो—और ज़्यादःतर हुज़ूर महाराज साहब की गत मत का हाल उन की बानी और बचन को बग़ौर मुलाहिज़ः करने से मालूम हो सक्ता है ।

इस रिसालः जीवन-चरित्र में जो थोड़े हालात तहरीर† किये गये हैं वह सिर्फ़ इस नज़र से किये गये हैं कि उन को पढ़ कर लोगों को यह मालूम हो कि सच्चे परमार्थियों की रहनी व गहनी व भक्ती किस तरह की होनी चाहिये और बावजूद कुल क़ुव्वतों और ताक़तों पर पूरा इक़्तिदार‡ रखने के गुरमुख अंग का बर्ताव क़ायम रखने के वास्ते अपने स्वामी की मौज में किस तरह बर्तना चाहिये और किस तरह अपने स्वामी का अदब व ताज़ीम बरक़रार रखना चाहिये ॥

अजुध्या प्रशाद ।

---

*ज़रूरी । †लिखे गये । ‡क़ाबू ।

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय।

॥ प्रार्थना ॥

करूँ बीनती राधास्वामी आगे।
गहरी प्रीत चरन में लागे ॥ १ ॥
मन चंचल को थिर कर लीजे।
दृढ़ परतीत चरन में दीजे ॥ २ ॥
मैं बल हीन नहीं गुन कोई।
चरन तुम्हारे पकड़े सोई ॥ ३ ॥
राधास्वामी मात पिता पति मेरे।
राधास्वामी चरनन सुक्ख घनेरे ॥ ४ ॥
राधास्वामी बिना कोई नहिं बाचे।
राधास्वामी हैं गुरु सतगुर साँचे ॥ ५ ॥
राधास्वामी दया करें जिस जन पर।
सोई बचे शब्द धुन सुन कर ॥ ६ ॥
नित्त नवीन प्रीत हिये आवे।
सेवा भजन करत रस पावे ॥ ७ ॥
सतसँग की चाहत रहे निस दिन।
हरष हरष नित गावे तुम गुन ॥ ८ ॥
काल करम से लेव बचाई।
सुरत शब्द की करूँ कमाई ॥ ९ ॥

यह अरज़ी मेरी सुन लीजै ।
किरपा कर मोहिं बख़्शिश दीजै ॥ १० ॥
राधास्वामी दाता दीन दयाला ।
अपनी दया से करो निहाला ॥ ११ ॥

मेरे प्यारे गुरू दातार ।
मँगता द्वारे खड़ा ॥ १२ ॥
मैं रहा पुकार पुकार ।
मेंहर कर देखो मेरा ॥ १३ ॥
बर्षाओ घटा अपार ।
प्रेम रँग दीजे बहा ॥ १४ ॥
मैं नीच अधम नाकार ।
तुम्हरे द्वारे पड़ा ॥ १५ ॥
मेरी बिनती सुनो धर प्यार ।
घट उमगाओ दया ॥ १६ ॥
मेरा जनम सुफल हो जाय ।
तुम गुन गाऊँ सदा ॥ १७ ॥
राधास्वामी पिता हमारे ।
जल्दी पार किया ॥ १८ ॥

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय।

॥ जनम साखी ॥

परम पुरुष पूरन धनी हुजूर महाराज साहब राधास्वामी दयाल आली जनाब राय सालिगराम साहब राय बहादुर साबिक़ पोस्ट मास्टर जनरल मुमालिक मग़रबी व शुमाली।

१—हुजूर महाराज साहिब हिन्दुस्तान के सूब: मुमालिक मग़रबी व शुमाली में शहर आगरा महल्ला पीपल मंडी के मुतबर्रक ख़ानदान*, क़ौम कायस्थ माथुर, अह्ल बरनी में फागुन सुदी अष्टमी सम्वत् १८८५ बिक्रमी शुक्रवार इष्ट ५६ घड़ी १५ पल यानी साढ़े चार बजे सुबह के मुताबिक़ १४ मार्च सन् १८२९ ई० प्रघट हुए और बनाम नामी राय सालिग राम साहब मौसूम हुए।

२—आम तौर पर नौ माह† मियाद बच्चा पैदा होने की है, हुजूर महाराज साहिब अट्ठारह महीने बाद माता जी महारानी के गर्भ से बाहर तशरीफ़ लाये और वक्त पैदायश के जिस्म मुबारक भी अट्ठारह महीनेही के बच्चे के बराबर था लेकिन बवजह ज़्याद: अर्स: के कोई तकलीफ़ माता जी महारानी को नहीं हुई।

*उत्तम कुल। †महीना।

३-हुज़ूर महाराज साहिब के जनम इष्ट से जोति-षियों ने ज़ायच: खींचा और उसको देख कर यह कहा कि यह बालक दीन व दुनिया के वास्ते प्रतापी होगा चुनाँचि वैसाही ज़हूर* हुआ और नक़ल उस की ज़ैल† में लिखी जाती है-

सूर्य केतु
१२
१०
११
९
१ मंगल
शुक्र बुध
८
२
बृहस्पति
३ चंद्रमा
५
७
४ सनीचर
६ राहु
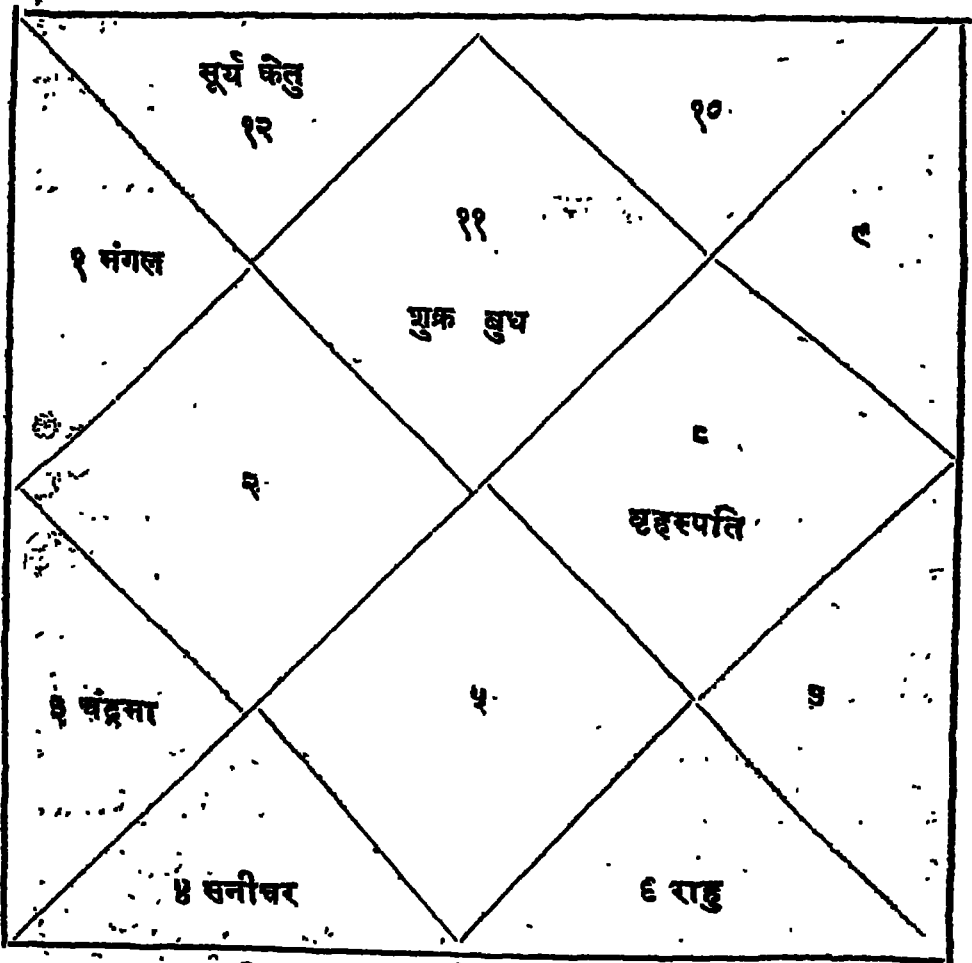
१-लगन को तमाम शुभ ग्रह देखते हैं और शुक्र व बुध शुभ ग्रह लगन में पड़े हैं क्रूर व पापी ग्रहों की

*प्रघट। †नीचे।

दृष्टी से लगन पाक व मुबर्रा* है ऐसे जोग अक्सर व बेश्तर जंनम पत्रियोँ में देखने में नहीँ आये हैं—उच्च व शुभ ग्रह पड़े हुए देखने में आये हैं और उनका फल भी दुनियाँ की हुकूमत व तरक़्क़ी धन की देखी गई है जो जोग हुज़ूर महाराज साहिब का ऊपर दर्ज किया गया है उस का फल यही है कि काल अंग से पाक काम क्रोध से रहित मुजस्सम† दयालू व सतोगुनी वृत्ती हो।

२—आठवेँ घर का मालिक बुध शुभ ग्रह है और वह लगन में बैठा है और शुक्र शुभ ग्रह के साथ जो देह का राजा है पड़ा है यह ऊँचे दरजे का परमार्थी जोग कहा जाता है और यह दोनोँ जोग ऐसे हैं कि खुद तो काल अंग न होवे बल्कि सोहबत और संगत से भी काल अंग का असर न पड़े और उनका काल अंग दब जावे जिन से साफ़ सबूत होने औतार कुल्ल मालिक दयाल का प्रघट होता है जैसे कि तरन तारन हुए।

३—दुनिया के रुतबे के वास्ते एक मंगल चार जोग से पड़ा है अव्वल मंगल तीसरे घर पड़ा है जो रुतबः का देने वाला होता है दूसरे अपने घर का है तीसरे वही मंगल राज घर यानी दसवेँ घर का मालिक है चौथे वही मंगल राज घर को आठवीँ यानी पूरन दृष्टी

*शुद्ध, साफ़। †सर्व अंग करके।

से देख रहा है जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि दुनिया में भी बड़ा रुतबः पावें जैसे कि पोस्टमास्टर जनरल हुए और यह ओहदा हिन्दुस्तानियों में इससे पेश्तर किसी को नहीं मिला था।

४—हुज़ूर महाराज साहिब के पिता जी महाराज का नाम नामी राय बहादुर सिंह साहिब था और पेशः वकालत करते थे और निहायत नेक सालह* और शिव भक्त थे और जो रुपया आमदनी वकालत से होता था उस में से सिर्फ़ उसी क़दर रुपया कि जो ज़रूरी ख़र्च ख़ानगी† के वास्ते दरकार होता था घर में देते थे बाक़ी ख़ैरात कर देते थे और हमेशः हुज़ूर महाराज साहिब की माता जी साहिबः को यह हिदायत करते कि इन्सान को दुनिया में ज्यादः लिप्त नहीं होना चाहिये अपनी आक़बत‡ का फ़िकर भी मुनासिब है और अक्सर ज़िकर दुनिया की नाशमानता और आख़िरत‡ के फ़ायदों का और ज्यादः तर बैराग का फ़रमाया करते थे।

५—एक मर्तबः जब हुज़ूर महाराज साहिब की उमर साल डेढ़ साल की थी पलंगों में खटमल ज़ियादः हो गये थे इस वजह से जनाबः दादी जी साहिबः ने ज़मीन पर बिस्तरा बिछा कर अपने

* अच्छा स्वभाव। † घर। ‡ परलोक।

पास आराम कराया। रात को एक काला नाग जो कि उस वक़्त ख़ानदानी कुल देव था हुज़ूर महाराज साहिब के सिरहाने कुंडली मार कर और फन उठा कर बैठा और रात भर उसी तौर से बैठा रहा कि कोई कीड़ा मकोड़ा आन कर तकलीफ़ न पहुंचावे। हुज़ूर महाराज साहिब ने सुबह के वक़्त उस को हाथ से पकड़ लिया और जनाबः दादी जी साहिबः से इशारः किया कि यह क्या है, जनाबः ममदूहः ने हस्ब रवाज साबिक़ के कुछ चावल छोड़े वह चला गया मगर बाद में भी वह दो तीन रोज़ तक आया और वही सेवा करता रहा और हुज़ूर महाराज साहिब उस को हमेशः हाथ से पकड़ के जनाबः ममदूहः को दिखा कर इशारः कर दिया करते थे, पस जनाबः ममदूहः ने नाग मज़कूर से बतौर कुलदेव के प्रर्थना की कि ऐसी दया से ख़ौफ मालूम होता है बच्चे के नज़दीक न आया कीजिये क्योंकि बच्चा आप को छेड़ता है चुनाँचि नाग मज़कूर ने हुज़ूर महाराज साहिब के इशारः को समझ कर कि उस की सेवा नापसंद है हाज़िर होना छोड़ दिया।

६—एक मर्तबः एक साधू रूप ने जनाब दादा जी साहिब के पास आकर अव्वल हुज़ूर महाराज साहिब

के दर्शन किये और फिर कहा कि यह बालक सब को दीन व दुनिया को फ़ायदा पहुंचाने वाला और नामवर व मशहूर होगा।

७—सन् १८३२ ई० में जब जनाब दादा जी साहिब के चोला त्याग करने का समय आया और कुछ बीमारी की हालत पैदा हुई उस वक्त खिंचाव और ध्यान की हालत में जनाबः दादी जी साहिबः से तीन मर्तबः फ़रमाया कि जिस क़दर बर्तन ताँबे और पीतल के हों सब ले आओ उस पर उन्हों ने कुछ ख्याल न किया क्योंकि उस वक्त हुज़ूर महाराज साहिब जनाबः ममदूहः की गोद में आगये थे, उस के बाद जनाब ममदूह ने ध्यान मुलतवी करके फ़रमाया कि शिवजी महाराज तशरीफ लाये हैं और उन के फ़रमाने पर मैंने बर्तन मँगाये थे क्योंकि शिव जी महाराज ने यह फ़रमाया था कि तुमने लड़कों की परवरिश के वास्ते कुछ सरमाया नहीं छोड़ा है ताँबे पीतल के बर्तन मँगाओ हम उन को छूकर सोने का कर देंगे कि जिससे गुज़र औक़ात* अच्छी तरह से होवे, तीन मर्तबः कहने का हुक्म था सो कहा मगर तुम न लाईं अच्छा किया, अब शिव जी महाराज फ़रमा रहे हैं कि यह तुम्हारे लड़के खुद

* घर का ख़र्च।

प्रतापी होंगे और छोटे लड़के यानी हुज़ूर महाराज साहिब को ऐसा धन अपने या ख़ानदान के तसर्रुफ़* में लाना मंज़ूर नहीं है, जो मौज। बाद इस के जनाब ममदूह अपने चोले से सिमटाव करके परम धाम को सिधारे।

८—जिस वक़्त जनाब दादा जी साहिब ने देह त्याग की थी हुज़ूर महाराज साहिब की उमर क़रीब चार बरस के थी, और हुज़ूर महाराज साहिब से बड़ी एक हमशीरः साहिबः और उन से बड़े एक भाई साहिब कि जिन का इस्म मुबारक राय नंदकिशोर साहिब था और उन की उमर क़रीब दस साल के थी मौजूद थे, राय नंदकिशोर साहिब बिरादर कलाँ हुज़ूर महाराज साहिब की आली तबीअत इब्तिदाय सिन् बलूग़† से निहायत नेक सीरत‡ और परमार्थ की जानिब राग़िब§ थी और मुख़ैयर‖ और मुदब्बिर¶ बदरजे ग़ायत** थे और इब्तिदा से पेशा मुलाज़मत सरकारी इख़्तियार फ़रमा कर वक़्तन् फ़वक़्तन् तरक़्क़ी पाते रहे, यहाँ तक कि बओहदः एक्सट्रा असिसटन्ट कमिश्नर फ़ैज़ाबाद बमुशाहरः†† सात सौ रुपये माहवार मुमताज़‡‡ हुए और

*ख़र्च। †शुरू साल बालिग़ होने से। ‡अच्छा स्वभाव। §चाहवाली। ‖ख़ैरात करने वाले। ¶इन्तिज़ाम करने वाले। **बड़े ††तनख़्वाह। ‡‡मुक़र्रर।

बहुत नेक नाम रहे और सन् १८७० ई० में ब्रउमर पच्चीस साल इस जहान से रिहलत* फ़रमाई ।

९—जनाब: दादी जी साहिब: बहुत बड़ी नेक और भोली भाली और प्रेमी भक्त थीं और बाद देहान्त जनाब दादा जी साहिब के उन्हों ने अपने बच्चों की अच्छी तरह पर तालीम और परवरिश फ़रमाई, और अक्सर जब २ कोई जोतिषी पंडित जनमपत्री हुज़ूर महाराज साहिब की देखते या कोई साधू हुज़ूर महाराज साहिब को बचपन में देखते तो कहते कि यह बच्चा यानी हुज़ूर महाराज साहिब बड़े तेज वाले और प्रतापी होंगे कि शायद ही ऐसा कोई होगा, ऐसे बचन उन के सुन कर बहुत मगन होती थीं ।

१०—हुज़ूर महाराज साहिब माबैन उम्र छः व ग्यारह साल के बतरीक़ खेल जो नक़्श व निगार† करते थे उन्हीं से बरवक़्त सवालात हर किसी की अगली यानी आइंदा होने वाली बात का जवाब देते थे और वैसाही ज़हूर होता था चुनाँचि इस शोहरत से अक्सर व बेशतर मस्तूरात‡ अपने २ मतलब के सवालात करने को आती थीं और जवाब में जो हुज़ूर महाराज साहिब फ़रमाते थे वैसाही हो जाता था ।

*कूच । †नक़्शा व तसवीरें । ‡औरतें ।

११—हुज़ूर महाराज साहिब बउमर लड़कपन एक मर्तबः तैराकी के मेले में दरियाये जमना में किश्ती पर सवार थे जब किश्ती धार में पहुंची जहाँ बल्लियों पानी था यकायक जमना में फिसल गये उस वक़्त बड़ी भारी रोशनी और नूर पानी के अंदर हुज़ूर महाराज साहिब को मालूम हुआ और कोई तकलीफ़ नहीं पहुंची, लाला कन्हैया लाल साहिब ख़ानदानी बड़े भाई आप के जो हमराह थे फ़ौरन् दरिया में कूद पड़े उस वक़्त पानी मौज से कमर तक हो गया ताकि लाला कन्हैया लाल साहिब मौसूफ़ को जो निहायत फ़िक्र में थे सदमः न पहुंचे और वह हुज़ूर महाराज साहिब को बआसानी बाहर निकाल लावें चुनाँचि वह निकाल लाये।

१२—चूँकि हस्ब तरीक़ः ख़ानदानी यह दस्तूर था कि शादी से पहिले गुरुदिक्षा बिहारीजी वाले गुसाँई जी से दिलाई जाती थी लिहाज़ा उसी मुताबिक़ हुज़ूर महाराज साहिब से भी कहा गया कि गुरुदिक्षा लेवें हुज़ूर महाराज साहिब ने अपने ख़ानदानी गुसाँई जी से उस वक़्त चंद दक़ीक़* सवाल मज़हबी व मुतअल्लिक़ भेद शब्द के किये जिनके जवाब न पाने पर गुरुदिक्षा लेने से इन्कार किया मगर मजबूर कराये जाने और

*गहरे।

ख़ास कर जनाबः दादी जी साहिबः के हुक्म पर गुरु-दिक्षा इस शर्त पर ले ली कि जब सच्चे गुरू मिलेंगे तब उनको गुरू धारन किया जावेगा और गुसाँईं जी मौसूफ़ को कोई एतराज़* न होगा।

१३—हुज़ूर महाराज साहिब की पहिली शादी फ़र्रुख़ाबाद में हुई और उससे एक दुख़्तर† नेक अख़्तर‡ पैदा हुई कुछ अर्सः बाद स्त्री महारानी चोला छोड़ कर परम धाम को सिधारीं और लड़की मौसूफ़ का भी शादी होने के बाद चोला छूट गया और वह परम धाम को राही हुईं।

१४—हुज़ूर महाराज साहिब ने छोटी ही उमर में बाद तहसील§ इल्म फ़ारसी के चार साल ही में इल्म अँगरेज़ी हासिल करके सीनियर क्लास को जो उस वक़्त में आला दरजा तालीम‖ का था पास किया और ख़ास कर इल्म थियालोजी¶ (इलम इलाही) में जिसमें तबीयत बहुत राग़िब थी अव्वल रहते थे और अपनी तेज़ फ़हमी और ज़हानत** से सिवाय अँगरेज़ी और फ़ारसी के और भी उलूम मिस्ल मन्तिक़ व फ़िलासूफ़ः के हासिल किये।

१५—हुज़ूर महाराज साहिब ने अट्ठारह बरस की उमर में मुलाज़मत सरकारी इख़्तियार की १४ मार्च सन्

---

*उज्र। †लड़की। ‡नसीबे वाली। §हासिल करना। ‖पढ़ाई। ¶मालिक का ज्ञान। **तेज़ी तबीयत, समझ बूझ।

१८४७ ई० बमुक़ाम आगरा दफ़्तर पोस्ट मास्टर जनरल साहिब मुमालिक मग़रबी व् शुमाली (जो अब युनाइटिड प्राविंसेज़ आगरा व अवध के नाम से मशहूर है) जिसमें पंजाब, अवध, राजपूताना और सेन्ट्रल इन्डिया भी उस वक्त शामिल थे बओहदः क्लार्क दोम बमुशाहरः सौ रुपया माहवारी मुक़र्रर हुए और इस ओहदः में हुज़ूर महाराज साहिब को काम दौरः का बहमराही पोस्ट मास्टर जनरल साहब सपुर्द हुआ।

१६—हुज़ूर महाराज साहब ने बअहद मुलाज़मी अव्वल इल्म जोतिष की तहसील की और बादहू उसका तरजुमा बज़बान फ़ारसी ऐसा किया कि हर एक वाक़िफ़कार इल्म जोतिष कारक व मारक को बख़ूबी समझ ले और उन्हीं के समझने के वास्ते बहुत से ज़ीइल्म* जोतिषी आया करते थे बाद तालीम क़वायद देखने व समझने व बयान करने कारक व मारक के ख़ुद तजर्बः करके तारीफ़ करते थे कि कुतुबहाय जोतिष को आज तक किसी ने ऐसा नहीं समझा है जो ऐसे आसान तरीक़े से दूसरे को समझा सके जैसा कि आपने कारक व मारक के देखने और समझने के सहल तरीक़े ज़ाहिर फ़रमाये हैं।

*इल्मवाले।

१७–अइयाम मुलाज़मत में हुज़ूर महाराज साहब ओहदः इन्सपेक्टर व सुपरिन्टेन्डेन्ट व हेड असिस्टन्ट व परसनल असिस्टन्ट व चीफ़ इन्सपेक्टर व पोस्ट मास्टर जनरल पर मुमताज़ हुए।

१८–अक्तूबर सन् १८५० ई० में मिस्टर रिडिल साहब पोस्ट मास्टर जनरल ने काम पोस्ट मास्टरी सहारनपुर ऐसे वक्त पर कि तमाम अमला बीमार था और काम निहायत अब्तर पड़ा था सपुर्द किया हुज़ूर महाराज साहब ने वहाँ जाकर मुलाहिज़ः फ़रमाया कि क़रीब एक महीने से कुछ काम न हुआ था और हज़ारों बुक़चे माल के जो बैल गाड़ी में रवाने होते थे और सैकड़ों पारसल डाक की पड़ी हुई थीं उन सबको दो मुहर्रिरों की मदद से अर्से दो माह में अलावा काम रोज़मर्रा के रवाना कर दिया और कुल्ल काम बाक़ी माँदः साफ़ हो गया और आइंदा काम दुरुस्ती और सफ़ाई के साथ होने लगा इसपर मिस्टर रिडिल साहब ने निहायत खुश होकर तरक्क़ी का वादः किया।

१९–बमाह सितम्बर सन् १८५१ ई० कार जाँच हिसाब बेगनट्रेन एजन्सी व डाकखाना इलाहाबाद का जो निहायत अब्तर था ऐसे उम्दा तौर से अनजाम दिया कि उससे मिस्टर रिडिल साहब पोस्ट मास्टर जनरल आर नोज़ औन-

रेविलसर टाम्सन् साहब लफ़्टनेन्ट गवरनर बहादुर निहायत खुश हुए और जो ओहदे इन्सपेक्टिंग पोस्ट मास्टर के पहली एप्रिल सन् १८५२ ई० में सिर्फ़ मुमालिक मग़रबी व शुमाली में नये ईजाद हुए थे उनमें से एक ओहदः पर जो आगरे में हुआ था हुज़ूर महाराज साहब को बमुशाहरः १५०) माहवार मुक़र्रर किया।

२०—पहली जुलाई सन् १८५२ ई० को हेड असिस्टेन्ट यानी सर दफ़्तर पोस्ट मास्टर जनरल बमुक़ाम आगरा मुक़र्रर हुए और वक़्तन् फ़वक़्तन् इज़ाफ़ः होकर सन् १८६० ई० में ३५०) माहवार तनख़्वाह होगई। इस असनाय* में डाकख़ाना इटावा में एक तग़ल्लुब† बरामद किया मेल, बैग और चमड़े की थैलियाँ के बनवाने में किफ़ायत निकाली।

२१—अइयाम दौरः में एक मर्तबः असवारी घोड़ा हुज़ूर महाराज साहब का गुज़र हाथियों के जंगल से हुआ उस वक़्त उस रास्ते में बहुत से हाथी मौजूद थे और हुज़ूर महाराज साहब को जाते हुए बराबर देखते रहे मगर किसी ने अपनी जगह से जुम्बिश‡ नहीं की।

२२—एक मर्तबः हुज़ूर महाराज साहब बहमराही

---

*अर्सः। †चोरी। ‡हिलना।

अफ़्सर दौर: में गये थे अफ़्सर तो पहिले दूसरे मुक़ाम को जहाँ ख़ीमे एस्तादः* हो गये थे चले गये और हुज़ूर महाराज साहब उसी जगह वास्ते इन्तज़ाम के ठहर गये क़रीब बारह बजे शब के जबकि चाँदनी रात थी मय जमादार के बसवारी घोड़ा दूसरे मुक़ाम के वास्ते रवाना हुए रास्ते में एक नदी मिली वहाँ पर पहरा सिपाही का था उस ने कहा कि शेर पानी पीने के वास्ते आया चाहता है और वह पानी पीकर थोड़ी देर यहाँ ठहरता है और जहाँ आप खड़े हैं इसी रास्ते से होकर जाता है इस लिये इस वक़्त रास्ता बंद हो जाता है और इस वक़्त एक बजे का क़रीब है आप लौट जाइये इसी असनाय में शेर दहाड़ा घोड़ा चौंका जमादार ख़ौफ़ खाकर वापस चला गया और सिपाही दरख़्त पर चढ़ गया मगर हुज़ूर महाराज साहब उसी जगह खड़े रहे कि शेर आ पहुंचा और बसबब चाँदनी के साफ़ नज़र आया मगर वह पानी पीकर फ़ौरन दूसरे रास्ते से दहाड़ता हुआ और भागता हुआ चला गया यानी उस तरफ़ को जहाँ हुज़ूर महाराज साहब खड़े थे और उसी रास्ते से हमेशः वह जाया करता था नहीं गया और हुज़ूर

*खड़े।

महाराज साहब बाद उसके चले जाने के रवाना हो गये और बख़ैरोआफ़ियत तमाम उस मुक़ाम पर जहाँ पोस्ट मास्टर जनरल साहब थे पहुंच गये।

२३—जब कि अहाता पंजाब अमलूदारी बृटिश गवर्मेंट में आया उसके बाद डाकख़ानाजात क़ायम करने की ग़रज़ से बहमराही अपने अफ़सर के हुज़ूर महाराज़ साहब पंजाब तशरीफ़ ले गये और शहरौं और देहातौं में बग़रज़ क़ायम करने डाकख़ानाज़ात व समझाने फ़वायद* मुतअल्लिक़ उसके बसवारी घोड़ा दौरः फ़रमाया मगर हरियाने के बाज़ देहात के बाशिन्दौं ने क़ायमी डाकख़ाना से नाराज़गी ज़ाहिर करके हुज़ूर महाराज साहब और उनके अफ़सर पर ईंट पत्थर फैंकने शुरू किये, पोस्ट मास्टर जनरल साहिब और उनके साथ हुज़ूर महाराज साहब ने अपने घोड़े वहाँ से भगाये और लोगौं ने भी ईंट पत्थर मारते हुए तअक्कुब† किया, मगर घोड़ौं के पीछे ही सब ईंट पत्थर गिरते रहे कोई घोड़ौं पर या हुज़ूर महाराज साहब या उन के अफ़सर को नहीं लगा।

२४—एक दफ़े हुज़ूर महाराज साहब वास्ते तहक़ीक़ात मुक़द्दमः के पालकी में रात के वक़्त तशरीफ़ ले जा

* फ़ायदे। † पीछा।

रहे थे चित्तौड़गढ़ और घाँगरौल के दरमियान में एक शहाबा जिन्नात का मिला और वह कुछ दूर तक हुज़ूर महाराज साहब की पालकी के साथ चला, थोड़ी दूर चलने के बाद हुज़ूर महाराज साहब ने उस को फ़रमाया कि अब जाओ फिर वह ग़ायब होगया।

२५—एक मर्तबः हुज़ूर महाराज साहब ग्वालियर से मुक़ाम सीपरी को तशरीफ़ ले जा रहे थे रास्ते में मोहना नदी पर एक शेर मिला और व्रह एक मील तक हुज़ूर महाराज साहब की पालकी के साथ भागता हुआ चला और फिर जंगल को चला गया हुज़ूर महाराज साहब के किसी हमराही पर कोई हमला नहीं किया इस को देख कर जो लोग साथ में थे और ख़ौफ़ खा रहे थे बहुत ही तअज्जुब करने लगे।

२६—एक मर्तबः हुज़ूर महाराज साहब झाँसी को बतक़रीब दौरः तशरीफ़ ले गये थे ग्वालियर और झाँसी के बीच में एक नदी कोकरायल पड़ी वहाँ कोई किश्ती वग़ैरह मौजूद न थी और हुज़ूर महाराज साहब को नदी के पार जाना ज़रूरी था कि उसी वक्त़ एक लट्ठा लकड़ी का नदी में बहता हुआ आया हुज़ूर महाराज साहिब उसको सीधा कराकर उस पर क़दम रखते हुए नदी को पार कर गये और पाय मुबारक ने

बिल्कुल लग़जिश* नहीं की और सब हमराही भी इसी तरह हुजूर महाराज साहब के पीछे२ पार उतर गये और फिर वह लट्ठा आगे को बह गया।

२७—एक दफ़: हुजूर महाराज साहब देवास को जो इंदौर के क़रीब है बतक़रीब दौर: तशरीफ़ ले गये थे और डाक बँगले में ठहरे थे। रात को बारह बजे के क़रीब पानी नहीं रहा और डाक बँगले में कुँवाँ न था और कोई हरकार: वग़ैरह जो वहाँ मौजूद थे बसबब ख़ौफ़ रात के पानी लेने को न गये तब भवानी मुलाज़िम खुद एक बावड़ी में से जो क़रीबही रानी के बाग़ में थी पानी लेने को चला गया उस बावड़ी में क़रीब सत्तर पछत्तर सीढ़ी उतर कर चारौं तरफ़ घाट बने थे वहाँ से पानी भरकर जब ऊपर आया तो उसको आवाज़ ऐसी मालूम पड़ी कि बहुत से आदमी बावड़ी के अंदर पानी में कूद रहे हैं और शोर व ग़ुल करते हैं मगर कोई आदमी नज़र नहीं पड़ा जब बाग़ के बाहर आया तो देखा कि हुजूर महाराज साहब खड़े हैं और भवानी मुलाज़िम पर नाराज़ होकर फ़रमाया कि तुम बग़ैर हमारी इत्तिला के इस वक़्त इस जगह क्यौं चले आये हम को तुम्हारी हिफ़ाज़त के

*फिसलना।

लिये यहाँ तक आना पड़ा बाद उसके सुबह हरकारों वग़ैरह से मालूम हुआ कि इस बावड़ी में आसेब है बहुत से अदमी वक़्तन् फ़वक़्तन् डूब गये हैं और जो कोई रात को जाता है वह वापस नहीं आता इस वास्ते कोई शख़्स उस में बाद चिराग़ जलने के नहीं जाता है।

२८—हुजूर महाराज साहब की दूसरी शादी सन् १८५२ ई० में बमुक़ाम आगरा हुई उस से दो दुख़्तर* नेक अख़्तर और तीन फ़रज़ंद† पैदा हुए पहिले फ़रज़ंद ने एक बरस की उमर में देह त्याग की उसके बाद बड़ी दुख़्तर ने जिन की शादी बाबू राज नरायन साहब से हुई थी बउमर २८ साल सन् १८८६ ई० में एक लड़का जिनका नाम कुँवर संत प्रशाद है ग्यारह दिन का छोड़ कर चरनों में निवास के वास्ते देह त्याग की। दूसरी दुख़्तर जिन की शादी बाबू रामचंद्र साहब से हुई मौजूद हैं और उन के एक दुख़्तर और दो फ़रज़ंद बाबू हरिशचंद्र व बाबू बिशन चंद्र और एक पोती और एक पोता मौजूद हैं दूसरा फ़रज़ंद यह नियाज़मंद अजुध्या प्रशाद है और मेरी औलाद में से इस वक़्त दो लड़की और एक लड़का कुँवर गुरुप्रशाद और एक पोता

*लड़की। †लड़का।

कुँवर आनंद प्रशाद और एक नवासी बड़ी दुख़्तर से जिसकी शादी बाबू प्रभूशंकर साहब से हुई है मौजूद हैं तीसरे फ़रज़ंद द्वारका प्रसाद ने बउमर आठ साल सन् १८७७ ई० में देह त्याग करके चरनों में बासा पाया।

२९—सन् १८५७ ई० अय्याम ग़दर में हुज़ूर महाराज साहब ने पोस्ट मास्टर जनरल साहब के दफ़्तर का ऐसा उमदा इन्तज़ाम किया कि कोई काग़ज़ दफ़्तर का ज़ाया* नहीं हुआ और पोस्ट मास्टर जनरल और पोस्ट मास्टर आगरा को इस क़दर मदद दी कि चिट्ठियात का आना जाना बिलकुल बंद नहीं हुआ अगर एक रास्ता बंद होगया तो डाक रसानी का इन्तज़ाम दूसरे रास्ते से कर दिया और ख़बर के महकमे में वक़्तन् फ़वक़्तन् क़ासिद बहम पहुंचाने† का इन्तज़ाम ऐसी ख़ूबी के साथ किया कि चिट्ठियात सरकारी अफ़वाज दिहली व लखनऊ को ले जाने और लाने में किसी क़िस्म की दिक्क़त नहीं हुई ऐसी ऐसी ख़ैरख़्वाही और कारगुज़ारी के ‡सिलः में गवर्मेंट मग़रबी व शुमाली व नीज़ सुप्रीम गवर्मेंट हिन्द से चिट्ठियात शुकरियः अता हुईं और जब क्लार्क साहब पोस्ट मास्टर जनरल ने वास्ते इनाम देहात के तहरीर करना चाहा तो हुज़ूर महाराज साहब ने उन को

* नुक़सान। † इकट्ठा करना। ‡एवज़।

रोक दिया और कहा कि यह जो कुछ कारगुज़ारियाँ मैंने की हैं वह मेरी मुलाज़मी के फ़रायज़ मन्सबी* हैं मुझ को किसी क़िस्म का इनाम लेना मंज़ूर नहीं है।

३०-५ जुलाई सन् १८५७ ई० को बाग़ियों की फ़ौज आई और गोलियाँ चलने लगीं और यह ख़बर मशहूर हुई कि अगर बाग़ी शहर में आवेंगे तो क़िले से गोल: अंदाज़ी बिला किसी लिहाज़ के शहर पर की जावेगी चूँकि मकान हुज़ूर महाराज साहब का और नीज़ मकानात दीगर अहल बिरादरी के क़िले के क़रीब और गोलह की ज़द† में थे बुज़ुर्गान क़ौम ने आकर हुज़ूर महाराज साहब से मशवर: किया कि कोई जगह महफ़ूज़‡ में यहाँ से हट जाना मुनासिब है हुज़ूर महाराज साहब ने सब लोगों को बहुत दिलासा दिया और फ़रमाया कि मालिक की मौज का भरोसा रखना चाहिये और सब के इतमीनान के वास्ते दीवान हाफ़िज़ में से उसी वक़्त फ़ाल निकाली जो शेर निकला उस का मज़मून यह था कि तुम दुनियाँ की आफ़ात§ से इस क़दर परेशान हो कुछ उन मुसीबतों से बचने का भी सामान किया है जो मौत के वक़्त आयद‖ होंगी और उस

*नौकरी का धर्म। †मार। ‡हिफ़ाज़त की। §तकलीफ़ें। ‖सामने आवेंगी।

वक्त का कौन सहाई है हुज़ूर महाराज साहब ने उस शेर का मतलब मय दीगर नसीहतों के सब को सुना कर फ़रमाया कि चाहे सब लोग दूसरी जगह चले जावें मगर हम मालिक की मौज के भरोसे पर यहीं रहेंगे और बाद तसल्लुत* के कुल मालिक की भक्ती सच्चे और पूरे तौर से जारी करेंगे इस पर सब लोगों को शान्ती आई और कोई वहाँ से न गया मौज से बागी शहर में नहीं आये और क़िले से जो गोले चलाये गये उन से उस महल्ले में कोई नुक़सान नहीं पहुंचा।

३१—ग़दर में जो हालत लोगों की यकायक तबदील हुई यानी जो अमीर थे मुफ़लिस हो गये और जो ग़रीब और महुताज थे वह दौलतमंद हो गये यह बहुत बड़ा मौक़ा दुनिया की नापायदारी† और बेसबाती† का सबक़ लेने के वास्ते पैदा हुआ और इस से मालिक के खोज की फ़िकर और उसके मिलने की खुशी का असर पैदा होने का मौक़ा आया चुनाचि हुज़ूर महाराज साहब ने बाद तसल्लुत के एक पंडित को नौकर रख कर कथा भागवत की शुरू कराई और उसमें भेद मालिक और उसके मिलने के रास्ते का

*अमन। †नाश मानता।

कुछ न देख कर उसको बंद कर दिया और उपनिषदों का पढ़ना शुरू किया और जो अभ्यास प्राणायाम और दृष्टी साधन के उसमें तहरीर थे उनका शग़ल* किया और जो नतीजे उसमें जिस २ वक़्त के ऊपर मिलने को तहरीर थे हासिल हुए, मगर उनको पूरे फ़ायदे का न पाया और मस्नवी मौलाना रूम का भी मुताला फ़रमाया उसमें जो शब्द और गुरू की महिमाँ थी उसको पसंद फ़रमाया और वास्ते तलाश पूरे गुरू के लोगों से इरशाद फ़रमाया जो साधू पंडित और मौलवी की तारीफ़ सुनते उससे मिल कर सवालात करते और जवाब भेद का न मिलता और भी दीगर मज़हबी किताबों का मुलाहिज़ा किया मगर कोई भेदी उस दरजे तक का भी न मिला और यह तलाश बराबर उस वक़्त तक जारी रही जब तक कि हुज़ूर स्वामी जी महाराज से भेद के सवालों का जवाब शाफ़ी† न मिला।

३२–सन् १८५८ ई० में जब हुज़ूर महाराज साहब ओहदः हेडअसिस्टन्ट यानी सर दफ़्तर पोस्ट मास्टर जनरल साहब थे बमुकाम मेरठ दौरह में पोस्ट मास्टर जनरल साहब बहादुर के पास हस्बुल तलब‡ तशरीफ़ ले गये और उस वक़्त लाला प्रताप

*अभ्यास। †पूरे इतमीनान का। ‡बुलाये जाने पर।

सिंह साहब सेठ जो बाद में जनाब चाचा जी साहब के लक़ब से मशहूर हुए दौरा में पोस्ट मास्टर जनरल साहब के बओहदः कैम्प क्लार्की हमराह थे और जहाँ हुज़ूर महाराज साहब फ़रोकश* हुए उस के बराबर के कमरे में वह भी ठहरे हुए थे और जनाब चाचा जी साहब मौसूफ़ जो पाठ पंचग्रंथी का करते थे उस को हुज़ूर महाराज साहब ने सुन कर जनाब ममदूह से दरियाफ़्त फ़रमाया कि यह जो आप पाठ करते हैं इस के भेद और शग़ल से भी वाक़िफ़ हैं या और किसी साहब इस रमूज़† के भेदी से आप शनासा‡ हैं इस पर चाचा जी साहब ने फ़रमाया कि मेरे बड़े भाई साहब लाला शिवदयाल सिंह साहब जो आगरे में तशरीफ़ रखते हैं इस रमूज़ से वाक़िफ़ हैं और अभ्यास भी करते हैं हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि आगरे वापस जाने पर आप ज़रूर अपने भाई साहब मुकर्रम§ से मेरी मुलाक़ात करा दें।

३३—आगरा वापस आने पर हुज़ूर महाराज साहब ने चाचा जी साहब से फिर फ़रमाया कि आप अपने भाई साहब से मेरी मुलाक़ात करा दीजिये जनाब मौसूफ़ ने फ़रमाया कि बाद दरियाफ़्त करने के मैं ले

*ठहरे। †भेद। ‡पहिचानते। §बुज़ुर्ग।

चलूँगा फिर मुकर्रर याद दिहानी पर इतवार के रोज़ माह नवम्बर सन् १८५८ ई० में हुज़ूर महाराज साहब चाचा जी साहब के हमराह उन के भाई साहब मुअज्ज़िज़ व मुकर्रम की ख़िदमत में तशरीफ़ ले गये जिन का नाम नामी लाला शिवदयाल सिंह सेठ साहब था और यही हुज़ूर मुअल्ला* बाद में राधास्वामी दयाल और स्वामी जी महाराज साहब के लक़ब से मशहूर हुए और परमार्थ की चर्चा बहुत अर्से तक हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब से बराबर होती रही, इस अव्वलही दिन की चर्चा में सैकड़ौं सवालात हुज़ूर महाराज साहब ने निसबत प्राणायाम व मुद्राओं के साधन और रचना और गुरू और शब्द और अंतर अभ्यास और संत मत के किये और हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने उन के जवाब शाफ़ी† व वाफ़ी† बयान फ़रमाये और भी हाल अभ्यास का और उन के बिघनौं का और जुगत उन के हटाने की बयान फ़रमाई और हालात कश्फ़‡ अंदरूनी के पैदा व ज़ाहिर हुए हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामी जी महाराज की ख़िदमत से वापस तशरीफ़ लाते वक़्त ही उन लोगौं से जिन को वास्ते तलाश

*सब से बड़े। †पूरे इतमीनान के। ‡प्रकाश।

गुरू कामिल* के कह रक्खा था फ़रमा दिया कि जिन की हम को तलाश थी वह मिल गये और जिस को ख़्वाहिश होवे हुज़ूर स्वामी जी महाराज की ख़िदमत में हाज़िर होवे, उस के बाद हुज़ूर महाराज साहब ने अव्वल हफ़्तः वार इतवार को और बाद चंद हफ़्ते में दो तीन मर्तबः और फिर रोज़ाना हुज़ूर स्वामी जी महाराज की ख़िदमत में जाना और परमारथी चरचा करना जारी रक्खा और सच्ची भक्ती की अमली कार्रवाई पूरे तौर से इजरा फ़रमाई और इन्तिहा के दरजे को पहुंचा दी और हाज़िरी सतसंग और सेवा हुज़ूर स्वामी जी महाराज में बहुत ज़्यादा वक़्त रोज़ाना शबो रोज़ में सर्फ़ करने लगे।

३४—थोड़े अर्से बाद हुज़ूर महाराज साहब बतक़रीब दौरः मथुरा बिन्द्राबन तशरीफ़ ले गये वहाँ अपने गुसाँई जी बिहारीजी वाले से मिले और उन से सुरत शब्द योग का हाल और हुज़ूर स्वामी जी महाराज का पता बतला कर कहा कि या तो गुसाँई जी आप इस मारग का भेद बतलावें और अभ्यास में मदद दें, वर्नः हुज़ूर स्वामी जी महाराज को गुरू

* पूरे।

धारन करने की इजाज़त दें बल्कि खुद भी हुज़ूर स्वामी जी महाराज को गुरू धारन करके अपना उद्धार करावें, चुनाँचि गुसाँईं जी भेद न बतला सके और हुज़ूर महाराज साहब को इजाज़त देदी और खुद भी हमराह हुज़ूर महाराज के हुज़ूर स्वामी जी महाराज के सतसंग में हाज़िर हुए।

३५–हुज़ूर महाराज साहब हुज़ूर स्वामी जी महाराज की ख़िदमत में ज़ायद एक साल से वास्ते जारी करने आम सतसंग के अर्ज़ कर रहे थे पहिले हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि इस में तकलीफ़ होगी तुम जिन का नाम बतलाओ उन को जुक्ती बतला दी जावे या एक फ़िहरिस्त लिख कर पेश करो हम उनका उद्धार योंही कर देंगे बल्कि जिस का तुम चाहोगे उद्धार हो जावेगा, चूँकि हुज़ूर महाराज साहब ने इस ख़ास काम के वास्तेहीं मनुष्य देह धारन फ़रमाई थी अर्ज़ किया कि कुल्ल जगत का उद्धार होना चाहिये, हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने तब इस अर्ज़ को मंज़ूर फ़रमा कर सन् १८६१ ई० में बसंत पंचमी के दिन से सतसंग आम जारी फ़रमाया जैसा कि शब्द ज़ैल* से जो कि हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब

* नीचे लिखा हुआ।

ने हुज़ूर महाराज साहब की प्रार्थना का फ़रमाया है ज़ाहिर है और जिसका अमल दरामद पूरे तौर से हुज़ूर महाराज साहब ने जारी फ़रमाया और अपना चोला क़ायम रखने तक बतरक्क़ी निबाह करके नमूना लासानी* दिखला दिया।

॥ सार बचन नज़म बचन ३३ शब्द १९ ॥

सतगुरु से करूँ पुकारी। संतन मत कीजे जारी ॥१॥
जीवौं का होय उधारी। मैं देखूँ यही बहारी ॥२॥
मैं मौज करूँ फिर भारी। सब आरत करें तुम्हारी ॥३॥
मैं हरखूँ खेल निहारी। मानो यह अर्ज़ हमारी ॥४॥
मैं राखूँ पक्ष तुम्हारी। अब कीजे दया बिचारी ॥५॥
मैं बालक सरन अधारी। मैं करूँ बेनती भारी ॥६॥
जो मौज न हो यह न्यारी। तो फेरो सुरत हमारी ॥७॥
घट भीतर होय क़रारी। शब्दा रस करे अहारी ॥८॥
दोउ में से एक सुधारी। जो दोनौं करो दयारी ॥९॥
मैं राज़ी रज़ा तुम्हारी। मैं राधास्वामी गोद पड़ारी ॥१०॥

३६-हुज़ूर महाराज साहब ने तन से हर क़िस्म की सेवा हुज़ूर स्वामीजी महाराज की की, मसलन् चरन दाबना, पंखा करना, चक्की पीसना, हुक्क़ा भरना और

* जिसका दूसरा नमूना नहीं।

पिलाना, और चाह-शीरीं* से पानी भर कर लाना, अश्नान कराना, खाना बनाना, मकान की झाड़ू सफ़ाई और पुताई करना, मिट्टी खदाने से खोद कर लाना, जंगल के दरख़्तों से दातन काट कर लाना, पाख़ाना साफ़ करना, मोरी धोना, चौका बर्तन करना, बाज़ार से सामान ख़रीद के ख़ुद लाना, अपने कन्धे और चढ़्ढी पर सवारी देना, पालकी उठाना, और हमराह सवारी के दौड़ना, पीकदान पेश करना व चौर ढुलाना वग़ैरह।

३७—हुज़ूर महाराज साहब ने धन की सेवा भी ऐसी की कि कुल्ल तनख़्वाह हुज़ूर स्वामी जी महाराज की भेंट कर देते थे, हुज़ूर स्वामी जी महाराज चंदे† बक़दर ज़रूरत‡ ख़र्च ख़ानादारी व बाद को निस्फ़§ तनख़्वाह मकान पर हुज़ूर महाराज साहब के भिजवा देते थे उस में से भी हुज़ूर महाराज साहब वक़्तन् फ़वक़्तन|| ले जाते थे और दीगर क़िस्म की सेवा आरती भोग पोशाक ज़ेवर वग़ैरह में सर्फ़ करते रहते थे, और क़र्ज़ लेकर भी आरती वग़ैरह किया करते थे, और जिस वक़्त जो ज़रूरत होती उसको बिला तअम्मुल पूरा करते थे ख़्वाह रुपया पास हो या न हो।

*मीठे पानी का कुआँ। †थोड़े दिन। ‡ज़रूरत के मुवाफ़िक़। §आधी। ||जब तब।

३८–हुज़ूर महाराज साहब मन से इस तरह सेवा में मसरूफ़ रहते थे कि बिला आलस व नुमाइश* व अहंकार के दीनता के साथ अहकाम हुज़ूर स्वामी जी महाराज की तामील फ़रमाते थे चाहे वह मन और बुद्धी के खिलाफ़ही क्योँ न हो ग़रज़ यह कि हर क़िस्म की ऊँच नीच सेवा तन मन धन से हुज़ूर स्वामी जी महाराज की ऐसी करी कि जो इन्सानी ताक़त से बाहर है ।

३९–हुज़ूर महाराज साहब ने सुरत की सेवा इस तोर पर हुज़ूर स्वामी जी महाराज की की कि हर वक्त़ सुरत में नाम व स्वरूप हुज़ूर स्वामी जी महाराज का बसा रक्खा और इस मसलः को कि दिल बा यार व दस्त बा कार पूरे तोर से साबित कर दिया– खाते पीते चलते फिरते सोते जागते हर वक्त़ लगन हुज़ूर राधास्वामी दयाल की लगी रहती थी हुज़ूर महाराज साहब की सेवा की निसबत यह क़ैाल और फ़ेलथा– क्या वारूँ गुर पर आई । तन मन धन तुच्छ दिखाई ॥ सुत अंस तुम्हारी प्यारी । अब सरबस हुई तुम्हारी ॥

४०–जल भरने की सेवा हुज़ूर महाराज साहब ने अर्से तक इस तोर से की कि रोज़ाना दोपहर के

*दिखावा ।

वक्त़ गरमी जाड़ा बरसात में नंगे पैर मीठे कुँवों से जो शहर के बाहर वाक़ः हैं और शहर में कुएँ खारी हैं एक घड़ा भर कर कभी मोती कुँएँ से जो कम्पनी बाग़ के पास है और हरभोला की कुँइयाँ से जो कट-घर के क़रीब है लाया करते थे और अक्सर ऐसा हुआ है कि किसी ने रास्ते में पानी पीने को माँगा है तो उस को निहायत ख़ुशी से पानी पिला दिया और चूँकि बाक़ी* माँदः पानी को क़ाबिल सेवा हुज़ूर स्वामी जी महाराज के नहीं समझा तो फिर वापस जाकर दूसरा घड़ा भर कर हुज़ूर स्वामी जी महाराज के वास्ते ले आये एक मर्तबः ऐसा हुआ कि घड़ा पानी का भर कर ला रहे थे रास्ते में घड़ा टूट गया और उस वक्त़ पैसा पास न था तो हुज़ूर महाराज साहब ने एक कुम्हार के यहाँ जो कि नावाक़िफ़ था तिरपौलिया से दूसरा घड़ा ख़रीद किया और बिल्-एवज़ क़ीमत के अपना चादरा जो उस वक्त़ ओढ़े थे उस के पास गिरवी रख दिया और फिर मीठे कुँएँ से पानी भर कर वास्ते सेवा हुज़ूर स्वामी जी महाराज़ के लाये और फिर दूसरे रोज़ पैसे देकर अपना चादरा वापस ले लिया।

*बचा हुआ

४१—हुज़ूर महाराज साहब चरनामृत परशादी मुख अमृत व पीकदान का अमृत हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब का गुरु भाव से रोज़ाना लेते थे और चूँकि हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब खत्री थे इस लिये शहर में आम तौर से और कायस्थौँ में ख़ास तौर से इस बात का बड़ा शुहरा था और बतौर निंद्या के हर घर में और ख़ास कर रिश्तेदारौँ में रोज़मर्रः इस का चर्चा होता था।

४२—हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने पहिले राधास्वामी नाम प्रघट नहीं किया था सिर्फ़ सत्त नाम अनामी तक का भेद और उसी का उपदेश फ़रमाते थे जैसा कि पिछले संतौँ के वक्त में था। हुज़ूर महाराज साहब ने जब सुरत शब्द अभ्यास में राधास्वामी नाम की धुन व गाज सब से ऊँचे अस्थान से आती सुनी और वहाँ पहुंच कर राधास्वामी दयाल के स्वरूप और हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब के निज रूप की एकता देखी तब हुज़ूर स्वामी जी महाराज को उसी यानी राधास्वामी नाम से पुकारना शुरू किया और फिर हुज़ूर महाराज साहब की प्रार्थना से राधास्वामी नाम और राधास्वामी धाम का उपदेश व अभ्यास जारी हुआ और राधास्वामी नाम

की पुकार व सुमिरन व भजन ज़बान व मन व सुरत से शुरू होगई, जैसा कि हुजूर महाराज साहब ने प्रेम बानी जिल्द तीसरी के शब्द सावन में इन चंद कड़ियाँ में खुद फ़रमाया है—

ढूँढत ढूँढत बन बन डोली।
तब राधास्वामी की सुन पाई बोली॥
प्रीतम प्यारे का दिया सँदेशा।
शब्द पकड़ जाओ उस देशा॥
कर सतसंग खुले हिये नैना।
प्रीतम प्यारे के सुने वहाँ बैना॥
जब पहिचान मेहर से पाई।
प्रीतम आप गुरू बन आई॥

और हुजूर स्वामी जी महाराज साहब ने भी आख़िरी वक़्त के बचनों में, क़ब्ल चोला छोड़ने के बचन नम्बर १४ व १३ में जोकि सवानह उमरी हुजूर स्वामी जी महाराज साहब में छपे हैं बाज़ सतसंगियों के इस एतराज पर कि हुजूर स्वामी जी महाराज साहब ने उन को उपदेश सत्तनाम और अनामी का दिया था और राधास्वामी नाम पीछे हुजूर महाराज साहब ने ईजाद कर दिया है वह राधास्वामी नाम को नहीं मानना चाहते हैं फ़रमाया है और जिस की नक़ल ज़ैल में दर्ज की जाती है—

"बचन नम्बर १४-फिर लाला प्रताप सिंह की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि मेरा मत तो सत्त-नाम और अनामी का था राधास्वामी मत सालिग-राम (हुजूर महाराज साहब) का चलाया हुआ है इसको भी चलने देना और सतसंग जारी रहे और सतसंग आगे से बढ़ कर होगा।,,

"बचन नम्बर १३-फिर सुदर्शन सिंह ने पूछा कि जो कुछ पूछना होवे तो किससे पूछें उस पर फ़रमाया कि जिस किसी को पूँछना होवे वह सालिग राम (हुजूर महाराज साहब) से पूँछे।,,

४३-एक मर्तबः हुजूर स्वामी जी महाराज फ़ैज़ाबाद को मय चंद साधू व सतसंगियों के तशरीफ़ ले गये थे और वहाँ से एक रोज़ बसवारी पालकी अजोध्या को जो पाँच मील के फ़ासले पर है तशरीफ़ ले गये थे और साधू व सतसंगी भी पैदल हमराह पालकी गये थे मगर उनमें से सिर्फ़ हुजूर महाराज साहब व बाबू जीवनलाल साहब और कन्हैया सीतला वाला पालकी के हमराह अज़ोध्या तक पहुंचे, बाक़ी सतसंगी व साधू पालकी के साथ न दौड़ सके और थक कर पीछे रह गये और वापसी के वक्त़ भी बिला खाना खाये हुए जब शाम को लौटे तो सिर्फ़ हुजूर

महाराज साहब व बाबू जीवन लाल साहब पालकी के हमराह फ़ैज़ाबाद पहुंचे और बाक़ी सब पीछे से आये।

४४—एक मर्तबः हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब हाथरस को तशरीफ़ ले गये आगरे से मेंडू यानी हाथ-रस जंकशन तक बसवारी रेल और वहाँ से हाथरस तक पापियादः जाना पड़ा क्योंकि मेंडू स्टेशन पर कोई सवारी नहीं मिली उस वक्त हुज़ूर स्वामी जी महाराज के हमरकाब चंद सतसंगी और सतसंगिन व साधू थे हुज़ूर महाराज साहब व दीगर सेवकान हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब को अपनी चड्ढी और कंधों पर सवार कराकर ले चले मगर बवजह शिद्दत धूप व गरमी व गरम रेत व ना़हमवार* रास्ते के सब सेवक थोड़ी ही दूर में थक कर पीछे रह गये सिर्फ़ हुज़ूर महाराज साहब व बाबू जीवन लाल साहब व कन्हैया सीतला वाला बारी २ अपनी चड्ढियों पर सवार करा कर हाथरस तक पहुंचे।

४५—हुज़ूर महाराज साहब की बिरादरी वालों को जब मालूम हुआ कि वे हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब के पास जाकर उनका मुख अमृत परशादी व चरनामृत खाते पीते हैं तो उन्होंने एक कमेटी इस

*ऊँचा नीचा।

ग़रज़ से करनी चाही कि हुज़ूर महाराज साहब को बिरादरी से ख़ारिज कर दें मगर मौज से सरगिरोह* कमेटी के पोते से ऐसी नाशायस्तः हरकत सरज़द† हुई कि जिस्से सरगिरोह कमेटी बहुत नादिम‡ व पशेमान हुए और ख़ौफ़ पैदा हुआ कि वे ख़ुद बिरादरी से कहीं ख़ारिज न कर दिये जावें पस कमेटी करने की हिम्मत न पड़ी।

४६—सन् १८६१ ई० में हुज़ूर महाराज साहब ने हस्बुल हुक्म डैरेक्टर जनरल साहब किताब क़वायद डाकख़ानाजात का तर्जुमा उर्दू में वास्ते मग़रबी व शुमाली व पंजाब के डाकख़ानाजात के अहलकारों§ की आसानी और फ़ायदे की ग़रज़ से किया।

४७—डाक्टर पाटन साहब ने जो पोस्ट मास्टर जनरल मुमालिक मग़रबी व शुमाली के थे और हुज़ूर महाराज साहिब की कारगुज़ारियों से निहायत ख़ुश थे और हुज़ूर महाराज साहब के साथ निहायत उन्सियत रखते थे एक मर्तबः हुज़ूर महाराज साहब से दरियाफ़्त किया कि वे क्या सिफ़ारिश हुज़ूर महाराज साहब के वास्ते करें हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि सिर्फ़ आप की नज़र इनायत काफ़ी है उस पर

*मुखिया। †बेजा कार्रवाई बन गई। ‡शरमिन्दा। §नौकरों।

डाक्टर पाटन साहब ने एक घड़ी सोने की विलायत से अपना और हुज़ूर महाराज साहब का नाम कंदः कराके मँगवाई और मुमालिक मग़रबी व शुमाली से जाने के वक़्त हुज़ूर महाराज साहब के पेश कर के फ़रमाया कि यह हमारी दोस्तानः यादगार है इसको मंज़ूर कीजिये।

४८—सरकारी चिठ्ठियोँ के वास्ते जो डिस्ट्रिक्ट पोस्ट पहिले अलहदः थी उसको हुज़ूर महाराज साहब ने जब्कि इन्सपेक्टिंग् पोस्ट मास्टर (सुपरिन्टेन्डेन्ट) आगरा डिवीज़न् के थे जनरल डिपार्टमेन्ट पोस्ट आफ़िस से मिला दिया और उसके इन्तिज़ाम के वास्ते जो क़वायद् व नक़्शःजात दरकार थे हुज़ूर महाराज साहब ने ईजाद* किये और अव्वल इस कार्रवाई को आगरा डिवीज़न् में इम्तिहानन् जारी किया बाद उसके कुल मुमालिक मग़रबी व शुमाली में जारी हो गये।

४९—महकमः डाकख़ानः में सन् १८५२ ई० से सन् १८८६ ई० तक यानी हुज़ूर महाराज साहब के दौर हुकूमत में बहुत सी तरक्क़ियाँ हुईं मसलन् इजराय मनीआर्डर व मनीआर्डर लगान व माल गुज़ारी व

*नये बनाये।

सेविंग्वङ्क और काम तार घर का और पारसल बीमा व क़ीमत तलब व ईजाद पोस्टकार्ड व कमी महसूल चिट्ठियात व पारसल वग़ैरह और इन सब के क़वायद के मसौदे व नक़्श:जात अव्वल हुज़ूर महाराज साहब ने बनाये और हर मुआमले में हुज़ूर महाराज साहब से मशवर:* लिया जाता था।

५०—हुज़ूर महाराज साहब जब डाकख़ानों के मुलाहिज़: के वास्ते तशरीफ़ ले जाते थे तो हर एक किताब का मुलाहिज़:† फ़रमाते थे और जब किताब को खोलते थे तो उसका वही सफ़हा कि जिसमें कुछ ग़लती हो निकलता था और इसी तरह से जिस फ़ाइल में कोई ग़लती होती थी उसी फ़ाइल का नाम लेकर निकलवाते थे और मातहतों को फ़हमाइश और तम्बीह कर दिया करते थे और कभी २ रहमदिली के साथ सज़ा भी दे देते थे।

५१—सन् १८६८ ई० में हुज़ूर महाराज साहब बओहद: इन्सपेक्टर ज़ायद यानी परसनल ऐसिस्टन्ट पोस्ट मास्टर जनरल मुमताज़‡ हुए और उस वक़्त में बहुत से मुक़द्दमात तग़ल्लुब व चोरी पारसल वग़ैरह के कि जिनका पता बावजूद मज़ीद§ तहक़ीक़ात अफ़्-

*सलाह। †जाँच। ‡मुक़र्रर। §गहिरी।

सरान के नहीं चला था हुज़ूर महाराज साहब के सुपुर्द किये गये और हुज़ूर महाराज साहब ने उनकी इस तरह तहक़ीक़ात की कि जिस से माल बरामद* हो गया और असली मुल्ज़िमान गिरिफ़्तार हो कर सज़ायाब हो गये।

५२—जब सन् १८६८ ई० में मेरी हमशीरः कलाँ की शादी बाबू राज नरायन साहब के साथ होने वाली थी बिरादरी वालों ने सलाह की कि कोई शादी में शामिल न हों मौज से उन्हीं अइयाम में हुज़ूर महाराज साहब क़रीब दो माह के वास्ते इन्चार्ज पोस्ट मास्टर जनरल सूबः मुमालिक मग़रबी व शुमाली के आगरे में हो गये चूँकि बहुत से बिरादरी वाले उस दफ़्तर व डाकख़ानाजात में मुलाज़िम थे ख़ुद हुज़ूर महाराज साहब की ख़िद-मत में आये और अर्ज़ की कि कोई ख़िदमत इस शादी में उनसे ली जावे इस सबब से और भी सब बिरादरी वाले शामिल हुए और बिरादरी का हुजूम शादी में बहुत अच्छा हो गया।

५३—एक बहुत बड़ा मुक़द्दमा हुन्डियों के चोरी जाने का ज़ेर तहक़ीक़ात था और दो साल से बराबर हुक्काम डाकख़ाना और पुलिस उस की तहक़ीक़ात

* निकल आया।

कर रहे थे मगर कोई सुराग़ उसका नहीं चला। आख़िर यह तहक़ीक़ात हुज़ूर महाराज साहब के सुपुर्द की गई कि वह उसका पता लगावें। हुज़ूर महाराज साहब ने इंदौर व नीमच मौक़े पर तशरीफ़ ले जा कर इस तौर से तहक़ीक़ात की कि मुल्ज़िमों का पता कालपी की सराय में मिल गया और वहीं उनको बज़रिये तार के गिरिफ़्तार करा लिया और उन पर मुक़द्दमा साबित हो गया और माल मसरूक़ा* का भी पता लग गया और मुल्ज़िमान सज़ायाब हुए।

५४—हुज़ूर महाराज साहब को बतारीख़ ३१ अगस्त सन् १८७१ ई० ख़िताब राय बहादुर का बजिल्दूय† ख़िदमात पसंदीदः के पेशगाह‡ गवर्मेन्ट हिन्द से अता हुआ।

५५—एक मर्तबः हुज़ूर महाराज साहब इलाहाबाद से वास्ते तहक़ीक़ात के मुक़ाम औरई तशरीफ़ ले गये थे, बाद इख़्तिताम§ काम जबकि इलाहाबाद वापिस जाने को थे कि यकायक इरादः छः बजे शाम के यह हुआ कि दूसरे रोज़ स्वामी जी महाराज के आगरे में जाकर दर्शन कर के इलाहाबाद वापिस जावें उस वक़्त लाला शम्भूनाथ सुपरिन्टेन्डेन्ट डाकख़ान-

*चोरी का माल। †एवज़। ‡दरबार। §पूरा होने।

जात झाँसी डिविज़न भी वहाँ मौजूद थे उन्हों ने कहाकि फफूँद रेलवे स्टेशन यहाँ से साठ सत्तर मील के फ़ासिले पर है और आठ वजे सुवह को रेल गाड़ी फफूँद आती है किसी सूरत से आप नहीं पहुंच सक्ते हैं हुज़ूर महाराज साहव ने अपने मुलाज़िम भवानी को हुक्म दिया कि फ़ौरन कहारों का इन्तिज़ाम करो। मुताबिक़ हुक्म के इन्तिज़ाम हो गया वरवक्त सवार होने के कहारान पालकी से फ़रमाया कि अगर ज़ालैान एक घंटे में पहुंचादोगे तो हम तुम को इनाम देंगे उन्हों ने हाथ जोड़ कर अर्ज़ किया कि अगर आप ताक़त वख़शेंगे तो ऐसा हो सक्ता है वर्नः हम एक घंटे में नहीं पहुंचा सक्ते हैं। ठीक सात वजे शाम को घड़ी देख कर सवार हुए और आठ वजे रात को जालैान में आगये साढ़े आठ वजे जालैान से सवार हुए। रास्ते में वड़े ज़ोर से आँधी आई और पानी भी ज़ोर से वरसा कहारों ने अर्ज़ किया क़ि आप ऐसी दया करें कि पानी आँधी बंद हो जावे क्योंकि ऐसी हालत में हम चल नहीं सक्ते हुज़ूर महाराज साहव ने फ़रमाया कि अगर राधास्वामी दयाल की मौज होगी तो पानी बंद हो जावेगा वाद पंद्रह मिनिट के पानी और आँधी बंद हो गये। रास्ते में एक नदी पड़ी और उस में घवाई पर उतरते थे हुज़ूर महाराज साहव

ने भवानी को हुक्म दिया कि पेश्तर पालकी को मय कुल असबाब व कहारों के उतरवा दो हम और तुम दूसरे चक्कर में चलेंगे। पालकी में हुक्का और मनीबैग कि जिस में नोट और रुपये थे रक्खा हुआ था बीच नदी में जब घन्नाई पहुंची तो पालकी उलट गई और कहारों को भी ख़ौफ़ डूबने का हुआ इस पार से हुज़ूर महाराज साहब मुसकराये और ब आवाज़ बुलंद फ़रमाया कि घबराओ मत कोई डूबेगा नहीं पालकी ज़रा सा सहारा देने से सीधी हो गई और कहार भी डूबने से बच गये और पार उतर गये। बाद इस के हुज़ूर महाराज साहब भी घन्नाई पर सवार होकर मये मुलाज़िम मज़कूर के उस पार आगये तो कहारों ने शिकायत की कि हमारे कपड़े सब बह गये और भवानी ने अर्ज़ किया कि हुक्का और मनी बैग भी बह गया हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि पानी में किनारे पर तलाश करो इस पर घुटने २ पानी में तलाश करने से मनी बैग हुक्का व कपड़े सब मिल गये और नोट पानी से भीगा नहीं। इस में तीन घंटे का अर्सा लग गया भवानी के दरियाफ़्त करने पर हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि मौज ऐसी ही थी फिर हुज़ूर महाराज साहब ने हुक्म दिया कि अब जल्दी चलो। वहाँ से रवाने होकर औरइया में आये तो कहारों ने अर्ज़

किया कि हुज़ूर की इजाज़त हो तो ज़रा दम ले लें बहुत सफ़र किया है उस वक़्त सुबह के सात बजे थे और फफूँद रेलवे स्टेशन वहाँ से १२ मील बाक़ी रह गया था। मुला-ज़िम मज़कूर ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर शायद न पहुंच सकेँ फ़रमाया कि मौज होगी तो पहुंचही जावेँगे औरइयां से रवाने होकर स्टेशन फफूँद पर पहुंचे और रेल गाड़ी उसीं वक़्त स्टेशन पर आई कहारान पालकी को माकूल इनाम देकर खुश कर दिया और फ़ौरन रेल में सवार होकर आगरे तशरीफ़ ले आये।

५६—एक मर्तबः हुज़ूर महाराज साहब गोरखपुर से बिनाबर दौरः ग़ाज़ीपुर जाने को गाड़ी में सवार हुए कोच बक्स पर कोच मैन और ठेकेदार बैठे थे और छत्त पर भवानी मुलाज़िम और एक चपरासी अर्दली बैठा था और उसी पर एक बक्स डाक का चार पाँच मन का रक्खा हुआ था रास्ते में एक पुल नदी का पड़ा कि जिस के घाटे पर उतरते वक़्त जबकि गाड़ी ज़ोर से जा रही थी बम टूट गई और गाड़ी लौट गई मगर घोड़े चुप खड़े रहे और दंगा नहीं किया मुलाज़िम मज़कूर और चपरासी दूर जाकर गिरे भवानी दौड़ कर आया उस को देख कर हुज़ूर महाराज साहब हँस दिये और गाड़ी से बाहर तशरीफ़

ले आये फिर गाड़ी लोगोँ ने सीधी करदी मुलाज़िमान से दरियाफ़्त किया कि तुम लोगोँ के चोट तो नहीँ लगी उन्होँ ने जवाब दिया कि नहीँ फिर ठेकेदार ने अर्ज़ किया कि बम टूट गई है इस पर फ़रमाया कि इधर उधर कोई झोपड़ी हो तो बाँस ले आओ तलाश करने से क़रीबही एक झोपड़ी मिल गई उस में एक मोटा बाँस लगा हुआ था उस को ले आये और बजाय बम के उस को बाँध दिया और ग़ाज़ीपुर आराम से पहुंच गये।

५७—एक दफ़े का ज़िकर है कि हुज़ूर स्वामी जी महाराज दिशा जाने के वास्ते तैयार थे उस वक़्त दो तीन साधू और सतसंगिन और हुज़ूर महाराज साहब मौजूद थे हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि कौन बहुत जलदी हुक़्क़ा भर कर पिलाता है यह सुनते ही हुज़ूर महाराज साहब हुक़्के पर से चिलम उतार कर और दूसरा साधू एक चिलम जो नज़दीक रक्खी हुई थी ले कर दौड़े साधू ज़ीनः के रास्ते से उतरा और हुज़ूर महाराज साहब चिलम लिये हुए कमरे के छज्जे पर आकर नीचे सहन में जो तीन चार गज़ नीचा है कूद पड़े और जब तक वह साधू ज़ीनः से उतर कर बाहर गया हुज़ूर

महाराज साहब ने बाहर एक सुनार की दूकान से कुछ उस को देकर आग बहम* पहुंचाई और चिलम भर कर बहुत जलद हुक्के पर लाकर रखदी।

५८—एक मर्तबः हुज़ूर महाराज साहब झाँसी से ग्वालियर बसवारी पालकी दौरः में तशरीफ़ ले गये शिद्दत† धूप की हुई और रास्ता ऐसा था कि दरख़्त वग़ैरह नहीं थे और कुंवाँ पाँच २ कोस के फ़ासले पर था कुछ दूर चल कर पालकी के कहार शिद्दत धूप से घबरा गये और प्यास भी लगी कहने लगे कि अब हम नहीं चल सक्ते और पालकी भी मिसल आतशकदः‡ के गरम हो गई हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि कहीं दरख़्त के नीचे ठहर जाओ क़हारान ने अर्ज़ किया कि दरख़्त दूर तक नज़र नहीं आता और दरियाफ़्त करने पर मालूम हुआ कि कुँवाँ भी कई कोस के फ़ासिले पर है कहारान को बड़ी परेशानी हुई इतने में मौज से यकायक ठंढी हवा चलने लगी और अबर§ हो गया। कहारों ने अर्ज़ किया कि अब ठहरने की ज़रूरत नहीं है मंज़िल पर पहुंच कर ही ठहरेंगे।

५९—एक मर्तबः हुज़ूर महाराज साहब झाँसी दौरः

*लेली। † तेज़ी। ‡ भाड़। § बादल।

पर तशरीफ़ ले गये थे और जो रुपया पास था वह वहाँ इत्तिफ़ाक़िय: सब ख़र्च होगया और झाँसी से आगे जाने को तैयार थे मगर उस वक़्त रुपया पास न था अगर्चे रुपया वहाँ के पोस्ट मास्टर से मिल सक्ता था मगर आप ने उन से लेना नहीँ चाहा इसी ख़याल में टहल रहे थे कि उसी वक़्त बीस पच्चीस सिक्ख सिपाही फ़ौज के जो सतसंगी थे हुज़ूर महाराज साहब से मिलने के वास्ते आये और हर एक ने एक २ दो २ रुपये हुज़ूर स्वामी जी महाराज की भेँट के वास्ते पेश किये इस तौर से तीस पैंतीस रुपये हुज़ूर महाराज साहब के पास आगये उस से ख़र्च सफ़र का चल गया और आगरे तशरीफ़ लाने पर उन सब का नज़रान: मय अपनी तरफ़ से शुकरान: के भेँट कर दिया।

६०–एक मर्तब: हुज़ूर महाराज साहब हुज़ूर स्वामी जी महाराज के सतसंग से नीची निगाह किये हुए हस्ब* मामूल आरहे थे सामने से एक साँड़ आता था आप ने उस को नहीँ देखा मगर जब क़रीब आये वह ख़ुद ही हट कर एक किनारे हो गया।

६१–हुज़ूर महाराज साहब हुज़ूर स्वामी जी महाराज

*मुवाफ़िक़।

के सतसंग से तीन चार बजे रात के वापिस तशरीफ़ लाया करते थे ऐयाम बरसात में अक्सर ऐसा मौक़ा होता था कि बादल उमँड़े रहते थे और गरजते रहते थे मगर जब हुज़ूर महाराज साहब मकान पर तशरीफ़ ला कर आराम फ़रमाते थे उस वक़्त पानी बरसता था एक दो मर्तबः ऐसा भी हुआ कि क़रीब खतम होने सतसंग के पानी ज़ोर से बरसा और दस पाँच मिनिट पानी बरस कर बंद हो गया और इसी अर्सः में नाला भी जो मकान के रास्ते में पड़ता था चढ़ा और हुज़ूर महाराज साहब के तशरीफ़ लाने तक नाला उतर कर रास्ता साफ़ हो गया।

६२—अपरैल सन् १८७५ ई० को वइज़ाफ़ः* सौ रुपया बतनख़्वाह छः सौ रुपया माहवार हुज़ूर महाराज साहब बओहदः चीफ़ इन्सपेक्टर अवध मुमताज़† हुए राय बिन्द्राबन साहब बिरादर‡ खुर्द हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब जो उस वक़्त पोस्टमास्टर लखनऊ के थे हुज़ूर महाराज साहब के पास आते रहते थे एक रोज़ हुज़ूर महाराज साहब से कहा कि क़हत§ का बड़ा ज़ोर हो रहा है बारिश नहीं होती हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि आप और मैं हुज़ूर

*तरक़्क़ी। †मुक़र्रर। ‡छोटे भाई। §अकाल।

राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रार्थना करूँ उस के थोड़ी देर बाद चारों तरफ़ से घटा छा गई और चार घंटे तक बड़े ज़ोर से बारिश हुई और क़हत रफ़ा हो गया।

६३–हुज़ूर महाराज साहब बवजह दूरी हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब चीफ़ इन्सपेक्टरी लखनऊ को नापसंद फ़रमाते थे इस लिये जूलाई सन् १८७६ ई० में कोशिश फ़रमा कर व कमी तन्ख़्वाह सौ रुपया माहवार ओहदः सुपरिन्टेन्डेन्टी आगरा डिविज़न पर वापिस तशरीफ़ ले आये और यही बस न था बल्कि ओहदः कन्ट्रोलरी कुल्ल डाकख़ानजात हिंदसे बमुक़ाम कलकत्ता जिस का मुशाहिरः* छः सौ रुपया से एक हज़ार रुपया माहवार था इन्कार कर दिया और अफ़्सरान से साफ़ कह दिया कि गुरू महाराज को छोड़ कर परदेस की नौकरी नहीं चाहता हूं।

६४–मेरे छोटे भाई द्वारका प्रसाद का बउमर आठ साल सन् १८७७ ई० में इन्तिक़ाल† हुआ बाद कार्रवाई मामूली तजहीज़ व तकफ़ीन‡ के हुज़ूर महाराज साहब मगन व मसरूर हालत में शाम के वक़्त हुज़ूर स्वामी जी महाराज की ख़िदमत में तशरीफ़ ले गये उस वक़्त

*तनख़्वाह। †देह त्याग। ‡दाह कर्म।

हुज़ूर स्वामी जी महाराज को उदास देख कर सबब दरियाफ़्त किया तो उन्हों ने फ़रमाया कि तुम्हारे लड़के के इन्तिक़ाल की वजह से उदासी है हुज़ूर महाराज साहब ने वजवाब उस के अर्ज़ किया कि मुझको कुछ ख़याल व रंज उस का नहीं है। यह सुन कर हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि अगर तुम को कुछ ख़याल व रंज नहीं है तो मुझ को भी कुछ नहीं है तुम्हारी वजह से उदासी थी और चेहरे से उदासी दूर हो गई।

साहबज़ाद: मौसूफ़ की मुफ़ारक़त* का उनकी माता जी साहिब: व दादीजी साहिब: व हम्शीर:† साहब:हाय को कमाल‡ रंज था उसी हालत रंज में बड़ी हम्शीर: साहब: की एक हालत समाधी की तरह हो गई और उस हालत में साहबज़ाद: मौसूफ़ ने नूरानी§ सूरत से बसवारी हाथी दर्शन देकर कहा कि मुझ को तुम्हारे रंज से नीचे उतरना पड़ा है जिस्से मुझको तकलीफ़ हुई मैं शब्दगुरू की गोद में खेल रहा हूं—उस वक्त से सब को तसकीन§ हो गई और फिर कभी सूरत रंज की पैदा न हुई और न ख़याल हुआ।

और शब्द गुरू किस को कहते हैं यह उस वक्त तक

*जुदाई। †बहिनों। ‡बहुत। ‡ प्रकाशवान। § ढारस।

हम्शीरः साहबः कलाँ को मालूम भी न था और हुज़ूर महाराज साहब से दरियाफ़्त किया तब फ़रमाया कि राधास्वामी दयाल ही शब्द गुरू हैं।

६५—सन् १८७६ ई० में हुज़ूर महाराज साहब ने बमूजिब इरशाद* स्वामी जी महाराज के एक क़िता ज़मीन पसंदीदः† को अपनी ज़ाती आमदनी से ख़रीद किया और उस में बाग़ लगाया और मकानात तामीर करा के हुज़ूर स्वामी जी महाराज की भेंट कर दिया जो राधास्वामी बाग़ के नाम से मशहूर है और जिस में कि अब समाध हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब की मौजूद है।

६६—एक मर्तबः हुज़ूर महाराज साहब महाबन से बिन्द्राबन बतक़रीब दौरः गाड़ी में सवार होकर तशरीफ़ लेजा रहे थे रास्ते में एक पुल जमुना का था घोड़े चौंके और दरिया की तरफ़ को चले क़रीब था कि गाड़ी दरिया में गिर पड़े मगर मौज से पहिया गाड़ी का पुल की एक खूँटी में अटक गया जिस की वजह से गाड़ी गिरने से रुक गई कुल सामान गाड़ी का नीचे गिर पड़ा मगर हुज़ूर महाराज साहब बदस्तूर गाड़ी में बैठे रहे फ़ौरन मल्लाह वग़ैरह जो पुल

*हुक्म। † पसंद की हुई।

पर मौजूद थे दौड़े गाड़ी और घोड़ों को सम्हाला और हुज़ूर महाराज साहब को गाड़ी खोल कर उतार लिया हुज़ूर महाराज साहब के मुतलक़ चोट नहीं आई दूसरी तरफ़ से तहसीलदार महाबन जो हुज़ूर महाराज साहब को जानते थे अपनी गाड़ी में आरहे थे और देख रहे थे कि गाड़ी पानी में गिरा चाहती है हुज़ूर महाराज साहब के पास आये और अपनी गाड़ी में सवार कराकर ले गये और रास्ते में उन के साथ परमार्थी गुफ़तगू* होती रही।

६७—अर्सः दो बरस से हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब की मौज चोला छोड़ने की थी और इस वास्ते बीमारी भी पैदा करली कि अच्छे २ हकीमों और डाक्टरों की अक़ल हैरान थी मगर जिन २ से कुछ सेवा लेनी मंज़ूर थी उन का इलाज जारी रक्खा और हुज़ूर महाराज साहब की अर्ज़ से जो वक़्तन् फ़वक़्तन् होती रहती थी चोला त्याग नहीं फ़रमाया आख़िरकार हुज़ूर महाराज साहब से हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब ने फ़रमाया कि अब चोला बहुत जरजरा हो गया है और हम इस चोले में अब ज्यादः ठहरना पसंद नहीं करते हैं तुम्हारी अर्ज़ से इतने अर्सः तक

* बात चीत।

ठहरे और तुम्हारी अर्ज़ को नामंजूर करना हम को गवारा नहीं है इस वास्ते अब तुम ऐसी अर्ज़ मत करना और उस के दस पन्द्रः रोज़ बाद ही असाढ़ वदी १ पड़वा सम्वत १९३५ बिक्रमी मुताबिक़ १५ जून सन् १८७८ ई० को क़रीब दो बजे दोपहर के हुज़ूर महाराज साहब और और सतसंगी और सतसंगिनों से आरती करा के हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने चोला छोड़ दिया और राधास्वामी धाम को तशरीफ़ ले गये। और हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब की समाध राधास्वामी बाग़ में तामीर कराई और उसी जगह सालानः भंडारा असाढ़ वदी पड़वा को करना जारी फ़रमाया।

६८—क़रीब बीस बरस के हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामी जी महाराज का सतसंगशबानः रोज़* ८ घंटे से १८ घंटे तक किया और सेवा तन मन धन की ऐसी की कि इन्सानी ताक़त से बाहर है।

६९—सन् १८७९ ई० में हुज़ूर महाराज साहब की माता जी साहिबः ने मगन व मसरूर हालत में धीरज और शान्ती के साथ चोला छोड़ा और परम धाम को सिधारीं। चूँकि हुज़ूर महाराज साहब ने जब से

* रात दिन।

हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब की सेवा में जाना शुरू किया बिरादरी में जाना और खाना पीना बंद कर दिया था इस मौक़े पर बिरादरी वालों ने सलाह की कि कोई न जावे देखें कौन हुज़ूर महाराज साहब की माता जी महारानी के चोले को उठाता है। हुज़ूर महाराज साहब ने हस्ब क़ायदः व रवाज कुल बिरादरी में और राधास्वामी बाग़ में इत्तिला करादी और राधास्वामी बाग़ से सब साधू और चंद सतसंगी शहर के फ़ौरन चले आये उन को आते देख कर बिरादरी वाले शरमाये और खुद ही आगये।

७०—हुज़ूर महाराज साहब ने बाद चोला छोड़ने हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब के सतसंग बिरादराना* बर्ताव के साथ शुरू में क़रीब तीन साल तक रोज़ानः पन्नी गली और हफ़्तःवार राधास्वामी बाग़ में जारी रक्खा और तमाम इख़राजात† राधास्वामी बाग़ व राधाबाग़ व ख़र्चः ख़ुरोनोश‡ साधुवान बदस्तूर अपनी तनख़्वाह से जैसा कि हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब के सामने से चला आता था जारी रक्खा और पिन्शन लेने पर भी उस में

*भाई चारा। †ख़र्च। ‡खान पान।

किसी क़िसम की कमी नहीं की और अपने बचन पुरअसर* से ऐसे नाज़ुक वक़्त में जब कि आम तौर पर सेवकान को रंज मुफ़ारक़त† ज़ाहिरी स्वरूप हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब का था सब को धीरज और दिलासा बख़्शते रहे और किसी को बर्ताव गुरू भाव का अपने साथ नहीं करने दिया और जनाबः राधाजी साहिबः व छोटी माता जी साहिबः की पूजा और सेवा खुद की और सब से कराई और कुल ख़ानदान हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहिब की ताज़ीम‡ और ख़ातिरदारी बदस्तूर जारी रक्खी और बराबर अख़ीर वक़्त अपना चोला क़ायम रखने तक इन कार्रवाइयों को निहायत खुशी और उमंग के साथ खुद करते रहे और और सब को भी ऐसी ही हिदायत फ़रमाते रहे, और जैसा बाना हुज़ूर महाराज साहब ने शुरू से धारन किया उस को पूरे तौर से निबाह कर दिखला दिया बल्कि उस में तरक़्क़ी ही होती रही और इन मसलों§ को सच्चा कर दिखाया।

आग आँच सहना सुगम सुगम खड्ग की धार।
नेह निबाहन एक रस महा कठिन ब्योहार॥
जैसी लौ पहिले लगी तैसी निबहे ओर‖।
अपनी देह की को गिने तारे पुर्ष करोड़॥

---

*फल दायक। †जुदाई। ‡आदर सनमान। §कहनावत। ‖अख़ीर तक।

७१—चूँकि हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब की मौजूदगी में हुज़ूर महाराज साहब ने सेवा व सतसंग हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब को मुक़द्दम* समझ कर बतरक़्क़ी तनख़्वाह व ओहदः आगरे से बाहर जाने को इनकार फ़रमाया था और अफ़्सरान ने बपास ख़ातिर† हुज़ूर महाराज साहब के उस इन्कार को मंजूर कर लिया था मगर बाद निज धाम को तशरीफ़ ले जाने हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब के अफ़्सरान ने कहा चूँकि अब आप के गुरू साहब ने चोला त्याग कर दिया है अब आगरे से किसी जगह माक़ूल‡ पर बाहर जाने से इन्कार करने की कोई वजह नहीं है और जो जगह माक़ूल अब आइन्दः आप को दीजावे उस्से इन्कार न फ़रमाइयेगा चुनाँचि डाइरेक्टर जनरल साहब ने हुज़ूर महाराज साहब को पोस्ट मास्टर जनरल मुमालिक मग़रबी व शुमाली जिस का सदर दफ़्तर उस वक़्त इलाहाबाद था २८ अपरैल सन् १८८१ ई० को मुक़र्रर फ़रमाया और हुज़ूर महाराज साहब ने चार्ज ओहदः पोस्ट मास्टर जनरल का इलाहाबाद में ले लिया।

७२—सन् १८८१ ई० से सन् १८८४ ई० तक हुज़ूर महा-

*सब से बढ़ कर। †ख़ातिर से। ‡बढ़िया ओहदा।

राज साहब का बअहिद* पोस्ट मास्टर जनरल ज़्यादा तर क़याम इलाहाबाद में रहता था और वहाँ और नीज़ दौरः में जहाँ तशरीफ़ ले जाते थे सतसंग और बचन बराबर फ़रमाया करते थे और आगरे में भी अक्सर तशरीफ़ लाते थे तब सतसंग और बचन फ़रमाया करते थे। सन् १८८४ ई० से बवजह ज़्यादः क़याम होने आगरे में सतसंग बढ़ने लगा और सेवा भी बाज़ २ सतसंगी और सतसंगिनों की हठ से मंज़ूर फ़रमाना शुरू किया।

७३—जनाबः माता जी साहिबः निहायत ख़ुश इख़लाक़† व प्रेमिन व रहीम‡ थीं और हुज़ूर महाराज साहब की भक्ती व सेवा तहेदिल व जान से जैसा कि सच्ची पतिव्रता का अंग होता है शुरू से बराबर करती रहीं और कुल सतसंगिनों व अज़ीज़ व अक़ारिब§ पर दया बाहरी व अंतरी फ़रमाती थीं और भक्ती का उपदेश और महिमा सुना कर भक्ती की तरफ़ तवज्जह दिलाती थीं और हर तरह से जो भक्ती करना चाहते थे उन को मदद और सहारा देती थीं। जनाबः मुअज़्ज़मः‖ मुकर्रमः ममदूहः¶ ने २६ फ़रवरी सन् १८८५ ई० को मसरूर व

* वक़्त। † मिलनसार। ‡ दयालू। § रिश्तेदार। ‖ बुज़ुर्ग। ¶ जिनकी तारीफ़ ऊपर हो चुकी है।

8

मगन हालत में धीरज और शान्ती के साथ चोला त्याग कर दिया और परम धाम को तशरीफ़ ले गईं और इससे एक घंटा पेश्तर जब साधू और सतसंगियान ने प्रार्थना की कि हम को दर्शन जनाब: माता जी साहिब: के करा दिये जायँ तो हुज़ूर महाराज साहब ने खुद ज़नान: मकान में तशरीफ़ ले जाकर माता जी साहिब: के दर्शन सब को बुला कर करा दिये और इस बात को कि माता जी साहिब: माह फ़रवरी में परम धाम को तशरीफ़ ले जावेंगी आठ माह पेश्तर हुज़ूर महाराज साहब ने एक सतसंगी से फ़रमा दिया था।

७४–हुज़ूर महाराज साहब के अहद* पोस्ट मास्टर जनरल में एक पंजाबी सतसंगी जो बमुक़ाम इलाहाबाद रेलवे में मुलाज़िम† था एक मर्तब: भजन में ऐसा महव‡ हुआ कि उस को अपने काम पर भी जाने का खयाल नहीं रहा जब भजन से उठा तो मालूम हुआ कि बहुत ज़ियाद: देर हो गई है घबरा कर फ़ौरन अपने काम पर गया और वहाँ क्लर्कों से कहा कि आज मुझ को देर हो गई मेरा काम किस तरह हुआ। उन्हों ने जवाब दिया कि तुम खुद

* वक़्त। † नौकर। ‡ बेख़बर, बेसुध।

अपना काम कर रहे थे और तुम्हारे दस्तख़त भी मौजूद हैं यह सुन कर और अपने दस्तख़त देख कर बहुत ही मुतहैयर* हुआ। जब शाम को हुज़ूर महाराज साहब की ख़िदमत में दर्शनों के वास्ते हाज़िर हुआ और इज़हार† हाल करके शुक्रिय: अदा किया तब हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि दया से तुम्हारी रक्षा हो गई आइंदा को एहतियात‡ रखना।

७५—हुज़ूर महाराज साहब से चंद लईक़§ और आला‖ दरजे के यूरोपियन हुक्काम¶ और अफ़सरान से भी परमार्थी गुफ़्तगू हुई और जब आपने राधास्वामी मत का वर्णन पूरे तौर से अँगरेज़ी ज़बान में फ़रमाया और उस की बुज़ुर्गी हर तरह से ऐसे २ उम्द: वजूहात मन्तक़ी और फलासफ़: और साइन्स के दे कर साबित की कि वे दंग** हो गये और उन वजूहात†† और उनके नतीजों के काटने की कोई दलील पेश न कर सके बल्कि एक मर्तब: एक अफ़सर आला‡‡ से जो राधास्वामी मत का बयान

---

* अचरज में। † हाल बयान करना। ‡ होशियारी व सम्हाल। § विद्यावान। ‖ बड़े। ¶ अँगरेज़ हाकिमों। ** अचरज में। †† बातों। ‡‡ बड़े हाकिम।

हुज़ूर महाराज साहब ने क़रीब डेढ़ घंटे के फ़रमाया तो उस वक़्त उस अफ़सर आला की ऐसी हालत हो गई कि वह निहायत ताज़ीम व अदब के साथ खड़ा हो कर अर्ज़ करने लगा कि इस वक़्त कुल मालिक आप इस कमरः में मौजूद हैं और आपही गुफ़्तगू उससे कर रहा है तब हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि बेशक कुल मालिक राधास्वामी दयाल हर जगह हाज़िर और नाज़िर हैं और इस जगह भी मौजूद हैं मगर मैं तो उनका एक सेवक हूं उस वक़्त से वह अफ़सर आला दिल से हुज़ूर महाराज साहब की ताज़ीम और अदब और निहायत उन्सियत* करने लगा और हुज़ूर महाराज साहब की मेहर व अंतरी दया से फ़ैज़याब हुआ। आम तौर से कुल हुक्काम में हुज़ूर महाराज साहब की सच्ची और पूरी भक्ती करने और एक नये आला दरजे के मज़हब के मूजिद† होने का शुहरा‡ था और जिससे एक दफ़े मुलाक़ात हो जाती और कुछ बात चीत भी होती वह बड़ी ताज़ीम और ख़ातिर हुज़ूर महाराज साहब की करता था।

७८—हुज़ूर महाराज साहब ने जून सन् १८८६ ई० में वास्ते तरक़्क़ी काम परमार्थ के डाइरेक्टर जनरल साहब

*मुहब्बत। †आचारज। ‡महिमा।

से इरादः पिन्शन लेने का ज़ाहिर किया साहब मौसूफ़ ने बज़रीये तहरीर[*] के हुज़ूर महाराज साहब से दरियाफ़्त किया कि अगर कोई वजह या हरकत[†] किसी हुक्काम की नापसंदीदः[‡] हुई हो तो फ़रमाइये कि उस का इन्तिज़ाम माकूल[§] कर दिया जावे और अभी कुछ अर्सः और काम कीजिये और इरादः पिन्शन का मुल्तवी[||] कीजिये इस पर छः माह[¶] तक और हुज़ूर महाराज साहब ने काम किया और फिर दरख़ास्त पिन्शन भेज दी. फिर भी डाइरेक्टर जनरल साहब ने तहरीर भी किया और एक अपने दफ़्तर के अफ़सर को जो हुज़ूर महाराज साहब के सेवकों में से था ख़ास तौर पर हुज़ूर महाराज साहब के पास काग़ज़ात पिन्शन के वापिस करके भेजा और कहा कि वह साहब ममदूह की जानिब से और नीज़[**] अपनी तरफ़ से अर्ज़ करे कि अभी हुज़ूर महाराज साहब दो बरस तक जब तक कि साहब ममदूह भी ठहरना चाहते हैं पिन्शन न लें मगर हुज़ूर महाराज साहब ने जीवों के उद्धार के काम को मुक़द्दम जान कर इनकार किया और फ़रमाया कि १२ फ़रवरी से हम काम नहीं करेंगे और काग़ज़ात पिन्शन वापिस भेज दिये तब डाइरेक्टर

[*] चिट्ठी । [†] कार्रवाई । [‡] बेजा । [§] पूरा बन्दोबस्त । [||] रोक दीजिये । [¶] महीना । [**] भी ।

ज़नरल साहब ने चार हज़ार रुपया पिन्शन और एक हज़ार रुपया बसिलः* ख़ैरख़्वाही ग़दर जुम्लः पाँच हज़ार रुपयाँ सालाना की पिन्शन सिक्रेटरी आफ़ स्टेट फ़ार इन्डिया के यहाँ से बज़रीये जनाब नव्वाब गवर्नर जनरल साहब बहादुर हिन्द मंज़ूर करा दी और हुज़ूर महाराज साहब ने क़रीब चालीस साल मुलाज़मत सरकारी करके ११ फ़रवरी सन् १८८७ ई० को चार्ज अपने ओहदः का दे दिया।

७७—हुज़ूर महाराज साहब ने बाद लेने पिन्शन के जब सतसंगियों की अफ़ज़ूनी† हुई तब बमुक़ाम आगरा दायरह दौलत‡ परही शबोरोज़§ का सतसंग आम जारी फ़रमा दिया और हर क़िसम की सेवा भी मंज़ूर फ़रमाने लगे।

७८—जिस वक्त से कि हुज़ूर महाराज साहब ने पिन्शन ली गो क़याम आगरे ही में रहा मगर दूर दूर से संस्कारी जीवों को बाहरी और अंतरी सहारा और दया फ़रमा कर सरन में लेते रहे और ज़रासी तवज्जह और दीनता जीवों की आनेही से दया और मेहर से प्रेम दान अपनी तरफ़ से बख़शिश फ़रमाते थे और बानी और बचन ऐसे मुवस्सर‖ थे कि जिस खोजी और मुतलाशी

*एवज़। †बढ़ोतरी। ‡अपने मकान। §रात दिन। ‖असर वाले।

ने एक दफ़े भी सुने गिरवीदः* होगया और जीवोँ के ऊपर संसकार का बीजा बराबर पड़ता चला गया—इधर तो बानी और बचन का यह असर था कि उन को सुन कर जीवोँ के हिरदे में किसी क़दर चाह परमार्थ की पैदा होही जाती थी और उधर जब ज़रा भी चाह और दीनता के साथ जिस ने और जहाँ तवज्जह या ख़याल हुज़ूर महाराज साहब की तरफ़ किया वहीं बिला लिहाज़ इस बात के कि उसने कभी हुज़ूर महाराज साहब के या उन की तसवीर के दर्शन किये हैं या नहीं अंतरी दर्शन देकर और बचन सुना कर मगन और मसरूर फ़रमा दिया करते थे बल्कि जो संशय दिल में पैदा होते बिला उनके इज़हार† करने के उन का जवाब भी शाफ़ी‡ चाहे अंतर में या बानी व बचन से या किसी सतसंगी के द्वारे अता§ फ़रमा देते थे और जिस वक़्त सतसंग में या आरती में सतसंगी, सतसंगिन और साधू सनमुख बैठ कर दर्शन करते थे या बानी व बचन सुनते थे इस क़दर अंदरूनी कशिश|| फ़रमाते थे कि ऊँचे स्थान पर उन को सुरत को खीँच कर गहिरा रस दर्शनों और बचनों

---

*आशिक़। †बग़ैर उनके ज़ाहिर करने के। ‡दिल भरने वाला व पूरा। §बख़्शिश। ||अंतरी खैंच।

का बख़्शते थे कि उस को पाकर जीव अक्सर ऐसे प्रेम में मसरूर और सरशार* हो जाते थे कि अपनी देह और ख़ानःदारी† व नौकरी के कारोबार का होश भी नहीं रहता था मगर ऐसी हालत में हुजूर महाराज साहब ख़ास तौर से रक्षा और सहायता फ़रमाते थे कि उन के देह और दुनियाँ के कारोबार में क़ोई हर्ज वाक़े‡ नहीं होता था और वे तन मन व धन निहायत मगनता के साथ हुजूर महाराज साहब के चरनों पर न्योछावर करते थे बल्कि यह ख़्वाहिश पैदा होजाती थी कि अपनी सुरत को हुजूर महाराज साहब पर कुरबान§ करदें और हुजूर महाराज साहब के दर्शनों और सतसंग को छोड़ कर जाना निहायत नागवार‖ मालूम होता था और यह असर बाद में भी किसी क़दर कमी के साथ कुछ अर्सः तक जब कि वह अपने मकानों को चले जाते थे क़ायम रहता था और जब यह फीका पड़ता था तब तड़प दर्शनों की ज़्यादः पैदा होकर चरनों में दौड़े आते थे और ज़्यादा प्रेम की बख़्शिश हासिल करते थे ऐसी दया का जोश उमड़ा हुआ था कि जिस को चरनों में लगाया उस के परमार्थ और स्वारथ दोनों सँवार दिये और हर

*गृहस्थी। †सर बोर। ‡पैदा। §न्योछावर। ‖बहुत बुरा।

वक़्त उस को अपने सिर पर हुज़ूर महाराज साहब की रक्षा और सहायता का पंजा नज़र आता था और आपस में भी इस क़दर मुहब्बत और हम्दर्दी* सतसंगियों में थी जैसी कि हक़ीकी भाई और बहिनों में भी शाज़ोनादिर† होती है और इस क़दर परचे अंदरूनी‡ दया और मेहर के आम तौर पर बख़्शिश फ़रमाये कि कोई भी सतसंगी और सत-संगिन और साधू ऐसा न होगा कि जो महरूम§ रहा हो बल्कि अक्सर को बारहा‖ ऐसे परचे मिले हैं और अब तक मिल रहे हैं अगर उन का ज़िकर किया जावे तो एक दफ़्तर¶ हो जावे मगर बावजूद इस क़दर आम बख़्शिश के यह हुक्म और बरतावा था कि कोई अपने अंतरी परचे को दूसरे पर इज़हार** न करे और न उनको सुना कर किसी को राधास्वामी मत में शामिल होने की तरग़ीब†† दे न किसी क़िसम का दबाव डाले न किसी के साथ ज़बर-दस्ती करे बल्कि अक्सर देखने में आया है कि हुज़ूर महाराज साहब किसी के ऊपर कोई तकलीफ़ हटाने की दया फ़रमा रहे हैं और अगर किसी ने ज़रा भी उस दया का इशारः किया तो वह कार्रवाई

*प्यार व दर्दमन्दी की। †विरले। ‡अंतरी। §ख़ाली। ‖बारम्बार व बहुत दफ़ा। ¶बड़ी बड़ी किताबें। **ज़ाहिर। ††लालच।

उस वक्त थोड़े अर्सः को मुलतवी* हो जाती थी जिससे यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि हुज़ूर महाराज साहब को अपनी महिमा और बुज़ुर्गी का इज़हार कराना बिलकुल नापसंद था मगर जैसा कि मुश्क छिप नहीं सक्ता है इसी तरह से हुज़ूर महाराज साहब की महिमा और कशिश† का शुहरः आम दूर २ तक हो गया था कि जो लोग राधास्वामी मत को किसी वजह से नहीं मानना चाहते थे वह उस कूचे‡ में आते हुए डरते थे कि कहीं उन पर उस कूचे की हवा या हुज़ूर महाराज साहब के दरवाज़े के चिराग़ का असर न पड़ जावे और उन के आदत और स्वभाव जोकि संसारी हैं बदल न जावें जैसा कि वाक़ई§ उन लोगों के कि जिन्हों ने हुज़ूर महाराज साहब का सतसंग और अभ्यास शुरू किया थोड़े अर्सः में ही हालत और स्वभाव बदल जाते थे।

परम गुरु राधास्वामी प्यारे। जगत में देह धर आये।
शब्द का देके उपदेशा। हंस जिव लीन मुक्ताये॥ १॥
किया सतसंग नित जारी। दया जीवों पै की भारी।
करम और भरम गये सारे। जीव चरनों मे घिर आये॥२॥
भक्ति का आप दे दाना। दिया जीवन को सामाना।
देख हुआ काल हैराना। रही माया भी मुरझाये॥३॥

*रुक जाती। †खैंच शक्ती। ‡गली। §असल में।

बढ़ा कर चरन में प्रीती। दई घट शब्द परतीती।
काल और करम को जीती। सुरत मन उलट कर धाये ॥४॥
जोत लख सूर निरखा री। परे सत शब्द परखा री।
अलख और अगम पेखा री। चरन राधास्वामी परसाये ॥५॥

७९—हुज़ूर महाराज साहब के नूरानी स्वरूप की छवि हर वक़्त मनमोहन व निराली ही होती थी जिस की झलक हर लहज़:* सतसंगियों के दिल पर एक नई क़िसम का असर प्रेम का पैदा करती थी और पल पल पर उस की चमक उनकी सुरत को अंतर और ऊपर की तरफ खैंचती थी और वहाँ के आनंद को पाकर वे सब प्रेम में मगन और ज़्याद: मसरूर हो जाते थे।

८०—एक मर्तब: त्रिमलदास नायब महंत साधुवान सख़्त बीमार हुए और हालत क़रीबुल मौत† व मायूसी‡ की हुई उस वक़्त हालत खिँचाव में उन को दर्शन हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब के हुए और हुक्म मिला कि अभी दो महीने और ठहरो और उसी वक़्त से उन को सिहत बहुत जल्द होनी शुरू हो गई। अर्स: हफ़्त: अशर: में जब हुज़ूर महाराज साहब के दर्शनों को सिहतयाब§ हो कर हाज़िर हुए और हाल खिँचाव और दर्शनों का बयान करके कहा

*पल पल। †मौत के से खिंचाव की। ‡नाउम्मैदी। §अच्छे हो कर।

कि दो महीने के वास्ते और ठहरने को हुक्म मिला है हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि तुम्हारी समझ में नहीं आया है दो बरस का हुक्म है इस के बाद उसी मीयाद दो बरस के इख़्तिताम* पर फिर बीमार हुए और हालत खिँचाव की पैदा हुई तब साधुवान ने हुज़ूर महाराज साहब की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि नायब महंत बहुत बीमार हैं और दर्शनौं को तड़पते हैं तब हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि उन का कारज तो अंतर में हो रहा है हम तीसरे रोज़ बाग़ जाकर उनको देखेँगे तीसरे रोज़ फिर हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि हम आज सिपहर† के वक़्त विमलदास के देखने को राधास्वामी बाग़ में जावैँगे साधू व सतसंगी भी जिनका जी चाहे चलैँ जो साधू बाग़ में विमलदास नायब महंत के पास पहुंचे वह हर एक से दरियाफ़्त करते थे कि हुज़ूर महाराज साहब कितनी देर में तशरीफ़ लावैँगे कि उसी असनाय‡ में हुज़ूर महाराज साहब राधास्वामी बाग़ में पहुंच गये और समाध पर मत्था टेक कर विमलदास के देखने को तशरीफ़ ले आये और हाल दरियाफ़्त फ़रमाया विमलदास

---

* पूरे होने। † तीसरे पहर। ‡वक़्त।

ने अर्ज़ किया कि मेरी तबीअत परसैाँ से आप की दया से जब से अंतर में दर्शन हुए अच्छी है और जो कुछ मेरा कारज था आप ने सब बना दिया अब सिर्फ़ आप की देह स्वरूप के दर्शन करने और शुकरियः अदा करने को मुन्तज़िर* बैठा हूं और अब प्रार्थना करता हूं कि अंतर में चरनौं का विलास बख़्शिश फ़रमाइये हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि अभी और ठहरो इस पर बिमलदास ने फिर अर्ज़ किया कि अब तो दया करके अंतर का ही विलास बख़्शिये अब इस शरीर में ठहरने को जी नहीं चाहता है यह कह कर हुज़ूर महाराज साहब को मत्था टेका और हुज़ूर महाराज साहब भजन घर में मत्था टेकने को तशरीफ़ ले गये उसी वक्त़ बिमलदास मौसूफ़ का चोला निहायत मगनता की हालत में छूट गया इत्तिला होने पर हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि उन के ले चलने की तैयारी करो जब तक समाध पर दो शब्द का पाठ करा लेते हैं और पाठ हो जाने पर सब साधू और सतसंगी और सतसंगिनौं ने बिलमदास की लाश को उठाया और हुज़ूर महाराज साहब भी उस के हमराह तशरीफ़ ले चले बाग़ से थोड़ी दूर

*इन्तज़ारी में ।

चल कर बिश्नो जी ने जो बुआ जी के नाम से मशहूर थीं अर्ज़ किया कि बिमलदास को साधुवान ने अश्नान भी नहीं कराया और ख़ुद पानी लोटे में जो उन के हाथ में था पेश किया हुज़ूर महाराज साहब ने चुल्लू में पानी लेकर तीन छींटे लाश मज़कूर पर डाले फिर बुआ जी ने कहा कि मेरे और सतसंगिनों के ऊपर भी एक छींटा डाल दीजिये इस पर हुज़ूर महाराज साहब ने दो चार छींटे तो अपने दस्त मुबारक से ही डाले और फिर एक टुकड़ा बादल का फ़ौरन नमूदार हुआ कि इधर तो हुज़ूर महाराज साहब और कुल सतसंगी और सतसंगिनों को बाग़ तक लौटने में और उधर लाश और कुल साधुओं को राधा बाग़ तक पहुंचने में मय कपड़ों के पूरा अश्नान करा दिया और फिर फ़ौरन वह टुकड़ा बादल का ग़ायब होगया वक़्त पानी बरसने के हुज़ूर महाराज साहब पर लोग छाता लगाने लगे मगर हुज़ूर महाराज साहब ने मना कर दिया—अचरजी लीला यह थी कि वह बारिश* सिर्फ़ उतनी ही जगह में थी और कहीं नहीं हुई।

८१—हुज़ूर महाराज साहब ने जीवों पर दया और

*बर्षा।

मेहर की अंतरी दृष्टी डाल कर उन के उद्धार का बीजा डाल दिया ताकि वे सब रफ़ः रफ़ः काल और क़रम के कष्ट से नजात पाकर मनुष्य देह के भागी होवैं और भक्ती और प्रेम कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनौं का करके निज धाम में बासा पाकर वहाँ के सरूर* और आनंद दायमी से फ़ैज़-याब हों चुनाँचि जिस वक्त़ से कि हुज़ूर महाराज साहब ने इस संसार में आने की दया उमगाई उसी वक्त़ से हर एक मज़हब व मिल्लत में तहक़ीक़ात दीनी† शुरू होगई यहाँ तक कि अंजुमन और समाजैं क़ायम होगईं और ख़ुरोनोश‡ की परहेज़गारी यानी आचार व विचार दूर होता गया और इसी में कोशिश हर एक मज़हब व मिल्लत की जारी है।

८२—हुज़ूर महाराज साहब के दर्शन और सतसंग के वास्ते बाहर से सतसंगी रोज़ानः तो आतेही रहते थे मगर ख़ास कर अइयाम तातील§ में हर जानिब से बकसरत‖ आते थे और हुज़ूर महाराज साहब की अपार दया व लीला देख कर और सतसंग का बिलास और आनंद पाकर प्रेम में भर जाते थे यहाँ तक कि

*अविनाशी सुख हासिल करैं। †परमार्थी खोज। ‡खान पान।
§छुट्टी के दिनौं में। ‖बहुत।

तातील ख़तम होगई और वक्त़ रवानगी रेल का भी हो गया मगर वे इस क़दर विलास में महव* होते थे कि उन को अपने वक्त़ वग़ैरह का ख़याल ही नहीं रहता था और बावजूद हुज़ूर महाराज साहब के बारहा फ़रमाने के फिर भी उस आनंद और विलास को छोड़ कर नहीं जाना चाहते थे और इस तरह से अक्सर ऐसा हुआ है कि वक्त़ रवानगी रेल का ख़तम होगया है और पाव घंटा आध घंटा बल्कि एक घंटा तक गुज़र गया है और जब वे लोग ज़बरदस्ती रवाना किये गये हैं तो इस क़दर देर होने पर भी दया और मेहर से उस रोज़ गाड़ी भी लेट हो जाती थी और वह लोग उस में सवार हो कर रवाने हो जाते थे।

८३—प्रेमीजन हुज़ूर महाराज साहब के वास्ते नई नई क़िसम की और चमक दमक की पोशाकें और ज़ेवर वग़ैरह उस उमंग की हालत में कि जो हुज़ूर महाराज साहब के सतसंग और दर्शन और बचन से अक्सर पैदा होती रहती थी पेश करके आरती के वास्ते प्रार्थना करते थे और हुज़ूर महाराज साहब दया फ़रमा कर उन की उमंग पूरी करने के वास्ते उन को मंज़ूर फ़रमा कर वक्त़ आरती के पहिन लेते थे और उन प्रेमियों

*मस्त।

को सन्मुख बिठा कर बानी में से प्रेम के शब्दौं का और अक्सर नये शब्द बना कर पाठ करवाते और उनसे आरती कराते थे और इस कार्रवाई से यह फ़ायदः और जीवौं को भी होता था कि कभी किसी वक्त की अनोखी छवि किसी किसी की नज़र में खुब जाती थी और हर वक्त उस के ख़्याल से प्रेम का जोश पैदा होता रहता था और भक्ती व प्रेम में तेज़ क़दमी के साथ आइंदा लगते थे और जिस तरह से कि माता अपने बच्चौं को तरह तरह के खेल और तमाशे दिखला कर मगन और मसरूर कर देती है इसी तरह से हुज़ूर महाराज साहब अपने बच्चौं का ख्याल रखते थे और उनके प्रेम और उमंग बढ़ाने के वास्ते लीला और बिलास नई नई तरह के दिखलाते रहते थे और जीवौं की प्रीत और प्रतीत की इसी तरह से रोज़ बरोज़ तरक्क़ी होती जाती थी।

८४–राधास्वामी मत का हाल और और मतौं की निसबत उस की बुज़ुर्गी और महिमा हुज़ूर महाराज साहब हर वक्त नई २ तर्ज़* और वजूहात से इस तौर पर साबित फ़रमाते रहते थे कि सुनने वाले दंग और लाजवाब† हो जाते थे और हर वक्त वह

*ढंग। †हैरान और बेजवाब।

बचन नया मालूम देता था और नया ही रस उस में पैदा होता था बल्कि ऐसे मौक़े भी अक्सर हुए हैं कि एक ही रोज़ में सात आठ आदमी वास्ते सुनने और समझने राधास्वामी मत के अलहदः २ औक़ात* पर आये हैं और हर एक के सामने राधास्वामी मत का बयान हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया है तो जो लोग हर वक़्त वहाँ मौजूद होते थे और उन बचनों को सुनते थे वे हर वक़्त के तर्ज़ बयान में नई कैफ़ियत और नई क़िसम का सबूत राधास्वामी नाम और राधास्वामी मत की बुज़ुर्गी का पाते थे।

८५—हुज़ूर स्वामी जी महाराज के वक़्त में तरीक़ा आरती पुराने तर्ज़ पर कि थाली में जोत जगा कर खड़े होकर दोनों हाथों से फेरते हुए आरती करते थे जारी था मगर हुज़ूर महाराज साहब जब हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब की आरती करते थे तो जोत जगा कर दो चार मर्तबः आरती की थाली को फेर कर बहुक्म हुज़ूर स्वामी जी महाराज बैठ जाते थे और दृष्टी जमा कर आरती करते थे चुनाँचि हुज़ूर महाराज साहब ने अपने वक़्त में प्रेमियों को आरती की ग़र्ज़ व फ़वायद समझा कर सिर्फ़ दृष्टी जोड़ कर सन-

*वक़्तों।

मुख बिठला कर आरती करने का तरीका मुरौवज* फ़रमा दिया और इससे ज्याद: यह सहूलियत† पैदा फ़रमाई कि बिला पाठ पोथी के मजमै सतसंगियों पर दृष्टी डाल कर और उनको ध्यान की हालत बख़्शिश फ़रमा कर गूँगी आरतीं कराते थे।

८८—हुज़ूर महाराज साहब ने भक्ती में भी बड़ी आसानी दया और मेहर से फ़रमाई और सब से सहल और सुगम पिता पुत्र का भाव जिस में बहुत बड़ी माफ़ी और क्षिमा का सहारा जीवों को हासिल हो सक्ता है जारी फ़रमाया और यही बर्ताव सब जीवों से जो सरन में आये रक्खा यानी सब पर मिस्ल बच्चों के दया मेहर और प्रेम की बख़्शिश फ़रमाई और उनके क़सूरों का ख़याल न फ़रमाया और जैसे कि बच्चा अपने माता पिता की गोद में खेलता है और उमंग और प्यार के साथ उससे लिपटा जाता है इसी तरह से प्रेमीजन भी हुज़ूर महाराज साहब के चरनों में लिपटे और बिलास करते रहते थे और अपने क़सूरों और हुज़ूर महाराज साहब की दयालता और क्षिमा को देख कर सरनगूँ और ममनून‡ होते थे और निहायत मशकूरी के साथ प्रेम और उमंग

*जारी। †आसानी। ‡शरमिन्द: व लज्जित, इहसानमन्द।

के जोश में सरशार* होकर सरन में गहरे और पक्के होते जाते थे ।

८७ हुज़ूर महाराज साहब के चरनामृत परशादी व मुख अमृत आम तौर से सतसंगी व साधू लेकर ग्रहण करते थे जिस से मन की सफ़ाई व सुरत के सिमटाव और चढ़ाई का फ़ायदः उन को हासिल होता था और यही बस† नहीं बल्कि अक्सर बीमारियों ओर ज़माने वबा में जिन ग़ैरसतसंगियों ने भी उन का इस्तेमाल किया शफ़ायाब‡ हुए और वबा से महफ़ूज़§ रहे ।

८८—हुज़ूर महाराज साहब ने बानी के पाठ करने और सुनने के वास्ते यह हिदायत फ़रमाई कि अगर्चे मामूली पाठ में रस और आनंद आता है मगर अंतर में ऊँचे घाट पर तवज्जह को जमा कर और बानी के मज़मून और अर्थ पर और जिन मुक़ामात का उस में ज़िकर है उन पर निगाह और तवज्जह रखने से मिस्ल अभ्यास के सिमटाव व चढ़ाई का फ़ायदः हासिल होगा और बानी का मतलब समझ में आकर गहिरा रस और आनंद मिलेगा ।

और मन और चित्त के एकाग्र करने के वास्ते बहुत सी आसान और निरबिघ्न जुक्तियाँ प्रघट फ़रमाईं ।

* सरबोर । † काफ़ी । ‡ चंगे । § बच गये ।

८९—हुज़ूर महाराज साहब ने उन परमार्थ के चाहने वालों को जो किसी वजह से आगरे न आ सकें उपदेश बज़रीये परचै तहरीरी* या मार्फ़त किसी सतसंगी के इस तरह जारी फ़रमा दिया कि अव्वल उन की दरख़्वास्त आने पर चंद इब्तिदाई कुतुब† देखने की हिदायत फ़रमाई और जब उन्हों ने कुतुब मज़कूर: का मुताला करके इस आला मज़हब के उसूल व शरायत‡ को क़बूल व मंजूर किया तब बज़रीये परचै तहरीरी या मार्फ़त उस सतसंगी के जो वहाँ पर होता था उपदेश दे दिया जाता था और हर एक सतसंगी को इजाज़त आम देदी कि वह अपनी स्त्री को उपदेश देकर इत्तिला उस की कर देवे और जाबजा शहरों व क़सबों व देहातों में सतसंग क़ायम करने की इजाज़त फ़रमा दी कि जिससे सच्चे मुतलाशियों को आसानी व सहूलियत के साथ मौक़ा शामिल होने का मिले।

९०—हुज़ूर महाराज साहब ने अभ्यास में जो विघन वाक़: होते हैं उन की शरह और उनके दूर करने की जुक्तियाँ ऐसी सहल तौर पर ज़ाहिर फ़रमाईं और मत की समझौती के वास्ते हर क़िसम

* चिट्ठी से। † शुरू पोथियाँ। ‡क़ायदे व शरतें।

की इल्मी व अमली* दलीलोँ से अक्सर बचन ज़बानी व तहरीरी ऐसे मुशर्रह† फ़रमाये कि जो आसानी से मर्द और औरतोँ की समझ में आसक्ते हैं और जिन को सुन कर या पढ़ कर प्रेमियोँ और अभ्यासियोँ को बहुत बड़ा सरूर व फ़ायदः हासिल होता है और अभ्यास में मदद मिलती है।

९१—हुज़ूर महाराज साहब ने ऐसी दया अपार फ़रमाई कि हर मज़हब व मिल्लत व देश के संस्कारी जीवोँ को क्या हिन्दू क्या मुसल्मान क्या ईसाई क्या पारसी क्या जैनी ग़रज़ कि दुनियाँ में जितने मज़हब कि जारी हैं सब में से मेहर व दया से संजोग मिला कर सरन में लिया क्योँकि इस मत का तअल्लुक़ रूहानी शग़ल‡ से है बाहरी रसूमात और तरीक़ोँ से कुछ ग़र्ज़ नहीं है मालिक जात पाँत नहीं देखता है उस को तो भक्ती प्यारी है जो उसकी भक्ती करेगा वही उस का प्यारा होगा।

जात पाँत पूछे नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई॥

इस तरह की दया और मेहर जो हुज़ूर महाराज साहब ने जारी फ़रमाई तो क़रीब कुल हिन्दुस्तान के अज़ला में से हर मज़हब के संस्कारी जीव

---

* बरताव की हुई। †खोल कर। ‡शब्द अभ्यास।

बिला तख़सीस* जात पाँत के चरनौं में उमड़े और सरन में आये और ज़्याद: तर पढ़े लिखे, एमए, बीए, डाक्टर व प्रोफ़ेसर साइन्सदाँ व शास्त्री वग़ैरह शामिल हुए क्यौं कि ऊँचे दरजे के और ज़्याद: गहरे और भेद के बचन उनकी समझ में जल्दी आये।

९२–हुज़ूर महाराज साहब शबोरोज़† में सिर्फ़ तीन चार घंटे आराम फ़रमाते थे और अक्सर जब बाहर से ज़्याद: सतसंगी आते तो इस में भी कमी हो जाती थी सिवाय चार वक़्त आम व ख़ास सतसंग के हुज़ूर महाराज साहब का वक़्त और भी किसी न किसी काम में सर्फ़ होता रहता था यानी कभी किसी को समझा रहे हैं कभी कोई ख़ास बचन फ़रमा रहे हैं कभी ख़त व किताबत का काम कर रहे हैं कभी बचन व बानी तहरीर‡ करा रहे हैं एक लमह:§ फ़ुर्सत का नहीं था। हर एक शख़्स अपने आराम को मुक़द्दम‖ समझता है मगर हुज़ूर महाराज साहब ने तो चोला केवल जीवों के उद्धार व उपकार के लिये ही धारन किया था।

९३–अर्स: तक हुज़ूर महाराज साहब ने अपने दायर:¶

---

*बग़ैर लिहाज। †रात दिन। ‡लिखा। §पल। ‖ज़रूरी। ¶मकान।

दौलत पर ही अपने ज़ाती सर्फ़* से जो सतसंगी बाहर से वास्ते दर्शन और सतसंग के अक्सर आया करते थे उन की बूदोबाश† और ख़ुरोनोश‡ का इन्तिज़ाम जारी रक्खा मगर जब आने वालौं की कसरत ज्याद: हुई और गुंजाइश नशिस्त व बरख़ास्त§ की भी मुश्किल होने लगी तब नज़र व भैंट की आमदनी से और मकानात क़रीब अपने दायर: दौलत के वास्ते बूदोबाश सतसंगियान व नीज़ सतसंग के ख़रीद फ़रमाये और खान पान के वास्ते भी अलहदह रसोई और भंडार घर का इन्तिज़ाम कर दिया मगर फिर भी ख़ास २ सतसंगी व साधू और सतसंगिनौं को खाना हुज़ूर महाराज साहब अपनी ख़ास रसोई से ही खिलाते रहे।

९४-अलाव: ख़र्च साधुवान व बाग़ात के हुज़ूर महाराज साहब ने बहुत रुपया अपना ज़ाती तामीर‖ समाध हुज़ूर स्वामी जी महाराज व जनाब: राधा जी साहिब: व दीगर मकानात राधास्वामी बाग़ व दीगर बाग़ात के सर्फ़¶ किया और जिस क़दर रुपया नज़र व भेंट का सतसंग में हुज़ूर महाराज साहब के पेश** हुआ

*ख़र्च। †रहने। ‡खाने पीने। §उठने बैठने। ‖बनवाने। ¶ख़र्च।
**भेंट।

वह सब ख़र्च बाग़ात व तामीर व मरम्मत समाध व रसोई सतसंगियान व साधुवान व परशाद व ख़रीद व तामीर व मरम्मत दीगर मकानात सतसंग में सर्फ़ किया और जो पोशाक व ज़ेवर वग़ैरह नज़र होता था वह भी बाद परशादी करने के सतसंगी व साधुवान को बतौर परशादी अता* हो जाता था ख़ैरात आम का भी दरवाज़: खुला हुआ था यानी कोई मंगता ख़ाली नहीं जाता था और हमेश: हुज़ूर महाराज साहब अपनी ज़ाती आमदनी से भी अलाव: ज़र† सतसंग के अक्सर ग़रीब बेव: व महुताजों को खाना और कपड़ा मिस्ल रज़ाई व कम्बल वग़ैरह तक़सीम फ़रमाया करते थे।

९५—हुज़ूर महाराज साहब ने पोथियाँ हस्बज़ैल‡ बावजूदे कि उन में हालात व ख़ियालात जोगी ज्ञानी जोगेश्वर वेदान्ती सूफ़ी वग़ैरह की रसाई की हद्द से बहुत ऊँचे दरजों के हैं ऐसी सलीस§ और आम फ़हम हिन्दी भाषा में तसनीफ़‖ फ़रमाई हैं कि जिस को राधास्वामी मत के उपदेशी पढ़े व अनपढ़े मर्द व औरत आसानी से समझ सक्ते हैं—सार उपदेश, निज उपदेश, प्रेम उपदेश, गुरु उपदेश, प्रश्नोत्तर, राधा

*बख़्शिश। †रुपये। ‡नीचे लिखी हुई। §आसान। ‖बनाई।

स्वामी मत प्रकाश बज़बान अँगरेज़ी, प्रेमबानी चार जिल्दें, प्रेमपत्र छः जिल्दें, जुगत प्रकाश, प्रेम पत्र के बचनों में से कुछ पोथियाँ अलहदा करके वास्ते मुताले मुब्तदियों* के छाप दी गई हैं और उन के नाम हस्ब ज़ैल हैं—राधास्वामी मत संदेश, राधास्वामी मत उपदेश और सहज उपदेश। अलावः इस के सार बचन नज़म व प्रेम बानियों में से हर एक अंगों के शब्द छाँट कर हस्ब ज़ैल सात छोटे २ गुटकों में छाप दिये गये हैं—भेदबानी चार जिल्दें, प्रेम प्रकाश, नाम माला, बिनती व प्रार्थना, ताकि जो ग़रीब सत-संगी हैं बहुत कम क़ीमत में उन बानियों से फ़ैज़† उठाएँ और पिछले संत और महात्माओं की बानी में से मुन्तख़िब‡ करके तीन पोथियाँ संतसंग्रह भाग पहिला व दूसरा और छाँटे हुए बचन महात्माओं के भी तालीफ़§ किये हैं।

९६—आम तौर पर देखने में आया है कि राधास्वामी मत के अभ्यासियों का और नीज़ उन के लवाहक़ों‖ का चेहरा मरते वक़्त नूरानी बश्शाश¶ व सुहावना हो जाता है और बाद चोला छोड़ने के भी ऐसा मालूम

*नये उपदेशियों के पढ़ने के वास्ते। †फ़ायदः। ‡चुन के। §छाँट कर इकट्ठे किये हैं। ‖रिश्तःदार व नौकर। ¶मगन।

होता है कि वह शख़्स मसरूर व मगन हालत में सो रहा है और अक्सर राधास्वामी मत के अभ्यासियों ने देह त्याग करते वक़्त बयान भी किया है कि हुज़ूर महाराज साहिब उन को दर्शन दे रहे हैं और दया फ़रमा रहे हैं और जो तकलीफ़ मरते वक़्त आम तौर पर जीवों को होती है वह दर्शन के होते ही सब रफ़ा* हो जाती है और चेहरे पर बशाशत† आ जाती है वजह उस की यह है कि जिस वक़्त सुरत का सिमटाव व खिचाव अंतर में ऊपर की तरफ़ जो मौत का स्थान है होता है उस वक़्त करम का चक्कर या दफ़्तर खुलता है और जो करम उस ने किये हैं वह प्रघट होकर उन का असर जाने वाली सुरत को दिखलाते हैं और जैसा उनका असर होता है उसी के मुवाफ़िक़ सुरत को खुशी या रंज पैदा होता है और उसका असर चेहरे से ज़ाहिर होता है इसी क़ायदे के मुवाफ़िक़ जो राधास्वामी मत में शामिल हुए हैं या जिन का तअल्लुक़ और मुहब्बत राधास्वामी मत के अभ्यासी से होता है और जो नक़्श कि राधास्वामी नाम और संतसतगुर के स्वरूप के मिस्ल दीगर करमों के होते हैं उन का असर

*दूर। †खुशी।

प्रघट करने के वास्ते संतसतगुर उस जाने वाली सुरत को दर्शन देते हैं और सच्चा व पूरा फ़ायदः और असर राधास्वामी नाम और संतसतगुर के दर्शन का यानी जीव के उद्धार का उस को प्रघट नज़र आता है और वह सुरत निहायत प्रेम और उमंग के साथ उनके चरनों की तरफ़ मुतवज्जह* होती है और हुज़ूर राधास्वामी दयाल उस को चरनों में लपेट कर ऊँचे स्थान में ले जाते हैं और इस खुशी और मगनता का असर उस के चेहरे पर नुमायाँ† हो जाता है और बाद मरने के भी क़ायम रहता है।

९७-हुज़ूर महाराज साहब एक रोज़ तीन चार बजे सिपहर‡ के अपने अंदर के कमरे से बीच के कमरे में तशरीफ़ लाये और साधुवान व सतसंगियान से जो क़रीब बीस पच्चीस के वहाँ मौजूद थे फ़रमाया कि सब लोग कहते हैं कि संत और साध मिल जावें तो हम पकड़ लें हम न साध हैं और न संत हैं ~~और~~ अलबत्त: पूरे गुरू से मिले हैं तुम सब को इजाज़त देते हैं कि हमारा हाथ पैर कपड़ा या जो चीज़ तुम्हारे हाथ में आवे बिला लिहाज़ अदब व खौफ़ किसी क़िसम के पकड़ लेना यह फ़रमा कर उन लोगों के दर्मियान

* लिपटती है। † प्रघट। ‡ तीसरे पहर।

में जो कमरे में मौजूद थे इधर से उधर और उधर से इधर बराबर घूमते रहे और घूमते हुए कोठरी के दरवाज़े में खड़े होकर फ़रमाया कि देखो। जब हमारी देह को हाँ तुम लोग बावजूद कोशिश के न पकड़ सके तो संत सतगुरु को कैसे पकड़ सक्ते हो और उन की क्या परख पहिचान कर सक्ते हो इस आवाज़ को सुन कर सब लोग हैरान और शशदर[*] रह गये और अर्ज़ करने लगे कि बग़ैर दया और मेहर के सहारे के कुछ नहीं कर सक्ते।

९८—अक्सर व बेश्तर ऐसा हुआ कि बहुत से शख़्स सतसंगी व ग़ैर सतसंगी सवालात हर क़िस्म व संशय व भरम के दरियाफ़्त करने के वास्ते सतसंग में आये और क़ब्ल[†] इस के कि वे कोई सवाल करें हुज़ूर महाराज साहब उन के दिली सवालात और संशय के जवाबात ऐसे शाफ़ी[‡] व मुदल्लल[§] ख़ुदही फ़रमा देते थे कि जिससे उनके संशय रफ़ा[‖] होकर उनकी और सब हाज़िरीन[¶] की पूरी तसल्ली हो जाती थी।

९९—हुज़ूर महाराज साहब ने बमुक़ाबले बैराग के अनुराग पर ज़्याद: ज़ोर दिया और बैराग की निसबत सिर्फ़ इस क़दर फ़रमाया कि फ़ुज़ूल और

*भौचक्का। †पहिले। ‡पूरे। §सबूत के साथ। ‖दूर। ¶पास बैठे हुए।

नामुनासिब चाहौं को रोकना चाहिये सच्चा बैराग प्रेम से खुद बखुद हो जावेगा और प्रेम और शौक़ की भारी महिमा बयान फ़रमाई और बानी और बचनौं में और भी अभ्यास कराकर दरसा दिया कि प्रेम ही मालिक का स्वरूप है और प्रेम ही जीव का रूप है और प्रेम ही ज़रीया मालिक से मिलने का है जैसा कि शब्द ज़ैल फ़रमूदः* हुज़ूर महाराज साहब से ज़ाहिर है ।

॥ शब्द ॥

प्रेम की दौलत अपर अपार ।
प्रेम से मिलता सिरजनहार ॥ १ ॥
प्रेम बिना सब झूँठा ध्यान ।
प्रेम बिना सब थोथा ज्ञान ॥ २ ॥
प्रेम बिना सब बानी रीती ।
प्रेम से काल करम को जीती ॥ ३ ॥
प्रेम से मन माया बस आय ।
प्रेम से सूरत अधर चढ़ाय ॥ ४ ॥
प्रेम निकारे सब हि बिकार ।
प्रेम से होवे जग से न्यार ॥ ५ ॥
प्रेम से दीखे घट में नूर ।
प्रेम रहा घट २ भर पूर ॥ ६ ॥

*फ़रमाये हुए ।

प्रेम की महिमा सब से भारी।
प्रेम बिना सब पच २ हारी ॥ ७ ॥
प्रेम बिना सब थोथी कार।
प्रेम से उतरो भौजल पार ॥ ८ ॥

प्रेम की बख़्शिश दें राधास्वामी ॥

१००—हर मज़हब की किताबौं के देखने से मालूम होता है कि जब २ कोई संत व औतार या वली व महातमा पैदा हुए उन के वक़्त में बहुत कम लोगें ने उन की महिमा जानी और उन पर यक़ीन* ला कर फ़ैज़याब† हुए बाद में अल्बत्तः लाखौं का शुमार उन के नाम पर भरोसा करने वालौं का हो गया और ख़ास कर उस शहर व क़ौम व ख़ानदान के लोगौं को तो यक़ीन ही नहीं आया कहीं ख़ास तैार पर बाज़ लोग कुछ यक़ीन लाये और फ़ैज़याब हुए बरख़िलाफ़ इस के हुज़ूर स्वामी जी महाराज व हुज़ूर महाराज साहब ने ख़ास दया फ़रमा कर बहुत जीवौं को दूर और क़रीब से अपने ही वक़्त में चरनौं में पूरा यक़ीन दिला कर लगाया और अपने ख़ानदान और रिश्तेदारौं व क़ौम में से भी अक्सरौं को पहिचान बख़्श कर परमार्थी दौलत अता*

*बिश्वास। †फ़ायदः उठाने वाले। *बख़्शी।

की और सरन में ले लिया यह बड़ी भारी बल्कि ख़ास बख़्शिश हुज़ूर स्वामी जी महारज व हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाई सिर्फ़ इसी क़द्र नहीं बल्कि हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब के ख़ानदान और रिश्तेदारौं से भी अपनी भक्ती और सेवा प्रीत व प्रतीत सहित कराली और उनकी नाज़ बरदारी* भी पूरे तौर से करते रहे।

१०१—हुज़ूर महाराज साहब ने अपनी दया व मेहर से संसकारी जीवौं को अपने सूक्षम रूप से दर्शन दे कर और बचन सुना कर चरनौं में लगाया ग़रज़ कि अनेक रीति से जीवौं को सरन में लिया और मिन्-जुमलः चंद वाक़िआत† के दो वक़ूअः बतौर नमूने के ज़ैल में दर्ज किये जाते हैं।

१०२—गंगाराम सिंधी को जो वेदान्ती था और अक्सर हैदराबाद सिंध के सतसंगियौं से जो उससे मिलते थे और राधास्वामी मत का ज़िकर करते थे और वह उन से उस के ख़िलाफ़ वहिस मुबाहिसह किया करता था एक मर्तबः जब वह सिबी से अपने घर हैदराबाद को वापस जा रहा था रास्ते में हुज़ूर महाराज साहब ने उस को सूक्षम रूप से दर्शन

*ख़ातिर दारी, दिल रखना। †हालात

देकर राधास्वामी मत को ऐसी दलीलों से समझाया कि वह क़ायल होगया और फिर हुज़ूर महाराज साहब उस की नज़र से पोशीदा* होगए उसने फिर तमाम रेल की गाड़ियों में तलाश किया मगर कहीं नज़र न आये घर जाकर वह राधास्वामी सतसंग में गया और वहाँ हुज़ूर महाराज साहब की तसवीर को देख कर पहिचाना कि यह तसवीर उन्हीं की है कि जिन्हों ने रास्ते में मुझ को दर्शन देकर राधास्वामी मत समझाया था और मुफ़स्सिल हाल सतसंगियों को सुनाया। और हुज़ूर महाराज साहब का पता उन से दरियाफ़्त करके बज़रीये तहरीर उपदेश लेकर प्रीत प्रतीत के साथ अभ्यास करने लगा।

१०३—एक ज़ईफ़ुलउमर† शख़्स को जो इटावे के सतसंग में जाया करता था राधास्वामी मत की महिमा सुन कर शौक़ शामिल होने का पैदा हुआ और हुज़ूर महाराज साहब के चरनों में उस ने बज़रीये अर्ज़ी प्रार्थना की कि मैं उपदेश लेना चाहता हूं मगर बवजह बीमारी दमा के हाज़िर नहीं हो सक्ता हुज़ूर महाराज साहब ने हुक्म भेजा कि तुम लाला लक्ष्मी नरायन सतसंगी सबइन्सपेक्टर पुलिस के पास जाकर

*गुप्त। †बूढ़ा।

उपदेश लेले। उसने दोबारः अर्ज़ी भेजी कि मैं आप से ही उपदेश लेना चाहता हूं जब तबीअत किसी क़दर दुरुस्त होगी चरनौं में हाज़िर हूंगा चूँकि तबी- अत उसकी इस क़ाबिल नहीं हुई कि वह चरनौं में हाज़िर हो सके और शौक़ व तड़प दर्शन करने व उपदेश लेने की दिन बदिन बढ़ती गई एक शब को बहुत बेकली की हालत में रोते हुए आँख लग गई कि हुज़ूर महाराज साहब ने उस को ख़्वाब* में दर्शन देकर जुक्ती सुमिरन ध्यान व भजन की मय तफ़सील मुक़ामात के बख़ूबी समझा कर उसकी ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ ख़ुद उसी जगह उपदेश उस को दे दिया और वह इस दया से निहायत मगन व मसरूर हुआ और हालख़्वाब व मिलने उपदेश का और शुक्रिया दया व मेहर का बज़रोये अर्ज़ी के हुज़ूर महाराज साहब के चरनौं में तहरीर करके भेजा।

१०४—अमरीका में एक औरत योग अभ्यास करती थी उस में जब उसको कुछ बिघ्न वाक़ः हुआ तो उस को अंतर में हिदायत हुई कि इस बिघ्न के दफ़ैए† का इलाज हिन्दुस्तान में मिलेगा इस लिये उस ने अपने लड़के को हिन्दुस्तान में भेजा वह हिन्दुस्तान

* सुपना। † दूर करने।

में सब जगह फिरा मगर कहीं उस की तशफ्फ़ी* न हुई आख़िरकार घूमते फिरते हुज़ूर महाराज साहब का परमार्थी ज़िकर सुन कर आगरे में आया और मिल कर अपनी मा का हाल बयान किया हुज़ूर महाराज साहब ने कुल हालात उसकी मा के अभ्यास के और सबब बिघ्न वाक़े होने और फिर जतन उस के दूर होने का मुफ़स्सिल तौर से उस को समझा दिया और फ़रमाया कि तुम अच्छी तरह से इसको अपनी मा को न समझा सकोगे, इस लिये हम यह कुल हाल चिट्ठी में लिखे देते हैं तुम अपनी मा को दे देना वह ख़ुद पढ़ कर समझ लेंगी और ऐसाही हुआ ।

१०५–एक जर्मनी का बशिन्दा जो थियासोफ़ीकल सोसाइटी का मेम्बर था हुज़ूर महाराज साहब से मिलने के वास्ते आया और आप ने क़रीब दो घंटे के उस को राधास्वामी मत के हालात मुफ़स्सिल तौर से समझाये जिसको सुन कर वह बहुत ख़ुश हुआ और उसी रात को ख़्वाब में उस को दर्शन भी ऐसे स्वरूप के हुए कि जिस को उसने देखा न था दूसरे रोज़ वह दोपहर को फिर मिलने आया और अपने

* तसल्ली ।

ख़्वाब का हाल बयान किया हुज़ूर महाराज साहब ने हुज़ूर स्वामी जी महाराज की तसवीर दिखाई जिस को देख कर उसने बयान किया कि मुझ को इसी स्वरूप के दर्शन हुए थे बाद इस के हुज़ूर महाराज साहब ने ऐसी चर्चा फ़रमाई कि जिस्से उस के तमाम शकूक रफ़ा हो गये और ख़्वाहिश उपदेश लेने की ज़ाहिर की और उपदेश अभ्यास का लेकर हिन्दुस्तान की सैर को चला गया और अक्सर बज़रीये चिट्ठियों के हाल अभ्यास और इज़हार शुक्रियः दया का करता रहा।

१०६—राधास्वामी मत में एक कुल मालिक राधास्वामी दयाल का इष्ट बांधने की और बाक़ी जिस क़दर ब्रह्म पारब्रह्म ईश्वर परमेश्वर देवी देवता के इष्ट हैं उनके त्याग की हिदायत है क्योंकि यह इष्ट जो रास्ते के हैं अपने भाव वाले को आगे जाने से रोकते हैं चुनाँचि बाज़ लोगों को जब उन्होंने राधास्वामी मत में शामिल होकर अपना अभ्यास शुरू किया तो उन को साबिक़* इष्ट ने दर्शन देकर कहा कि राधास्वामी मत के अभ्यास को छोड़ दो वर्नः हम तुम को नुक़सान पहुंचावेंगे उन्होंने जवाब दिया कि

* पहिले

पहिले इससे बावस्फ़ परहेज़गारी व इबादत व मेहनत के आपने कभी दर्शन नहीं दिये और अब जब कि राधास्वामी नाम का अभ्यास हमने शुरू किया तो आप हमारा रास्ता रोकने और विघ्न डालने को आये हैं हम राधास्वामी नाम को नहीं छोड़ेंगे और फ़ौरन राधास्वामी नाम का सुमिरन व सतगुर स्वरूप का ध्यान उमंग व प्रेम के साथ शुरू किया कि उस के प्रताप से उस इष्ट का रूप ग़ायब हो गया और कोई नुक़सान न पहुंचा सका ।

१०७–एक बंगाली साधू जिसको हुज़ूर महाराज साहब ने बाद में दयालसरन का नाम बख़्शा था कलकत्ते से पच्चीस कोस के फ़ासले पर एक जंगल में कुछ अर्सः से काली की साधना कर रहा था एक रोज़ रात को जब कि वह अपनी कुटी में लेटा हुआ था और नींद की सी हालत में था एक निहायत ख़ूबसूरत औरत उस के पास आकर बैठी और इख़्तलात* की बातें करने लगी क़रीब था कि वह अपनी साधना से डिगमिग हो जावे कि हुज़ूर महाराज साहब ने उस को हाथ पकड़ कर उठा के बिठा दिया और दर्शन देकर फ़रमाया होशियार हो क्या करता है और नज़र से पोशीदा†

*मेल । †गुप्त ।

हो गये और वह औरत भी हुज़ूर महाराज साहब के प्रघट होते ही ग़ायब हो गई साधू मज़कूर को यह माजरा* देख कर बहुत ही सोच हुआ कि यह बज़ुर्ग़ कौन थे कि जिन्हौं ने मेरी ऐसे वक़्त में रक्षा करके साधना को भंग न होने दिया और उन के खोज में दूसरे रोज़ ही वहाँ से रवाने होकर कलकत्ते में आया इत्तिफ़ाकिय:† उस की मुलाक़ात एक सतसंगी से हुई और वह उस को बाबू निर्मलचंद्र बनरजी के मकान पर जहाँ कि सतसंग रोज़ान:‡ हुआ करता था ले गया वहाँ उसने तसवीर हुज़ूर महाराज साहब की देखी और पहिचान कर दरियाफ़्त किया कि यह किस महात्मा की तसवीर है इन्हौं ने मेरी रक्षा की और अपना कुल मुफ़स्सिल हाल उनको सुनाया वे लोग हुज़ूर महाराज साहब की दयालुता और रक्षा का हाल जो कि ग़ैरसतसंगी पर हुई सुन कर बहुत मगन हुए और कहा कि यह तसवीर हमारे परम संत सतगुर हुज़ूर महाराजस ाहब की है और उनका दर-बार आगरे में है यह सुन कर उस ने अपना इराद: वास्ते हाज़िरी हुज़ूर महाराज साहब के चरनौं के ज़ाहिर किया और उन से पता और निशान दरियाफ़्त

*हाल। †अचानक। ‡नित्त।

करके और मदद लेकर आगरे में आया और हुजूर महाराज साहब के दर्शन और सतसंग करके बहुत हो मगन व मसरूर हुआ और उपदेश लेकर सतसंग व अभ्यास प्रीत प्रतीत के साथ करने लगा चंद रोज़ ही उस को अभ्यास करते गुज़रे थे कि काली ने उस को ख़्वाब में दर्शन दिये और बहुत नाराज़ होकर कहा कि तू हम से क्यों बेमुख हुआ और यह क्या करता है इस को छोड़ दे उसने जवाब दिया कि मैंने इस क़दर साधना तुम्हारी को मगर कभी दर्शन नहीं दिये बल्कि मेरी साधना भंग करनी चाही अब तुम दर्शन देने आई हो मैं तुम को नहीं मानता और यह कह कर राधास्वामी नाम का सुमिरन करने लगा तो वह फ़ौरन घबरा कर भाग गई और वह गहिरा भाव और निश्चय लाकर ज्यादः प्रीत और प्रतीत के साथ सेवा सतसंग और अभ्यास में मसरूफ़ हुआ और हुजूर महाराज साहब की सेवा में बराबर हाज़िर रहा।

१०८—एक साधू नरसिंह दास नामी श्रीकृष्ण का उपाशक व बड़ा प्रेमी मथुरा का रहने वाला राधास्वामी मत की महिमा सुन कर आगरे में आया और हुजूर महाराज साहब से मत का हाल बख़ूबी समझ कर उपदेश लिया और अभ्यास करना शुरू

किया चंद रोज़* के बाद उसने आठ बजे सुबह के आम सतसंग में बयान किया कि आज प्रेम निवास के बड़े कमरे में जहाँ मैं ठहरा हुआ हूँ ध्यान की हालत में कृश्न महाराज ने मुझ को दर्शन दिये और धमका कर कहा कि तू इस अभ्यास को छोड़दे ब-जवाब उसके मैंने कहा कि पेश्तर आपने मुझ को कभी दर्शन नहीं दिये अब दर्शन देने आये हो तुम काल हो मैं हरगिज़ तुम्हारी बात को नहीं मानूँगा इस पर कृश्न जी बहुत नाराज़ हुए और तलवार खींच कर तीन वार मुझ पर किये वार के होते ही मैंने राधास्वामी नाम का सुमिरन शुरू किया कि उसी वक्त हुज़ूर महाराज साहब प्रघट हुए और वह फ़ौरन ख़ौफ़ खा कर ग़ायब हो गया और हुज़ूर महाराज साहब ने मेरे ज़ख़्मों पर दया का हाथ फेरा कि तकलीफ़ दूर हो गई और तीनों ज़ख़्मों के निशान जो रान में थे सब को दिखलाये और हुज़ूर महाराज साहब की ऐसी दया और रक्षा देख कर प्रीत प्रतीत के साथ हुज़ूर महाराज साहब की भक्ती और अभ्यास में मसरूफ़† रहा।

१०९–हुज़ूर महाराज साहब ने अनंत जीवों को

---

* कुछ दिन। † लगा रहा।

चौरासी से निकाल कर सच्ची भक्ती के रास्ते पर लगा दिया और हज़ारहा* भक्तों को दर्जः प्रेमी सतसंगी का बख़्श दिया और बहुत से प्रेमी सतसंगियों को गुप्त व होनहार साध व संत और पंडित ब्रह्म शंकर मिश्र साहब ऐम्० ए० उर्फ़ महाराज साहब को अपना जानशीन बना दिया ताकि आइंदः को रास्ता सहज उद्धार का जारी रहे। किस की ताक़त है कि एक शिम्मः† हुजूर महाराज साहब की भारी गत और गहरी दया और मेहर का वर्णन कर सके बड़े भाग उन जीवों के हैं कि जो हुजूर महाराज साहब की सरन में आये हैं और अंतर व बाहर उन को दया के गहरे परचे पाकर मगन व मसरूर हैं।

॥ कड़ी ॥

बड़े भाग जिन सतगुरु पाये। चौरासी से तुर्त बचाये।

११०—बाबू अन्वदा प्रसाद गुप्त एक बंगाली सतसंगी हुजूर महाराज साहब के वास्ते बड़ा सिंहासन कलकत्ते में साल भर से तैयार करा रहा था हुजूर महाराज साहब ने उसको ख्वाब में दर्शन देकर फ़रमाया सिंहासन जल्दी तैयार करा के लाओ बमूजिब उस के उसने जल्द बनवा कर आगरे को

* हज़ारों। † ज़र्रः, किनका।

रवाने कर दिया और आप भी आगरे आने को था कि उसके घर से एक तार आया कि तुम्हारा लड़का बहुत सख़्त बीमार है फ़ौरन चले आओ इस तार को पाकर इरादः आगरे आने का मुल्तवी किया और घर को रवाने हुआ रास्ते में उस को हुज़ूर महाराज साहब ने ख़्वाब में दर्शन देकर फ़रमाया कि हम छः माह से तुम्हारे इन्तिज़ार में ठहरे हुए हैं और तुम अब घर को जाते हो इस पर वह रास्ते में से ही आगरे को चला आया और घर को तार वास्ते दरियाफ़्त हाल और अपने आगरा जाने की इत्तिला का भेज दिया आगरे पहुंचते ही उस को तार मिला कि तुम्हारे लड़के को अब बिलकुल आराम है तुम जब तक चाहो वहाँ ठहरो इस ख़बर को पढ़ कर उस ने हुज़ूर महाराज साहब के चरनों में मत्था टेका और शुकरिया दया का अदा किया और सिंहासन को आरास्तः* कर के हुज़ूर महाराज साहब की नज़र किया और हुज़ूर महाराज साहब ने उसी सिंहासन पर बैठ कर कई बार उससे आरती कराई और दया और मेहर की बख़्शिश फ़रमा कर उस की उमंग और चाह को क़बल† अपने चोला छोड़ने के पूरा फ़रमा दिया।

*सजाकर। †पहिले।

१११—हुज़ूर महाराज साहब ने बहालत बीमारी सन् १८९८ ई० में नये २ करश्मे* दिखलाये कभी २ नब्ज़† मुबारक डाक्टरान हाज़रीन‡ को दिखलाते तो वे लोग नब्ज़ की हालत अबतर§ और रफ़तार‖ कमज़ोर बयान करते हालाँकि बकारवाई ज़ाहिरी उस का कुछ भी असर मालूम नहीं होता था क्योंकि हुज़ूर महाराज साहब वैसीही हालत में बचन भी फ़रमाते थे और बालाख़ानः¶ पर भी तशरीफ़ ले जाते और चिहल क़दमी** भी फ़रमाते थे और कभी २ चेहरा मुबारक भी पज़मुर्दः†† हालत में दिखलाई देता था ऐसी हालतों को देख कर सब लोग मुतफ़क्किर‡‡ और परेशान हो जाते थे और प्रार्थना करने लगते थे उस प्रार्थना पर हुज़ूर महाराज साहब नब्ज़ जब फिर डाक्टरों को दिखलाते तो वे लोग नब्ज़ को देख कर बयान करते थे कि अब नब्ज़ की हालत उम्दः मिसल तन्दुरुस्तों के है और चेहरे मुबारक पर हुज़ूर महाराज साहब हाथ फेर कर फ़रमाते थे कि तुम लोग नाहक़ मुतफ़क्किर और परेशान होते हो मेरी तबीअत बहुत अच्छी है चुनाँचि उसी वक़्त चेहरा

*अचरजी लीला। †नाड़ी। ‡जो डाक्टर मौजूद थे। §ख़राब हाल। ‖चाल। ¶ऊपर के कमरे। **टहलना। ††मुरझाया हुआ, उदास। ‡‡चिन्तावान।

मुबारक ख़ुश्बाश[*] और मुनव्वर[†] मालूम होने लगता था। एक मर्तबः साहब सिविल सरजन वास्ते देखने हालत बीमारी के बुलाये गये उन्हों ने आकर जो देखा तो कहा तबीअत अच्छी मालूम होती है उस पर हुजूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि चरनौं को तो देखो देखने से मालूम हुआ कि वरम[‡] बहुत ज्याद: है और फ़िल्वाक़:[§] उससे पेशतर चरनौं पर बिल्कुल वरम न था बाद चले जाने साहब सिविल सरजन के सब ने मुतहइयर[‖] व परेशान होकर अर्ज़ की कि महाराज यह वरम कैसा पैदा हो गया हुजूर महाराज साहब ने चरनौं को दिखा कर फ़रमाया कि कहाँ है और सब ने देखा कि वरम का वजूद[¶] भी न था इस अचरजी लीला को देखकर सबलोगमुतअ़ज्जिब[**] हुए। हुजूर महाराज साहब ने डाक्टरान के इसरार[††] से प्रेम पत्रों में नोटिस दिलवा दिया था कि बवजह बीमारी के कोई सतसंगी बिला इजाज़त बाहर से न आवे मगर जबही कोई सतसंगी दरख़्वास्त हाज़िरी की करता तो फ़ौरन् इजाज़त अता फ़रमा देते थे[‡‡] और इसी वजह से मजमा[§§] सतसंगियान इस क़द्र ज्याद: हो गया था कि उस

---

[*] ख़ुश। [†] प्रकाश मान, चमकीला। [‡] सूजन। [§] असल में। [‖] तअज्जुब में। [¶] निशान पता। [**] हैरान। [††] हठ। [‡‡] इजाज़त दे देते थे। [§§] भीड़ भाड़।

कमरे अंदरून* मकान में जहाँ हुज़ूर महाराज साहब क़याम पिज़ीर† थे सतसंगियोँ की गुँजाइश‡ नहीं होती थी और सतसंगियोँ को दर्शन और सतसंग करने में दिक़्क़त होती थी इस दिक़्क़त के दूर करने के वास्ते हुज़ूर महाराज साहब ने प्रेम विलास में क़याम फ़रमाया§ और सतसंगियोँ को औक़ात मुअइयनः‖ पर दर्शन बआसानी तमाम मिलने लगे व हस्ब¶ मामूल सतसंग व वचन भी होते रहे मुस्तज़ाद** इस के यह हुआ कि दोनोँ वक़्त बाद भोग के प्रेम विलास के बड़े कमरे में हुज़ूर महाराज साहब चिहलक़दमी†† फ़रमाते हुए हर एक सतसंगी पर जो दायँ बायँ सफ़‡‡ बाँध कर दस्तबस्तः खड़े हो जाते थे दया और मेहर की दृष्टी डालते थे और यह कुल कार्रवाइयाँ आख़िरी वक़्त तक जारी रक्खीं और।

६—दिसम्बर सन् १८९८ ई० को बवक़्त छः बजे ४० मिनट शाम के जबकि कुल सतसंगी व सतसंगिनें व साधुवान हाज़िर ख़िदमत थे हुज़ूर महाराज साहब ने वक़्त दरियाफ़्त फ़रमा कर लेटने के वास्ते तकिये लगवाये और इस्तराहत§§ फ़रमा कर धीरज और शान्ती

---

*भीतर। †रहते थे, आराम फ़रमाते थे। ‡समाई। §रहने लगे। ‖वक़्त वक़्त पर, समय समय पर। ¶बदस्तूर। **इस से बढ़ कर। ††टहलना। ‡‡पाँत। §§आराम।

के साथ सुरत को चढ़ा कर छः बजे पैंतालीस मिनट पर चोला त्याग फ़रमाया उस वक्त चेहरः मुबारक निहायत बश्शाश* व मुनव्वर† था और आँख को पुतली चमकती और जिसम‡ नरम व मुलायम था वह मकान मुतबर्रक§ जिस में यह मौज हुई कुल मुनव्वर व सुहावना मालूम होता था और यह कैफ़ियत ८ दिसम्बर सन् १८९८ ई० रोज़ दाह तक जोकि दूर दराज़ के सतसंगियों को दर्शन मिलने के वास्ते मुल्तवी रक्खा गया था क़ायम रही।

११२–शहर आगरा मुहल्ला पीपल मंडी में मुत्तसिल‖ मकान आलीशान हुज़ूर महाराज साहब के एक मकान प्रेम बिलास के नाम से मशहूर है जिस में आख़िरी ज़मानः में हुज़ूर महाराज साहब ने क़याम फ़रमाया था और जिस जगह पर चोला मुबारक का त्याग फ़रमाया उसी जगह पर हुज़ूर महाराज साहब की समाध बनवाई गई और वहीं पर हर साल २७ दिसम्बर को भंडारा हुज़ूर महाराज साहब का होता है।

११३–पहिले भंडारे हुज़ूर महाराज साहब पर जो २७ दिसम्बर सन् १८९८ ई० में हुआ था एक साहब देहरा-दून के रहने वाले ने आगरे आकर बयान किया कि

*मगन। †चमकीला। ‡देह। §पवित्र। ‖पास।

राधास्वामी मत को सच्चा सुन कर और उसूल* व शरायत† को मंजूर करके इरादः किया था कि आगरे पहुंच कर हुज़ूर महाराज साहब से उपदेश लूँ उस इरादः के तीसरे रोज़ सुना कि हुज़ूर महाराज साहब चोला छोड़कर निज धाम को तशरीफ़ ले गये इस ख़बर को सुन कर रंज व सदमे की बरदाश्त न करके बेख़ुद‡ व बदहवास होकर जंगल को चला गया वहाँ पर बहुत ज़ोर से चीख़ मार कर और चिल्ला कर रोना शुरू किया उसी वक़्त एक सिंहासन ऊपर से उतर कर मेरे सामने आया और उस में हुज़ूर महाराज साहब विराजमान थे मैं हुज़ूर महाराज साहब के चरनौं पर गिर पड़ा हुज़ूर महाराज साहब ने फ़रमाया कि क्यौं इस क़दर घबराते हो हम कहीं चले नहीं गये हैं राधास्वामी सतसंग के बराबर निगराँ§ और रक्षक हैं तुम आगरे जाओ हमारे मकान पर सतसंग बराबर जारी है वहाँ सतसंग करो और उपदेश लो तुम्हारा सब मतलब पूरा होगा चुनाँचि मुझ को शाँती हुई और आप से हस्बुलहुकम‖ उपदेश लेने के वास्ते आया हूं पस उसने उपदेश

*क़ायदा। †शरतें। ‡बावलों के मुवाफ़िक़। §सम्हाल करने वाले। ‖आज्ञा अनुसार।

लेकर और कुछ अर्सः तक आगरे में ठहर कर सतसंग और अभ्यास किया।

११४–लुधियाने में पंडित तुलसीराम सतसंगी के मकान पर सतसंग हुआ करता था उन्हौँ ने हुजूर महाराज साहब के चोला छोड़ने के बाद रंज और निराशता की हालत में सतसंग करना बंद कर दिया तीन चार रोज़ के बाद आठ बजे सुबह के जबकि वह अपने मकान के अंदर था उस को मालूम हुआ कि एक गाड़ी उस के मकान के दरवाज़े पर आकर ठहरी और हुजूर महाराज साहब उतर कर उस के मकान में तशरीफ़ लाये और उससे फ़रमाया कि तुम ने सतसंग क्यौँ बंद कर दिया हम कहीँ गये नहीँ हैं बराबर मौजूद और सतसंग के निगराँ हैं तुम इसी वक्त़ से सतसंग बदस्तूर जारी कर दो यह हुकूम पाकर वह फ़ौरन चरनौँ पर गिरा और मत्था टेका और हुजूर महाराज साहब उसके मकान से बाहर तशरीफ़ ले जाकर गाड़ी में सवार हुए और गाड़ी उसके दरवाज़े से चंद क़दम चल कर नज़र से ग़ायब हो गई उस ने उसी वक्त़ अपने करीब के सतसंगियौँ के मकान पर जाकर यह हाल बयान किया और सब को बुला कर सतसंग बदस्तूर जारी कर दिया।

११५—एक सतसंगी मदरास के रहने वाले को जिसने बाद चोला छोड़ने हुज़ूर महाराज साहब के इस नियाज़मंद* से उपदेश लिया था यह संशय पैदा हुआ कि हुज़ूर महाराज साहब और हैं और राधास्वामी दयाल और हैं और इस संशय के दूर करने की ग़रज़ से वह एक चिट्ठी मुझ को तहरीर† कर रहा था लेकिन ख़तम‡ न होने की वजह से न भेज सका कि उसी शब§ को हुज़ूर महाराज साहब ने ख़्वाब में उस को दर्शन देकर फ़रमाया कि तुम हमारे साथ चलो हम तुम को राधास्वामी दयाल के दर्शन करादें तमाम मुक़ामात के दरजे बदरजे दर्शन कराते हुए राधास्वामी धाम में ले गये वहाँ की तजल्ली‖ और प्रकाश और नूर को देख कर उस की आँख झपक गई उसके बाद आवाज़ सुनाई दी कि राधास्वामी दयाल के दर्शन करो इस आवाज़ को सुनते ही जो आँख खोल कर देखा तो सिंहासन पर जिस के नूर और प्रकाश का कुछ अंदाज़ः नहीं हो सक्ता कि किस क़दर चाँद और सूरज का प्रकाश उस के एक २ हिस्से में कहा जावे हुज़ूर महाराज साहब ही विराजमान थे हुज़ूर महाराज साहब के नूर और तजल्ली और

---

* मुझ से । † लिख रहा । ‡ पूरी । § रात । ‖ चमक, रोशनी ।

प्रकाश का तो बयान ही नहीं हो सक्ता कि अन-गिन्त सूरज और चाँद का प्रकाश एक रोम के प्रकाश के बराबर भी न था दर्शन करते ही आँख झपक गई, मुकर्रर* हुज़ूर महाराज साहब ने आवाज़ देकर फ़रमाया कि तुम ने राधा-स्वामी दयाल के दर्शन कर लिये उस ने अर्ज़ किया दर्शन हो गये वहाँ से फिर हुज़ूर महाराज साहब उस को दरजे बदरजे अस्थानौं की सैर कराते हुए अपने साथ नीचे उतार लाये और उस का संशय ख़्वाब में दर्शन देकर दूर कर दिया और उस को यह निश्चय हो गया कि हुज़ूर महाराज साहब राधास्वामी दयाल का ही औतार हैं यह सब मुफ़स्सिल हालात उस मदरासी सतसंगी की चिट्ठी से मालूम हुए जो उस ने वास्ते इत्तिला और इज़हार† उस दया के जो कि हुज़ूर महाराज साहब ने उस पर फ़रमाई भेजी।

११६—हुज़ूर महाराज साहब की अवायल उमरी‡ के हालात से ज़ाहिर है कि हुज़ूर महाराज साहब ऊँचे दरजे से तशरीफ़ लाये और उन हालात से कि जो निस्बत खोज व तलाश पूरे गुरू और सुरत शब्द मारग के थी और जिस तरह से कि हुज़ूर महाराज

*दुबारः। †ज़ाहिर करने। ‡लड़कपन।

साहब ने हुज़ूर स्वामी जी महाराज की तलाश करके शिनासाई* एकही मुलाक़ात में करली और कैफ़ियत प्रघट होने राधास्वामी नाम से जिस का बयान ऊपर हो चुका है और नीज़† इन कड़ियों से जो हुज़ूर स्वामी जी महाराज सहब ने फ़रमाई हैं साबित होता है कि हुज़ूर स्वामी जी महाराज साहब और हुज़ूर महाराज साहब दोनों राधास्वामी धाम से तशरीफ़ लाये और एक जान दो क़ालिब‡ में वास्ते उद्धार जीवों के ऐसे ज़माने नाज़ुक में कि जिस वक़्त जीवों को हालत निहायत कमज़ोरी और निर्बलता की थी और भेद मालिक से बिलकुल बेख़बरी था प्रघट होकर कार्रवाई जीवों के उद्धार की शुरू फ़रमाई—

बैठक स्वामी अद्भुती, राधा निरख निहार।
और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार॥

रधास्वामी दो कर जान। होयँ एक सत लोक ठिकान॥

और हुज़ूर महाराज साहब ने ख़ुद पहिले सर्ब अंग करके गुरुमुख भाव में बर्त कर भक्ती का पूरा और लासानी§ नमूना दिखलाया और फिर ख़ुद अचारज गती का गुरुमुख अंग को क़ायम रक्खे हुए बर्ताव करके हज़ारों को सरन में लेकर भक्ती और सेवा में

---

*पहिचान। †भी। ‡देह। §जिस के मुवाफ़िक़ दूसरा न हो।

लगा लिया और बेशुमार* जीवौं पर बीज़ा डाल कर उद्धार के सिलसिले का संसकार बख़्श दिया।

११७—हुज़ूर महाराज साहब ने जो बानी और बचन फ़रमाये हैं उन की तफ़सील ऊपर दफ़ा ९५ में दर्ज हो चुकी है और जिन की कैफ़ियत व महिमा शायक़ीन† को उन बानी और बचनौं के मुलाहिज़ः से ज़ाहिर और मालूम हो सक्ती है इस जगह पर सिर्फ़ दो शब्द प्रेमबानियौं में से और एक बचन प्रेम पत्रौं में से मिनजुमलः‡ ६५ प्रकार के जो चौथी जिल्द में नई २ जुक्ती और रीत से महिमा और बुज़ुर्गी राधास्वामी नाम और राधास्वामी मत की बनिस्बत और मतौं के और सहज तरीक़ा जीव के उद्धार यानी कुल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनौं में बासा पाने और अमर अजर हो जाने का सबूत आम फ़हम§ दिया है दर्ज ज़ैल‖ हैं—

प्रेम बानी पहिली जिल्द बचन तीसरा

॥ शब्द तीसरा ॥

सुरत सिरोमन हेला लाई।
सतगुरु पूरा खोजो भाई ॥ १ ॥

*अनगिन्त। †अभिलाषियों। ‡सब में से। §सब की समझ के लायक़। ‖नीचे लिखे जाते हैं।

जोत निरंजन फाँसी डारा ।
  जीव बहे चौरासी धारा ॥ २ ॥

करम धरम में सब भरमाए ।
  निज घर का कोइ भेद न पाए ॥ ३ ॥

मैं अब कहूँ पुकार पुकारा ।
  बिन गुरु सरन नहीं निरवारा ॥ ४ ॥

पूरन धनी अपार अनामी ।
  परम पुरुष सतगुरु राधास्वामी ॥ ५ ॥

जग में संत रूप धर आए ।
  काल जाल से जीव बचाए ॥ ६ ॥

हुकम दिया जीवन को ऐसा ।
  शब्द पकड़ जाओ निज देसा ॥ ७ ॥

प्रेम भक्ति हिरदे में धारो ।
  दया मेहर ले उतरो पारो ॥ ८ ॥

सुरत शब्द बिन जो मत होई ।
  काल जाल जानो तुम सोई ॥ ९ ॥

बाहरमुख जो पूजा लाते ।
  मन अंतर जो ध्यान लगाते ॥ १० ॥

वाच लक्ष का निरनय करते ।
  व्यापक चेतन बिरती धरते ॥ ११ ॥

कर बिचार जो मन को साधैं ।
प्राण साध ज़ो धरैं समाधैं ॥ १२ ॥
जप तप संजम बहु बिधि धारैं ।
दृष्टि साध कर रूप निहारैं ॥ १३ ॥
और अनेक प्रकाश दिखाई ।
आतम दर्शन चित में लाई ॥ १४ ॥
ऐसा खेल लखे घट माहीं ।
षट चक्कर अंतर भरमाई ॥ १५ ॥
यह सब मते काल के जानो ।
अंतरगत माया के मानो ॥ १६ ॥
कोइ दिन सुख आनंद बिलासा ।
फिर फिर पड़ें काल की फाँसा ॥ १७ ॥
कोई जीव बचे नहिं भाई ।
काल हद्द से परे न जाई ॥ १८ ॥
तिरलोकी में काल पसारा ।
पाँच तत्त तिरगुन बिस्तारा ॥ १९ ॥
दयाल देश तिरलोकी पारा ।
काल कर्म का वहँ न गुज़ारा ॥ २० ॥
जो कोइ संत बचन को माने ।
दयाल देश की सो गति जाने ॥ २१ ॥

याते बार बार समझाऊँ ।
संतन की गति अगम सुनाऊँ ॥ २२ ॥
सतगुरु चरन प्रीत करो गाढ़ी ।
तन मन अरपो सूरत वारी ॥ २३ ॥
चरन सरन सतगुरु दृढ़ करना ।
रूप अनूप हिये विच धरना ॥ २४ ॥
तब कुछ भेद समझ में आवे ।
सुरत शब्द का कुछ रस पावे ॥ २५ ॥
जीव काज अस होवे पूरा ।
काल करम हट जावें दूरा ॥ २६ ॥
पंचम चक्र जीव का बासा ।
छठवें में है सुरत निवासा ॥ २७ ॥
यहँ से राह संत मत जारी ।
नैन नगर विच मारग धारी ॥ २८ ॥
सुरत दृष्टि कर झाँको द्वारा ।
सहज चढ़ो षट चक्कर पारा ॥ २९ ॥
सप्तम कँवल सहसदल नामा ।
जोत निरंजन का अस्थाना ॥ ३० ॥
घंटा शंख बजे तेहि द्वारे ।
सूरज चाँद अनेक निहारे ॥ ३१ ॥

व्यापक चेतन इस का भासा ।
तीन लोक और पिंड निवासा ॥ ३२ ॥
ता का ज्ञान पाय यह ज्ञानी ।
कर उनमान हुए अभिमानी ॥ ३३ ॥
पोथी पढ़ बहु बात बनावैं ।
निज चेतन का भेद न पावैं ॥ ३४ ॥
निज चेतन है सिंध अपारा ।
दयाल देस में तासु पसारा ॥ ३५ ॥
बूँद एक वहँ से चल आई ।
सोई निरगुन ब्रह्म कहाई ॥ ३६ ॥
इस का भास पिंड में आया ।
ताको व्यापक चेतन गाया ॥ ३७ ॥
जो कोइ व्यापक निश्चय धारे ।
मुक्ति न पावे भरमे वारे ॥ ३८ ॥
याते तजो निरंजन धामा ।
सतगुरु देस करो बिसरामा ॥ ३९ ॥
सतगुरु पद सतलोक कहावे ।
जोत निरंजन जहाँ न जावे ॥ ४० ॥
सहस कँवल परे तीन अस्थाना ।
त्रिकुटी सुन्न और गुफा बखाना ॥ ४१

ता के परे धाम सतनामा ।
सत्त लोक सतगुरु पद जाना ॥ ४२ ॥
अलख लोक तिस ऊपर होई ।
ता के परे अगम है सोई ॥ ४३ ॥
तिस के आगे धुर पद जानो ।
राधास्वामी धाम पहिचानो ॥ ४४ ॥
राधास्वामी नाम हिये बिच धारो ।
और नाम सबही तज डारो ॥ ४५ ॥
राधास्वामी चरन बाँध मन आसा ।
तब पावे सतलोक निवासा ॥ ४६ ॥
तन मन इंद्री घट में घेरो ।
सुरत चढ़ाय करो घर फेरो ॥ ४७ ॥
हित चित से सतगुरु सँग कीजे ।
राधास्वामी दया मेहर तब लीजै ॥ ४८ ॥
या विधि जो कोइ कार कमावे ।
काल देश तज निज घर जावे ॥ ४९ ॥
दयाल देश में वासा पावे ।
राधास्वामी चरनन माहिं समावे ॥ ५० ॥
आरत हुई दास की पूरी ।
रहुं गुरु अंग संग तज दूरी ॥ ५१ ॥

प्रेमबानी तीसरी जिल्द बचन उन्नीसवाँ

॥ मसनवी ॥

मैं सतगुरु पै डालूँगी तन मन को वार ।
मैं चरनों पै क़ुरबान हूँ बार बार ॥ १ ॥
करूँ कैसे उन की दया का बयान ।
दिया मुझ को प्रेम और परतीत दान ॥ २ ॥
खुली आँख जब मुझ को आया नज़र ।
कि दुनियाँ है धोखे की जा सर बसर ॥ ३ ॥
ज़मीन और ज़न और ज़र की है चाह ।
सभी जीव रहते हैं ख़्वार और तबाह ॥ ४ ॥
हुए मुब्तिला दाम हिरसो हवस ।
न पावैं कहीं चैन वह इक नफ़स ॥ ५ ॥
न मालिक का खौफ़ और न मरने का डर ।
न खोजैं कभी अपने घर की ख़बर ॥ ६ ॥
करैं फ़िक्र मेहनत से दुनियाँ के काम ।
रहें इसतिरी और धन के ग़ुलाम ॥ ७ ॥
जो दुनियाँ के नामावरी के हैं काम ।
दिलोजाँ से उस में पचे हैं मुदाम ॥ ८ ॥
भराहैगा भोगों की ख़्वाहिश से मन ।
उसी में लगाते हैं धन और तन ॥ ९ ॥

न शरमो हया उनको मा बाप की।
न कुछ फ़िक्र है पुन्न और पाप की ॥ १० ॥
जो मन इंदरी पावैं लज्ज़ात को।
ग़नीमत समझते हैं इस बात को ॥ ११ ॥
जो दुनियाँ के सामाँ मुयस्सर हुए।
हुए खुशदिल और मान में सब मुए ॥ १२ ॥
नहीं जीव का अपने उनको ख़ियाल।
कि मरने पै क्या होयगा उसका हाल ॥ १३ ॥
कहाँ से वह आता है जाता कहाँ।
कहाँ कौन हूँ मालिके जिस्मो जाँ ॥ १४ ॥
कोई जो कहाते हैं परमार्थी।
जो देखा तो वह हैं निपट स्वार्थी ॥ १५ ॥
करैं ज़ाहरी पाठ पूजा मुदाम।
सुनैं भागवत और गीता तमाम ॥ १६ ॥
मगर दिल पै उनके न होवे असर।
न मरने का ख़ौफ़ और न नरकों का डर ॥१७॥
करैं तीरथ और जात्रा शौक़ से।
रखैं वर्त और दान दैं ज़ौक़ से ॥ १८ ॥
मगर होवे दुनियाँ का मतलब ज़रूर।
रहे है यही आस हिरदे में पूर ॥ १९ ॥

जो दुनियाँ की कुछ आस होवे नहीं ।
तो इस काम में पैसा खरचैं नहीं ॥ २० ॥
जो मालिक का भेद इनसे कहवे कोई ।
उड़ावैं हँसी और न मानैं कभी ॥ २१ ॥
भरा हैगा मन उनका शुबहात से ।
न बाचैं जहालत की आफ़ात से ॥ २२ ॥
वह संतों के कहने को मानैं नहीं ।
सफ़ा बुद्ध से बात तोलैं नहीं ॥ २३ ॥
कहूं क्या कि दिल में हैं वे नास्तिक ।
मगर धन के लेने को हैं आस्तिक ॥ २४ ॥
होवे ऐसे जीवौं का कैसे निबाह ।
जहन्नुम की अग्नी में पावैंगे दाह ॥ २५ ॥
वहाँ हाथ मल मल के पछतायँगे ।
किये अपने कामौं का फल पायँगे ॥ २६ ॥
मदद कोई उनकी करेगा नहीं ।
कोई इनका रोना सुनेगा नहीं ॥ २७ ॥
पकड़ इनको जमदूत देवैंगे मार ।
सरप इनकी गर्दन में देवैंगे डार ॥ २८ ॥
अगिन खँभ से बाँध दैंगे इन्हैं ।
अगिन कुंड में ग़ोता दैंगे इन्हैं ॥ २९ ॥

निहायत दुखी होके चिल्लायँगे ।
यह ग़फ़लत का फल अपना यौं पायँगे ॥ ३० ॥
निरख करके जीवौं का अस हाल ज़ार ।
संत आये दुनियाँ में औतार धार ॥ ३१ ॥
दया कर सुनावैं उन्हें घर का भेद ।
मेहर से करैं दूर करमौं का खेद ॥ ३२ ॥
राह घर के जाने की देवैं लखा ।
सुरत शब्द मारग का देवैं पता ॥ ३३ ॥
हर इक घट में आवाज़ होती मुदाम ।
वही शब्द की धुन है और वोही नाम ॥ ३४ ॥
सुने जो कोई धुन को चित धर के प्यार ।
वही जीव घर जावे तिरलोकी पार ॥ ३५ ॥
सुनो भेद मंज़िल का अब राह के ।
वह हैं सात बालाय छः चक्र के ॥ ३६ ॥
यह हैं नाम छः चक्करौं के सुनो ।
गुदा इंदरी और नाभी गिनो ॥ ३७ ॥
चक्कर चौथा हिरदे गुलू पाँचवाँ ।
छठा दोनौं आँखौं के है दरमियाँ ॥ ३८ ॥
इसी जा पै है सुर्त रूह का क़याम ।
परे इस के संतौं के सातौं मुक़ाम ॥ ३९ ॥

सहसदल है पहिला गगन दूसरा।
सुन्न पर महासुन का मैदाँ बड़ा ॥ ४० ॥
गुफा लोक चौथा है सोहंग नाम।
परे इस के सतलोक आली मुक़ाम ॥ ४१ ॥
अलख लोक की क्या कहूं दस्तगाह।
अगम लोक संतों का है तख़्तगाह ॥ ४२ ॥
परे इस के है कुल्ल मालिक का धाम।
अपार और अनन्त राधास्वामी है नाम ॥ ४३ ॥
अकह और अगाध और यही है अनाद।
वहीं से उठी मौज और आद नाद ॥ ४४ ॥
नहीं कोइ जाने है यह भेद सार।
रहे थक के सब कोइ गगना के वार ॥ ४५ ॥
करम और धरम में रहे सब अटक।
नहीं जिव के कल्यान की कुछ खटक ॥ ४६ ॥
रहे पूजते देवी देवा को झाड़।
न मालिक का खोज और न दिल में पियार ॥४७॥
रहे पिछली टेकों में भूले मुक़ाम।
नहीं जानें महिमाँ गुरू और नाम ॥ ४८ ॥
अगर चाहो तुम अपना सच्चा उद्धार।
तो सतगुरु को जल्दी से लो खोज यार ॥ ४९ ॥

वचन संत सतगुरु के चित दे सुनो ।
प्रीत और परतीत हिरदे धरो ॥ ५० ॥
पियो चरन अमृत को तुम प्रीत से ।
भरम काटो परशादी के सीत से ॥ ५१ ॥
करो उन का सतसंग तुम बार बार ।
लेवो शब्द मारग का उपदेश सार ॥ ५२ ॥
करो मन से मालिक का सुमिरन मुदाम ।
परम पुर्ष राधास्वामी है उस का नाम ॥ ५३ ॥
गुरू रूप का ध्यान हिरदे में लाय ।
सुरत और मन शब्द धुन में लगाय ॥ ५४ ॥
यह अभ्यास नित घट में करना सही ।
कटैं मन के औगुन इसी से सभी ॥ ५५ ॥
कोई दिन में दर्शन गुरू के मिलैं ।
सुने शब्द की धुन सुरत मन खिलैं ॥ ५६ ॥
इसी तरह नित घट में आनंद पाय ।
बढ़त जाय आनंद मन शान्ति लाय ॥ ५७ ॥
कोई दिन में मुक्ती का पावे सरूर ।
तू हो जाय तन मन से न्यारा ज़रूर ॥ ५८ ॥
प्रीत और परतीत दिन दिन बढ़े
तेरे मन में गुरु प्रेम का रँग चढ़े ॥ ५९ ॥

उमँग कर तू सतगुरु की सेवा करे।
प्रेम अंग ले नित्त आरत करे ॥ ६० ॥
मिले प्रेम की तुझ को दौलत अपार।
सरावेगा भागौं को तब अपने यार ॥ ६१ ॥
किया अब यह उपदेश का ख़तम राग।
जो माने उसी का जगे पूरा भाग ॥ ६२ ॥
करोगे जो हित चित से नित तुम यह कार।
करैं राधास्वामी तुम्हारा उधार ॥ ६३ ॥
जपो प्रीत से नित्त राधास्वामी नाम।
पाओ मेहर से एक दिन आद धाम ॥ ६४ ॥

प्रेम पत्र जिल्द चौथी—प्रकार ३७

[जीव इस संसार में निहायत निबल और लाचार है अपने बल से पूरे उद्धार का जतन दुरुस्त नहीं कर सक्ता पर कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया अपार है जो कोई उनका बचन माने उससे वे अपनी दया से ज़रूरी करनी करा कर उस का कारज सहज में बनाते हैं इस दया की महिमा नहीं की जा सक्ती है]

जीव जब से कि संसार में पैदा हुआ उसी वक़्त से उस को संसारियौं का संग होता है और उस को बोल चाल और रहनी उन्हीं के मुवाफ़िक़ होती है यानी धन स्त्री और पुत्र और जगत की मान

बड़ाई और शोहरत और हकूमत और मन और इंद्रियों के भोग बिलास उस को प्यारे लगते हैं और उन्हीं के संग में रस आता है और सुख मिलता है और उन्हीं की चाह बारम्बार उठा कर जतन और मिहनत करता है और मन में भी उन्हीं की गुनावन और ख़याल उठाता रहता है और जब अपने कुटम्बी और रिश्तेदार और दोस्त और आशनाओं से मिले तब उनके साथ भी उन्हीं की बाबत बात चीत और ज़िकर करता है।

२—यही कार्रवाई बराबर जारी रहती है और कुल जीव जिनसे इस शख़्स का मेला होता है ऐसी ही कार्रवाई करते नज़र आते हैं इस सबब से यह हालत खूब पक जाती है बल्कि स्वभाव में दाखिल हो जाती है और बग़ैर उस कार्रवाई के मन को चैन नहीं पड़ता है और जब कभी कोई तकलीफ़ या किसी काम में निरासता होती है तब मन इसी क़िसम के काम या पदार्थ के लिये नई आसा बाँध कर ताक़त हासिल करता है।

३—हरचंद किसी को किसी ने पकड़ा और बाँधा नहीं है लेकिन मन की हालत बँधे हुओं से ज़्यादा हो जाती है यानी इस क़दर धन और माल और

कुटम्ब परिवार और भोगों में लिप्त हो जाता है कि छुटाये नहीं छूट सक्ता और जो थोड़ी ज़बरदस्ती की जावे या दबाव डाला जावे तो उस में निहायत दुखी होता है और तकलीफ़ पाता है।

४—असली परमार्थ यानी सच्चे मालिक का भेद और उस के मिलने की जुगत का तो कहीं ज़िकर भी नहीं है क्योंकि यह बात बहुत कठिन बल्कि नामुमकिन समझी जाती है और इस वास्ते कोई इसकी तहक़ीक़ात भी नहीं करता और जोकि ऐसा ख़याल अर्से से लोगों के दिल में भेषों ने पैदा कर दिया है कि बग़ैर छोड़ने दुनिया और उसके भोगों के इस रास्ते में कोई क़दम नहीं रख सक्ता है और जोकि संसारी लोग दुनिया को छोड़ना नहीं चाहते इस वास्ते असली परमार्थ की निसबत तहक़ीक़ात भी मौक़ूफ़ कर दी।

५—रसमी यानी दुनियावी परमार्थ की कार्रवाई थोड़ी बहुत जारी मालूम होती है इस में बहुत करके इन्द्रियों से काम लिया जाता है और मन और बुद्धी के शामिल होने का ख़याल बहुत कम रहता है जैसे पोथी का पाठ करना या नाम और मंत्र का माला के साथ जाप करना या ज़ाहिरी रसूम मिसल

मूरत या किसी निशान या पाक मुक़ाम या दरिया की पूजा या ताज़ीम या ज़ियारत या अश्नान या परकरमा वग़ैरह करना या शब्द और भजन गाना और नाचना या कथा और पोथी सुनना या दान पुन्य और ख़ैरात करना या जीवों के आराम के लिये कुवाँ बावड़ी बाग़ मकान और मदरसा और ख़ैरात ख़ाना और शफ़ा ख़ाना और ग़रीब ख़ाना बनवाना और सदाव्रत जारी करना या परमार्थी मेला और उत्सव में शामिल होना या आम तौर पर वाज़ और उपदेश और व्याख्यान करना या ब्रत और रोज़ा रखना वग़ैरह वग़ैरह ।

६—कुल मत जो दुनियाँ में बिलफ़ेल जारी हैं उन में अक्सर इसी क़िसम की कार्रवाई को मुक्ती का साधन तजवीज़ किया है और कोई २ तन मन को कुछ काष्टा भी देते हैं जैसे पंच अग्नि तपना और जल सैन करना खड़े रहना मौन साधना दूध अहार करना या घर बार छोड़ कर जंगल या पहाड़ में अकेले रहना और स्वाँसा या मन से नाम का सुमिरन करना या नाभी या हिरदे में ध्यान लगाना वग़ैरह ।

७—बाज़े विद्या और बुद्धिमान लोग वेद शास्तर पुरान और क़ुरान और अंजील और दूसरी मज़हबी

किताबों की टेक बाँध कर और अपनी बुद्धि के मुवाफ़िक़ उन के अर्थ लगा कर या और किसी विद्यावान के समझाये हुए अर्थों की समझौती लेकर कार्रवाई कर रहे हैं और जो नेष्ठावान यानी अभ्यासी लोग समझ देवें उसको नहीं मानते इस सबब से वे जो कुछ कि ज़ाहरी करनी अपनी बुद्धी के मुवाफ़िक़ कर रहे हैं उस में असली फ़ायदा मालूम नहीं होता लेकिन टेक और पक्ष धारन करके आपस में हुज्जत और तकरार करते हैं और एक दूसरे गिरोह को बुरा भला या ओछा या ग़लत कहते हैं।

८—कोई २ सूफ़ी या बाचक ज्ञानी बन बैठे हैं और अपने को ख़ुदा या ब्रह्म मान कर या उस के साथ मन और बुद्धी की समझौती से एकताई करके निःचिन्त और निडर हो रहे हैं और जो अभ्यास कि सच्चे ज्ञानी और सूफ़ियों ने जारी किया उससे नावाक़िफ़ हैं या उस को कठिन और ग़ैरज़रूरी समझ कर छोड़ दिया है और सिर्फ़ अक़्ली और इल्मी दलीलों से अपना समझ बूझ दुरुस्त करके राज़ी और बेपरवाह हो गये हैं लेकिन इन में से बाज़े दर्दी अंतःकर्ण की सफ़ाई और मन को निश्चल करने के वास्ते जो जतन मुक़र्रर हैं उन को किसी क़द्र शौक़

और मिहनत के साथ करते हैं और उस का फ़ायदा भी थोड़ा बहुत देखते हैं।

९—कोई २ विद्या पढ़ कर मालिक की मौजूदगी में शक लाकर भक्ति भाव को छोड़ बैठते हैं और सिर्फ़ जीवों के साथ दया भाव से बर्तने और संसारी उपकार करने को मुनासिब और ज़रूरी करम समझते हैं और जीव के अमर होने के क़ायल नहीं हैं यह लोग नास्तिक कहलाते हैं वे सिर्फ़ एक क़िसम की कुव्वत को (जिस को चाहे चेतन्य कहो) और माया और उस के मसाले को क़दीम और सब जगह व्यापक मानते हैं।

१०—कसरत से नादान लोग छोटे २ देवताओं या क़बरों या मुर्दों या भूत पलीत मसान वग़ैरह को मानते और पूजते हैं कोई उन को सच्ची बात बताने वाला या मालिक की ख़बर देने वाला नहीं मिलता और न वे अपनी टेक को छोड़ना चाहते हैं।

११—जोगेश्वरों और औतारों और पैग़म्बरों ने परमेश्वर या ब्रह्म या ख़ुदा का भेद दिया और इशारे और मुअम्मे में और कहीं २ थोड़ा खोल कर उस के मिलने का रास्ता भी वर्णन किया लेकिन जो कि उस में दुनिया से बैराग करना ज़रूरी और लाज़िमी था और कुछ अभ्यास भी कठिन और ख़तरनाक था

इस सबब से बहुत कम लोगोँ ने उस को अपने वक़्त में माना और बाद उन के सब के सब करम क़ाँड यानी ज़ाहिरी और बाहरी कर्रवाई में या बिद्या बुद्धि केगढ़े हुए मत और समझौती और बिलास में अटक रहे ।

१२—बाद जोगेश्वरोँ और औतारोँ और पैग़म्बरोँ वग़ैरह के संत सतगुरु इस संसार में प्रघट हुए और उन्होँ ने दया करके भेद सत्तलोक और सत्तपुर्ष दयाल का और तरीक़ा पहुंचने उस धाम का जोकि आतमा और परमातमा और ख़ुदा और ब्रह्म और पारब्रह्म के परे है सुरत शब्द योग के अभ्यास से बताया लेकिन बहुत थोड़े जीवोँ ने उन के वक़्त में इस उपदेश को क़बूल किया और जोकि कसरत से लोग अनेक मतोँ और पूजाओँ और कर्म काँड में भरम रहे थे उन्होँ ने संतोँ के बचन को नहीं माना बल्कि उलटी निंद्या करने लगे और जीवोँ को उन के सन्मुख जाने से रोकते रहे । इस सबब से सुरत शब्द मारग का अभ्यास आम तौर पर जारी नहीं हुआ और बाद गुप्त होने संतोँ के उन के घराने में भी वही ज़ाहिरी रसूम और पूजा या बाचक ज्ञान जैसा कि और मतोँ में फैला हुआ है जारी हो गया । और

शब्द मारग को विद्या और बुद्धिवानों ने उलटे सीधे अर्थ लगा कर बिलकुल गुप्त कर दिया या उसको योग अभ्यास जोकि हमेशा से कठिन और नामुम्किन मशहूर हो रहा है क़रार दे कर उसकी कार्रवाई बंद क़रदी क्योंकि पिछले वक़्तों में उस के साथ अक्सर पवन का रोकना भी शामिल किया गया था।

१३—ऐसी ख़राब हालत परमार्थ के मुआमले में जगत की देख कर कि कोई जीव भी सच्चे रास्ते पर नहीं चलता और न किसी ऊँचे मुक़ाम तक पहुंचता है और इधर जीवों को निहायत दुखी और बल-हीन मुलाहिज़ः करके कि कसरत से रोग और सोग और निरधनता और अनेक तरह के दुक्खों में गिरफ़्तार हो रहे हैं कुल मालिक राधास्वामी दयाल अति दया करके आप संत सतगुरु रूप धारन करके जगत में प्रघट हुए और अपने निज नाम और निज धाम का भेद और रास्ते और मंज़िलों का हाल और आसान तरीक़ा चलने और चढ़ कर पहुंचने सुरत का निज धाम में तफ़सील के साथ खोल कर बर्णन किया कि जिस को गृहस्थ और बिरक्त और औरत और मर्द बग़ैर छोड़ने रोज़गार और घर बार के सहज में कर सक्ते हैं और थोड़ेही अर्से के अभ्यास

से अपना सच्चा और पूरा उद्धार होता हुआ इसी ज़िंदगी में देख सक्ते हैं।

१४–पेश्तर के ज़माने में लोग सुरत और शब्द की धार से जो ऐन चेतन्य और जान की धार है बेख़बर रहे और इस सबब से उन्हों ने प्राण की धार को मुख्य समझ कर उसी धार की सवारी का अभ्यास यानी प्राणों को रोकना और चढ़ाना जारी किया लेकिन जोकि उस के संजम बहुत कठिन हैं और ख़तरों का बहुत ख़ौफ़ है इस वजह से यह अभ्यास आम तौर से जारी नहीं हुआ यानी गृहस्थी तो उस को मुतलक़ नहीं कर सके और बिरक्तों से भी कठिनता के सबब से नहीं बना।

१५–लेकिन अब कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने शब्द की महिमा और उसका भेद प्रघट कर के फ़रमाया कि प्राण की धार भी शब्द यानी चेतन्य की धार के अधीन है क्योंकि जिस वक्त आदमी सो जाता है सुरत जोकि ऐन शब्द स्वरूप है और जाग्रत अवस्था में आँखों में जिस का बासा है खिंच जाती है और हरचंद प्राण की धार उस वक्त बदस्तूर जारी रहती है लेकिन देह और इन्द्रियों की कार्रवाई बंद हो जाती है और जब सुरत की धार का ज़्यादः

खिँचाव होता है तब प्राण की धार भी सिमट जाती है ।

१६—और यह भी फ़रमाया कि जो सुरत यानी शब्द की धार पर सवार हो कर ऊँचे देश यानी घर की तरफ़ चलना शुरू करेगा वही माया के घेर के पार धुर धाम में जहाँ माया बिलकुल नहीं है पहुंचेगा और उस का सच्चा और पूरा उद्धार होगा और जो कोई प्राण और रोशनी और और किसी धार पर सवार होकर चलेगा वह उस मुक़ाम तक जहाँ से कि वह धारें बरामद हुई हैं पहुंच सक्ता है लेकिन माया की हद्द में रहेगा और इस वास्ते उसका जनम मरन चाहे बहुत देर से होवे छूट नहीं सक्ता ।

१७—सिवाय प्रघट करने सुरत शब्द मारग के जिस को सहज जोग कहते हैं कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके प्रेम और भक्ती पर ज़्यादः ज़ोर दिया और फ़रमाया कि जोकि कुल मालिक प्रेम का भंडार है और शब्द की धार जो उससे निकली वही प्रेम की धार है और जहाँ वह धार पिंड में ठहर कर सुरत कहलाई वह भी प्रेम स्वरूप है यानी कुल जीव प्रेम स्वरूप हैं इस वास्ते जो कोई कुल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में भक्ती और

इश्क़ करेगा और प्रेम अंग लेकर अंतर में शब्द को सुनेगा उसी का रास्ता आसानी से तै होगा और वही राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया से एक दिन धुर धाम में पहुंचेगा और बग़ैर प्रेम और दया के इस रास्ते का तै होना मुश्किल है।

१८—और फिर अति दया करके फ़रमाया कि जो कि मालिक के अरूप और शब्द स्वरूप में बगैर संसार और उसके भोगों से किसी क़दर वैराग धारन करने के प्रेम जल्दी नहीं आ सक्ता इस वास्ते पहिले सतगुरु स्वरूप में प्रीत करनी चाहिये और जोकि यह स्वरूप उसी क़िसम का है जैसा कि सेवक का यानी देह स्वरूप इस सबब से इस में प्रीत आसानी से लग सक्ती है क्योंकि सब जीव इसी क़िसम के रूपों में जैसे स्त्री पुत्र माता पिता भाई बंधु और रिश्तेदार और बिरादरी के लोगों से और भी उस्ताद और हाकिम व हकीम और राजा से और जिन २ से काम पड़ता है दरजे बदरजे प्रीत कर रहे हैं बल्कि जानवरों से भी जैसे तोता मैना कुत्ता बिल्ली घोड़ा हाथी वग़ैरह से भी प्यार करते है और वे भी उलट कर प्यार और दीनता करते हैं फिर सतगुरु के स्वरूप में जो जीव का सच्चा उद्धार और कल्यान

करता है थोड़ी बहुत प्रीत लाना कुछ मुश्किल नहीं है।

१९–वास्ते बढ़ाने प्रीत के भक्ती में चार क़िसम की सेवा मुक़र्रर की गई हैं एक तन की दूसरी धन की तीसरी मन की और चौथी सुरत की। पहिली और दूसरी क़िसम की सेवा से प्रीत जागती है और बढ़ती है और तीसरी और चौथी क़िसम की सेवा से सुरत और मन अंतर में सिमट कर चलते हैं और चढ़ते हैं और कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सत-गुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत को बढ़ाते हैं और मज़बूत करते हैं और अभ्यास में तरक़्क़ी होती है।

२०–जब सतसंग और सेवा करके और वचन सुन कर और समझ कर जीव के दिल में थोड़ा बहुत भाव और प्यार कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में आ जावे और वह सत-गुरु और उनके प्रेमी भक्तों से किसी क़दर नाता पारमार्थी मुहब्बत का जोड़ लेवे तो फिर उसके उद्धार का सिलसिला सहज में जारी हो जावे और अंतर में भी अभ्यास के वक़्त थोड़ा बहुत रस मिलने लगे।

२१–कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है कि जो कोई उनके चरनों में गहरी प्रीत यानी सच्ची

पुत्र धन और अपनी देह और जगत की मान बड़ाई से ज़्यादः लावे तो उसी का नाम गुरुमुख है और उसके लिये महल में जाने के वास्ते कोई रोक टोक और अटक नहीं रहती यानी इसी जनम में उसका उद्धार हो जाता है और वह इसी ज़िंदगी में अपनी ऐसी हालत को परख सक्ता है और जो कोई इस दरजे से कम की प्रीत करे जैसे क़रीब या दूर के रिश्तेदारों से या बिरादरी के लोगों से या जिन से अक्सर या कभी २ काम पड़ता है तो उसके उद्धार का भी सिल्सिला जिस दरजे की प्रीत होगी उसके मुवाफ़िक़ जारी हो जावेगा और एक दो या तीन हद्द चार जनम में जैसा प्रेम बढ़ता जावेगा काम पूरा बन जावेगा।

२२—यहाँ इस बात का बयान करना मुनासिब और ज़रूर मालूम होता है कि थोड़ी सी थोड़ी प्रीत वाले का उद्धार संत सतगुरु किस तरह करते हैं यानी जिस के दिल में कि मुख्यता संसार और उसके पदार्थों और कुटम्ब परिवार की रही और संत सतगुरु और उन के सतसंग से बहुत हलका नाता जोड़ा तो उसको वक़्त मौत के दस्तूर के मुवाफ़िक़ पहिले संसारी प्रीतों और करमों का चक्कर चला कर जब नम्बर संतों की प्रीत और सेवा का आवेगा उसी वक़्त संत सतगुरु अपना दर्शन दे कर और शब्द

सुना कर मरने वाले की सुरत को अपने चरनौं में लिपटा कर ऊँचे सुख अस्थान में ले जाकर बासा देवैंगे और वहाँ कुछ अर्से तक रख कर और अपने दर्शन और बचनौं से उसकी प्रीत और प्रतीत को बढ़ा कर फिर नर देह में जनम देंगे और सतसंग में मिला कर और भक्ती और अभ्यास कराकर ज़्याद: ऊँचा दरजा बख़्शँगे इसी तरह दो तीन या चार जनम में धुर धाम में पहुंचा कर बासा देवैंगे कि जहाँ किसी क़िसम का कष्ट और कलेश और जनम मरन का चक्कर नहीं है और सदा आनंद ही आनंद रहता है ।

२३—मालूम होवे कि अंत समय पर सब जीव बसबब उनकी प्रीत और बंधन के संसार और कुटम्ब परिवार और अपनी देह में काल के हाथ से झटके सहते हैं और उनके करमौं का चक्कर भी उस वक़्त बड़े ज़ोर से फिरता है और जैसे करम हैं उसके मुवाफ़िक़ सुरत के खिंचाव के वक़्त दुख सुख का भोग देते हैं जो उस जीव ने संतौं के दर्शन किये हैं और कुछ सेवा और अभ्यास भी किया है तो इस करम के पेश होने के वक़्त संत सतगुरु दर्शन देकर उस जीव को काल की खींचा तानी से बचाकर सीतलता और आनंद बख़्शते हैं और वह जीव ऐसी

हालत में बहुत शौक़ और ज़ोर के साथ उनके चरनौं में लिपटता है जैसे कि डूबता हुआ आदमी बचाने वाले से चिमटता है। उस वक्त संत उसकी सुरत को ऊँचे मुकाम में ले जाते हैं और नीचे की तरफ़ झोका खाने से बचा लेते हैं।

२४—अब ग़ौर करना चाहिये कि संत सतगुरु से जो समरत्थ और दयाल हैं जैसी तैसी प्रीत लगाने और नाता जोड़ने में किस क़दर भारी फ़ायदः है कि चौरासी का चक्कर बंद होकरजीव के निज घर यानी कुल मालिक के धाम की तरफ़ चलने और चढ़ने का रास्ता जारी हो जाता है और आइंदः उन की दया और मेहर से प्रीत और प्रतीत की दात पाकर दिन २ प्रेम चरनौं में बढ़ता और रास्ता आसानी से तै होता जाता है।

२५—कुल मालिक राधास्वामी दयाल ने अति दया करके फ़रमाया है कि जो कोई उन के प्यारे प्रेमी भक्तों के साथ जैसी तैसी प्रीत करेगा और थोड़ा बहुत नाता जोड़ेगा तो उस को भी वही फ़ायदः हासिल होगा जैसा कि उन के या संत सतगुरु के चरनौं में प्रीत करने से हासिल होता है इस वास्ते कुल जीवौं को मुनासिब और लाज़िम है कि जैसे वह संसार में जाबजा और हर एक से अपने मतलब के

वास्ते प्रीत लगाते हैं ऐसे ही वास्ते अपने जीव के सच्चे उद्धार और कल्यान के कुल मालिक राधास्वामी दयाल या संत सतगुरु के चरनौं में जो वे भाग से मिल जावैं और नहीं तो उन के सच्चे प्रेमी भक्त से जो उन से मिला हुआ है जैसी तैसी प्रीत करैं और नाता जोड़ें तो तकलीफ़ के वक्तों में और ख़ास कर मौत के वक्त उन की ज़रूर थोड़ी बहुत सहायता की जावेगी और चौरासी के चक्कर से बचा कर और भक्ती और अभ्यास करा कर एक दिन निज घर में जो परम आनंद का भंडार है बासा दिया जावेगा।

२६–कुल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की महिमा कहाँ तक बर्णन की जावे कि उन के दर्शन और स्पर्श और चरनौं के प्रताप से बेशुमार जीवौं का कारज बनता है यानी जिन जीवौं ने उन का दर्शन किया और कुछ सेवा बन आई चाहे वे मनुष्य होवैं या जानवर उन के उद्धार का भी सिलसिला जारी हो जाता है यानी पहिले जानवरौं को नर देही मिलती है और फिर परमार्थ की करनी में शामिल होते हैं और मेहर और दया से रफ़्ते २ एक दिन उन का काम भी पूरा बन जाता है।

२७–कुल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का

जब संत सतगुरु रूप धारन करके प्रघट होते हैं विस्तार कहाँ तक कहा जावे कि जो कोई चीज़ खाने पीने और पहिरने ओढ़ने वग़ैरह की उन की सेवा में आई तो उस चीज़ के लाने वाले से लेकर जितने आदमियों और जानवरों का हाथ उस की तैयारी में लगा है या जिस किसी ने जैसी तैसी उस में मदद दी है उन सब पर थोड़ी बहुत दया पहुंच कर उसी जनम में चाहे दूसरे जनम में ज़रूर थोड़ी बहुत कार्रवाई पर-मार्थ को करा कर उन को ऊँचे और सुख अस्थान में बासा देगी जैसे किसी ने कोई कपड़ा तैयार करके पहिनाया तो उस शख़्स से लगा कर ज़मींदार तक जिस की ज़मीन में रुई बोई गई और जिस२ ने उस के जोतने और बोने और बिनने और साफ़ करने और धुनने और कातने और बुनने और रंग करने और बेचने और सीने वग़ैरह में काम दिया है वह सब कार्रवाई सतगुरु की सेवा में शुमार होकर उस के एवज़ में उन को थोड़ा बहुत भक्ती का दान मिलेगा और इस तरह सिलसिला उन के उद्धार का जारी हो जावेगा—अब ख़्याल करो कि इस दया और फ़ैज़ का कुछ शुमार नहीं होसक्ता ॥

॥ इति ॥